ब्रिटेन की लोक कथाऐं

इंगलैंड, वेल्स और स्कौटलैंड

चयन और हिन्दी अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Britain Ki Lok Kathayen (Folktales of Britain)
Cover Page picture: Big Ben, London (UK)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Britain

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

ब्रिटेन की लोक कथाऐं 7

1 बिल्ला और चुहिया 9

2 तीन छोटे सूअर 12

3 तीन भालू 19

4 छोटी लाल मुर्गी 24

5 छोटी दर्जिन 30

6 बेकर की बेटी 44

7 पीटर और भाई रोबिन 48

8 पीटर के दादा जी 54

9 आलसी जैक 63

10 जैक और उसका सोने का सुँघनी का बक्सा 69

11 जैक और बीन्स का पेड़ 87

12 जैक ने अपनी किस्मत कैसे बनायी 107

13 गुरू और उसका शिष्य 112

14 एक आदमी जिसने भालू देवी से शादी की 117

15 छोटा पौसेट 122

16 तीन बेवकूफ़ 136

17 बर्तन जो चलता नहीं 144

18 ऐकन ढोल 148

19 डरा हुआ दर्जी 158

20 सोने का पेड़ और चॉदी का पेड़ 166

21 नौरौवे का काला बैल 175

22 राजकुमार और सेब 187

23 विनेगर्स 196

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं “देश विदेश की लोक कथाऐं” और “लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

ब्रिटेन की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। हालॉकि यूरोप में बहुत सारे देश हैं जहॉ उनकी अपनी अपनी भाषाऐं बोली जाती हैं फिर भी वहॉ की बहुत सारी भाषाओं का साहित्य अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाता है।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में बहुत अधिक मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इनके बिना दुनियॉ का कोई भी साहित्य कुछ अधूरा सा लगता है। इस महाद्वीप में कुल मिला कर **50** से भी ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – ब्रिटेन, नौरडिक देशों के पॉच देश, जर्मनी, इटली आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयी हैं।

इस महाद्वीप में सिन्डरैला की कहानी बहुत मशहूर है और वह इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही सुनी जाती है। सिन्डरैला के अलावा यहॉ कुछ और भी कथाऐं ऐसी हैं जो इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही जाताी है। ये कथाऐं "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में दी गयीं हैं।

इस महाद्वीप की सबसे ज़्यादा कथाऐं ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी की लोक कथाऐं, ग्रिम्स और ऐन्ड्रू लैंग की कथाओं के संग्रहों में मिलती हैं। कुछ अनुवादकों ने केवल इटली की लोक कथाओं पर भी ध्यान दिया है। दूसरे देशों की लोक कथाऐं बहुत कम मिलती हैं और कुछ देशों की लोक कथाऐं तो मिलती ही नहीं हैं।

हालॉकि इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हज़ारों में लिखी जा सकती हैं पर इस समय हमने यहॉ की केवल ब्रिटेन, आयरलैंड, नौर्स देश और इटली की लोक कथाओं पर ख़ास ध्यान दिया है। इनकी कथाऐं हमने इन देशों के नाम से ही प्रकाशित की हैं।

ब्रिटेन की लोक कथाओं पर हमारी यह पहली पुस्तक प्रकाशित की जाती है – "ब्रिटेन की लोक कथाऐं"। इस पुस्तक में हम ब्रिटेन या ग्रेट ब्रिटेन, यानी इंगलैंड, स्कौटलैंड और वेल्स, देशों की केवल वे लोक कथाऐं प्रकाशित कर रहे हैं जो बारह चौदह साल तक के बच्चों के लिये हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी क्योंकि इस पुस्तक में ब्रिटेन की वे लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उन पुस्तके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से हमारे हिन्दी भाषा भाषी बच्चे नहीं पढ़ पाते। इस पुस्तक के द्वारा अब वे ये सब लोक कथाऐं हिन्दी में पढ़ और सुन सकेंगे।

सो प्रस्तुत है तुम सबके हाथों में ब्रिटेन की लोक कथाओं की यह पहली पुस्तक "ब्रिटेन की लोक कथाऐं"।

संसार के सात महाद्वीप

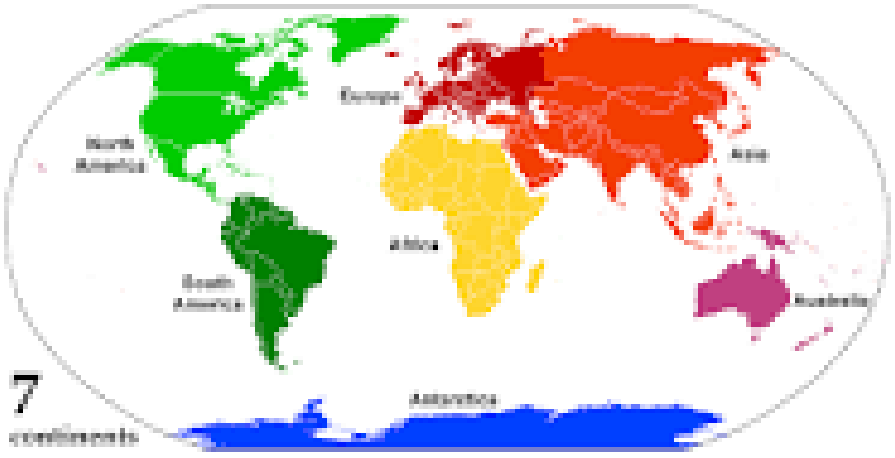

There are two distinctive geographical regions in Europe
--The first one is United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland (4 countries) – United Kingdom, Great Britain or Britain is an island on which there are three countries – England, Scotland, Wales. Later Northern Ireland joined them, so now the “United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland” includes the Northern part of Ireland too.
-- The other one is Norse, or Nordic or Scandinavian countries (5 countries). There are five countries in Nordic Countries – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden

1 बिल्ला और चुहिया[1]

बिल्ले और चुहिया की यह लोक कथा ब्रिटेन के बच्चों की एक बहुत ही मनपसन्द लोक कथा है। तो लो आज तुम भी पढ़ो यह लोक कथा और पढ़ कर बताओ कि तुमको यह कथा कैसी लगी।

एक बिल्ला और एक चुहिया खेलते थे एक घर में
फिर वे अनाजघर में खेलने लगे जब तक चुहिया को चोट नहीं लग गयी

चुहिया को क्या चोट लगी? हुआ यह कि बिल्ले ने चुहिया की पूँछ काट ली तो चुहिया बोली — "देखो मिस्टर बिल्ले, यह बात तुम्हारी ठीक नहीं है। तुम मेरी पूँछ वापस कर दो।"

पर बिल्ला बोला — "नहीं, मैं तुम्हारी पूँछ तुमको वापस नहीं करूँगा जब तक कि तुम गाय के पास नहीं जाओगी और मेरे पीने के लिये उसका दूध ले कर नहीं आओगी।"

सो वह कूदी और भागी भागी गाय के पास पहुँची और बोली — "ओ गाय, मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा दूध दो ताकि मैं उसको बिल्ले को पीने को दे सकूँ और वह फिर मुझे मेरी पूँछ मुझे वापस कर सके।"

गाय बोली — "मैं तुमको दूध नहीं दूँगी जब तक तुम किसान के पास से मुझे कुछ भूसा ला कर नहीं दोगी।"

[1] The Cat and the Mouse.

तुरन्त वह चुहिया कूदी और भागी भागी किसान के पास पहुँची और बोली — "किसान ओ किसान। मेहरबानी कर के मुझे कुछ भूसा दो ताकि मैं उस भूसे को गाय को खिला सकूँ। फिर गाय मुझे बिल्ले के लिये दूध दे देगी और मैं बिल्ले से अपनी पूँछ वापस ले सकूँगी।"

किसान बोला — "मैं तुमको भूसा तब तक नहीं दूँगा जब तक तुम मुझे कसाई से मॉस ला कर नहीं दोगी।"

सो वह चुहिया फिर कूदी और भागी भागी एक कसाई के पास पहुँची और बोली — "कसाई ओ कसाई, तुम मुझे थोड़ा सा मॉस दो। यह मॉस ले जा कर मैं किसान को दूँगी। किसान मुझे भूसा देगा, वह भूसा में गाय को दूँगी। गाय मुझे दूध देगी। दूध मैं बिल्ले को दूँगी और बिल्ला मुझे मेरी पूँछ वापस करेगा।"

कसाई बोला — "मैं तुमको मॉस तब तक नहीं दूँगा जब तक तुम मुझे बेकर से डबल रोटी ला कर नहीं दोगी।"

सो वह चुहिया फिर कूदी और भागी भागी एक बेकर के पास पहुँची और बोली — "ओ बेकर, मुझे डबल रोटी दो। यह डबल रोटी मैं कसाई को दूँगी। कसाई मुझे मॉस देगा। वह मॉस ले जा कर मैं किसान को दूँगी।

किसान मुझे भूसा देगा, वह भूसा में गाय को दूँगी। गाय मुझे दूध देगी। दूध मैं बिल्ले को दूँगी और बिल्ला मेरी पूँछ मुझे वापस करेगा।"

बेकर बोला — "मैं तुमको डबल रोटी केवल एक शर्त पर दे सकता हूँ कि तुम यहाँ फिर कभी नहीं आओगी और मेरी बेक की हुई चीज़ें कभी नहीं खाओगी और मेरे खरीदने वालों को भी कभी नहीं डराओगी।"

चुहिया ने बेकर से वायदा किया कि वह अब उसकी दूकान पर कभी नहीं आयेगी, न कभी उसकी बेक की हुई चीज़ों को खायेगी और न ही उसके खरीदारों को डरायेगी।

सो बेकर ने उसको डबल रोटी दे दी। डबल रोटी ले कर चुहिया भाग गयी।

भागी भागी वह कसाई के पास गयी। कसाई को उसने डबल रोटी दी। कसाई ने उसको मॉस दिया। मॉस ले कर वह किसान के पास गयी तो किसान ने उसको भूसा दिया।

भूसा ले कर वह गाय के पास गयी तो गाय ने उसको दूध दिया और उस दूध को ले कर वह बिल्ले के पास गयी। तब जा कर उस बिल्ले ने उसकी पूँछ वापस की। इस तरह उस चुहिया ने अपनी पूँछ वापस पायी।

2 तीन छोटे सूअर[2]

ब्रिटेन की यह लोक कथा भी वहॉ के बच्चों में बहुत लोकप्रिय है। तो लो अब तुम पढ़ो यह लोक कथा हिन्दी में।

एक बार की बात है कि तीन छोटे सूअर अपनी मॉ के साथ रहते थे। एक दिन उनकी मॉ ने उनसे कहा — "अब तुम लोग मेरे घर में रहने के लिये काफी बड़े हो गये हो सो अब तुमको अपना अपना घर बना लेना चाहिये।"

उसने उनको चूमा और कहा कि वे हमेशा बड़े बुरे भेड़िये से बच कर रहें। सो वे सूअर अपनी मॉ का घर छोड़ कर चल दिये।

जाते जाते उनको एक आदमी मिला जो एक गाड़ी में भूसा भर कर ले जा रहा था। उसको देख कर पहले छोटे सूअर ने उससे कहा — "तुम मुझे अपना भूसा बेच दो मैं उससे अपना घर बनाऊॅगा।"

उस आदमी ने उसको अपना भूसा बेच दिया। भूसे से मजबूत घर तो नहीं बनता पर वह सस्ता था। इस तरह से पहले छोटे सूअर ने सस्ता सा भूसे का घर बना लिया और उसमें रहने लगा। अब उसके पास खाने के लिये काफी पैसा बच रहा।

आगे चल कर दूसरे छोटे सूअर ने भी एक आदमी देखा जो अपनी गाड़ी में डंडियॉ भर कर ले जा रहा था। वह उससे बोला — "तुम मुझे अपनी डंडियॉ बेच दो मैं इनसे अपना घर बनाऊॅगा।"

[2] Three Little Pigs.

इस आदमी ने इस दूसरे छोटे सूअर को अपनी डंडियॉ बेच दीं। अब डंडियॉ भी कोई बहुत मजबूत घर तो बनाती नहीं पर फिर भी वे भी सस्ती ही थीं।

सो दूसरे छोटे सूअर ने अपना घर डंडियों से बनाया। यह घर भी सस्ते में बन गया और इसके पास भी काफी पैसा खाने और सोडा पीने के लिये बच गया।

तीसरे छोटे सूअर ने भी एक आदमी देखा जो अपनी गाड़ी में ईंटें भर कर ले जा रहा था। उसने उससे कहा — "क्या तुम मुझे अपनी ये ईंटें बेचोगे? मैं इनसे अपना घर बनाऊँगा।"

उस आदमी ने उसको अपनी ईंटें बेच दीं सो तीसरे छोटे सूअर ने अपना घर ईंटों का बनाया।

ईंटों के घर मजबूत बनते हैं पर ईंटें होती भी बहुत मॅहगी हैं। सो इस तीसरे छोटे सूअर को अपना ईंटों का घर बनाने के लिये अपना सारा पैसा खर्च कर देना पड़ा।

अब उसका घर तो बहुत मजबूत था पर उसके पास खाने के लिये कोई पैसा नहीं बचा था। खाना लेने के लिये अब उसको बाहर जाना पड़ता था।

खाने के लिये वह जंगली जड़ें, प्याज, मुशरूम आदि ले आता था और उन्हीं को खाता था। ये सब चीजें उसकी तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ही फायदेमन्द भी थीं।

सो अब तीनों छोटे सूअर अपने अपने घरों में आराम से रह रहे थे कि एक दिन...

वह बड़ा बुरा भेड़िया पहले वाले सूअर के घर आया और उसके घर का दरवाजा खटखटाया और बोला — "ओ छोटे सूअर, ओ छोटे सूअर, मुझे अपने घर के अन्दर आने दो।"

छोटे सूअर ने जवाब दिया — "नहीं नहीं, मेरी छोटी ठोड़ी के बालों की कसम, नहीं नहीं।"

भेड़िया बोला — "अगर तुम मुझे अन्दर नहीं आने दोगे तो मैं अपने मुँह से बहुत सारी हवा फेंकूँगा और तुम्हारा घर उड़ा कर नीचे गिरा दूँगा।"

छोटे सूअर ने कहा — "तुम जो चाहे करो पर मैं दरवाजा नहीं खोलूँगा।"

और उस छोटे सूअर ने अपने घर का दरवाजा नहीं खोला।

तब भेड़िये ने अपने मुँह से बहुत ज़ोर की हवा फेंकी और उसका भूसे का घर हवा में उड़ा कर गिरा दिया। पहला छोटा सूअर जितनी जल्दी भाग सकता था उतनी जल्दी भाग कर अपने छोटे भाई के डंडियों वाले घर में चला गया।

जैसे ही उसने घर में घुस कर घर का दरवाजा बन्द किया वह बड़ा बुरा भेड़िया भी उसके पीछे पीछे वहीं आ पहुँचा।

उसने उस दूसरे सूअर के घर का दरवाजा भी खटखटाया और बोला — "ओ छोटे सूअरों, ओ छोटे सूअरों, दरवाजा खोलो और मुझे घर के अन्दर आने दो।"

दोनों सूअरों ने एक आवाज में जवाब दिया — "नहीं नहीं, हमारी छोटी ठोड़ी के बालों की कसम, नहीं नहीं।"

भेड़िया बोला — "अगर तुम लोग मुझे अन्दर नहीं आने दोगे तो मैं अपने मुँह से बहुत सारी हवा फेंकूँगा और तुम्हारा घर उड़ा कर नीचे गिरा दूँगा।"

दोनों छोटे सूअरों ने कहा — "तुम जो चाहे करो पर हम तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोलेंगे।"

और उन दोनों छोटे सूअरों ने अपने घर का दरवाजा नहीं खोला।

भेड़िये ने अपने मुँह से बहुत ज़ोर की हवा फेंकी और उस दूसरे छोटे सूअर का डंडियों का घर भी हवा में उड़ा कर गिरा दिया।

दोनों छोटे सूअर भाई भी जितनी जल्दी वहाँ से भाग सकते थे अपने तीसरे सबसे छोटे भाई के ईंटों वाले घर में भाग गये।

जैसे ही उन दोनों ने अपने तीसरे भाई के घर में घुस कर उसके घर का दरवाजा बन्द किया कि वह बड़ा बुरा भेड़िया उनके पीछे पीछे वहाँ भी आ पहुँचा।

सो उसने फिर तीसरे सूअर के घर का दरवाजा खटखटाया और बोला — "ओ छोटे सूअरों, ओ छोटे सूअरों, दरवाजा खोलो और मुझे घर के अन्दर आने दो।"

तीनों सूअरों ने एक आवाज में जवाब दिया — "नहीं नहीं, हमारी छोटी ठोड़ी के बालों की कसम, नहीं नहीं।"

भेड़िया बोला — "अगर तुम लोग मुझे अन्दर नहीं आने दोगे तो मैं अपने मुँह से बहुत सारी हवा फेंकूँगा और तुम्हारा घर उड़ा कर नीचे गिरा दूँगा।"

उन तीनों छोटे सूअरों ने कहा — "तुम जो चाहे करो पर हम तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोलेंगे।"

और उन तीनों छोटे सूअरों ने अपने घर का दरवाजा नहीं खोला।

भेड़िये ने अपने मुँह से बहुत ज़ोर की हवा फेंकी पर वह उनका ईंटों का घर हवा में नहीं उड़ा सका। उसने ऐसा कई बार किया पर फिर भी वह उनका घर हवा में नहीं उड़ा सका।

सो उसने अबकी बार दूसरी चाल खेली। उसने उनके लिये बहुत ही अच्छा बनने की कोशिश की।

वह बोला — "ओ छोटे सूअरों, मुझे मालूम है कि बहुत ही बढ़िया शलगम का खेत कहाँ है।"

तीनों सूअर एक साथ बोले — "कहाँ है वह?"

भेड़िया चालाकी से बोला — "वह तो उस पहाड़ी के दूसरी तरफ है। मैं कल आऊँगा और तब हम सब एक साथ वहाँ चल कर वहाँ से शलगम ला सकते हैं।"

सूअर बोले — "ठीक है। हम लोग तैयार रहेंगे। तुम कब आओगे?"

भेड़िया बोला — "सुबह छह बजे।"

पर तीनों छोटे सूअर अगले दिन सुबह पाँच बजे ही उठ गये और भेड़िये के आने से पहले ही वहाँ से शलगम ले आये।

जब छह बजे तो भेड़िया आया और बोला — "छोटे सूअरों आओ चलो चलें, मैं तुम लोगों को साथ में शलगम तोड़ने के लिये ले जाने के लिये आ गया हूँ।"

तीनों सूअर बोले — "हम लोग वहाँ गये थे और शलगम तोड़ कर वापस भी आ गये हैं। अब हम उनको अपने शाम के खाने के लिये पका रहे हैं।"

यह सुन कर भेड़िया बहुत गुस्सा हुआ। वह उन तीनों सूअरों को खा जाना चाहता था सो वह उनके घर की छत पर चढ़ गया। वहाँ से वह उनके घर की चिमनी के रास्ते उनके घर में घुसना चाहता था।

पर तीनों छोटे सूअरों ने यह सुन लिया कि वह उनकी छत पर है सो उन्होंने चिमनी के नीचे उबलते पानी का एक बड़ा सा बर्तन रख दिया।

जैसे ही वह भेड़िया चिमनी में से नीचे आ रहा था कि सूअरों ने उस बर्तन का ढक्कन खोल दिया और भेड़िया उस उबलते पानी में गिर पड़ा। वह चीखा और फिर से चिमनी में ऊपर की तरफ चढ़ गया।

वहॉ से वह चीखता हुआ बाहर भाग गया और फिर वह वहॉ कभी नहीं देखा गया। वह अभी तक भी चीखता हुआ सुना जाता है। तीनों सूअर फिर आराम से रहते रहे।

3 तीन भालू[3]

यह लोक कथा ब्रिटेन में "गोल्डीलौक्स और तीन भालू" के नाम से भी मशहूर है।

एक समय की बात है कि ब्रिटेन के एक जंगल में तीन भालू रहते थे – एक बड़ा भालू, एक बीच का भालू और एक छोटा भालू।

जंगल में उनका अपना मकान था। उन तीनों भालुओं के पास दलिया खाने के लिये अपने अपने कटोरे थे – बड़े भालू के पास बड़ा कटोरा, बीच वाले भालू के पास बीच वाला कटोरा और छोटे भालू के पास छोटा वाला कटोरा।

तीनों भालुओं के पास अपनी अपनी कुर्सियॉ थीं बैठने के लिये – बड़े भालू के पास बड़ी खुर्शी, बीच वाले भालू के पास बीच की खुशी और छोटे भालू के पास छोटी खुशी।

इसी तरह उन तीनों भालुओं के पास अपने अपने पलंग थे – बड़े भालू के पास बड़ा पलंग, बीच वाले भालू के पास बीच का पलंग और छोटे भालू के पास छोटा पलंग।

[3] Three Bears.

एक दिन उन भालुओं ने सुबह नाश्ते में अपने लिये दलिया बनाया। उसको अपने अपने कटोरों में पलटा। परन्तु वह बहुत गर्म था इसलिये उसके ठंडा होने तक उन्होंने जंगल में घूमने का प्रोग्राम बनाया।

जब वे जंगल में घूम रहे थे तो एक लड़की उनके घर आयी जिसका नाम था गोल्डीलौक्स। पहले उसने खिड़की से झॉका और फिर चाभी वाले छेद से।

घर में कोई नहीं था सो उसने दरवाजे का हैन्डिल घुमा कर दरवाजा खोला। दरवाजा खुला था क्योंकि वहॉ चोरी का कोई डर नहीं था और वे भालू भी बहुत अच्छे थे।

क्योंकि वे किसी को कोई नुकसान नही पहुॅचाते थे इसलिये वे यह सोच भी नहीं सकते थे कि कोई उनको नुकसान पहुॅचायेगा।

सो गोल्डीलौक्स दरवाजा खोल कर अन्दर चली गयी। वहॉ मेज पर दलिया रखा था जिसमें से सोंधी सोंधी खुशबू उड़ रही थी। गोल्डीलौक्स ने यह भी नहीं सोचा कि वह दलिया किसका है और वह सीधी मेज के पास चली गयी।

पहले उसने बड़े भालू का दलिया चखा वह बहुत गर्म था। फिर उसने बीच वाले भालू का दलिया चखा वह बहुत ठंडा था।

फिर उसने छोटे भालू का दलिया चखा वह उसके लिये बिल्कुल ठीक था। सो वह उसको इतना अच्छा लगा कि वह उसके कटोरे का सारा दलिया खा गयी।

फिर वह दूसरे कमरे में गयी। वहॉ तीन कुर्सियॉ रखीं थीं। पहले वह बड़े भालू की खुशी पर बैठी वह उसके लिये बहुत सख्त थी। फिर वह बीच वाले भालू की खुशी पर बैठी वह उसके लिये बहुत मुलायम थी।

फिर वह छोटे भालू की खुशी पर बैठी वह उसके लिये बिल्कुल ठीक थी। वह खुशी गोल्डीलौक्स को इतनी पसन्द आयी कि वह उस पर बैठ कर तब तक झूलती रही जब तक कि वह टूट नहीं गयी।

फिर वह उस कमरे में गयी जहॉ तीनों भालू सोते थे। पहले वह बड़े भालू के पलंग पर लेटी पर वह उसके लिये उसके सिरहाने की तरफ से बहुत ऊॅचा था। फिर वह बीच वाले भालू के पलंग पर लेटी पर वह उसके लिये उसके पैरों की तरफ से बहुत ऊॅचा था।

फिर वह छोटे भालू के पलंग पर लेटी तो वह न तो सिरहाने की तरफ से ऊॅचा था और न ही पैरों की तरफ से ऊॅचा था। वह उसके लिये बिल्कुल ठीक था।

गोल्डीलौक्स को वह पलंग इतना अच्छा लगा कि वह चादर ओढ़ कर उस पलंग पर लेट गयी और लेटते ही गहरी नींद सो गयी।

कुछ देर बाद तीनों भालुओं ने सोचा कि अब उनका दलिया ठंडा हो गया होगा सो वे तीनों भालू नाश्ते के लिये घर वापस आये।

गोल्डीलौक्स ने बड़े भालू की चम्मच उसके कटोरे में ही छोड़ दी थी। जैसे ही भालू घर में घुसे बड़े भालू ने यह देख लिया और ज़ोर से बोला — "किसी ने मेरा दलिया खाया है।"

गोल्डीलौक्स ने बीच वाले भालू की चम्मच भी उसके कटोरे में छोड़ दी थी सो बीच वाला भालू बीच की आवाज में बोला — "किसी ने मेरा दलिया भी खाया है।"

फिर छोटे भालू ने अपना कटोरा देखा तो उसने देखा कि उसके दलिया का कटोरा तो खाली पड़ा है। वह अपनी पतली सी आवाज में बोला — "किसी ने मेरा दलिया भी खाया है और खत्म भी कर दिया है।"

अब वे तीनों भालू दूसरे कमरे में गये। गोल्डीलौक्स ने बड़े भालू की गद्दी उसकी खुशी में मुड़ी हुई छोड़ दी थी। बड़े भालू ने जब यह देखा तो ज़ोर से बोला — "कोई मेरी खुशी पर बैठा है।"

गोल्डीलौक्स ने बीच वाले भालू की गद्दी उसकी खुशी में नीचे धॅसा दी थी। सो जब बीच वाले भालू ने अपनी खुशी देखी तो अपनी बीच की आवाज में बोला — "मेरी खुशी पर भी कोई बैठा है।"

फिर छोटे भालू ने अपनी खुशी देखी तो अपनी पतली सी आवाज में बोला — "कोई मेरी खुशी पर भी बैठा है और उसने तो उसे तोड़ भी दिया है।"

अब वे तीनों भालू अपने सोने वाले कमरे में आये। गोल्डीलौक्स ने बड़े भालू का तकिया अपनी जगह से हटा दिया था। सो उसने जब यह देखा तो ज़ोर से बोला — "कोई मेरे पलंग पर लेटा है।"

गोल्डीलौक्स ने बीच वाले भालू का तकिया और कम्बल दोनों ही उनकी जगह से हटा दिये थे। सो उसने जब यह देखा तो अपनी बीच की आवाज में बोला — "कोई मेरे पलंग पर भी लेटा है।"

फिर छोटे भालू ने अपना पलंग देखा तो अपनी पतली सी आवाज में बोला — "कोई मेरे पलंग पर लेटा है और वह यह है।"

यह सब सुन कर गोल्डीलौक्स की ऑख खुल गयी और वह इतना डर गयी कि पलंग से कूद कर खुली खिड़की से निकल कर बाहर कूद गयी और पीछे देखे बिना ही तेज़ी से भाग गयी और भागती ही चली गयी।

किसी को नहीं मालूम कि गोल्डीलौक्स भागती हुई कहॉ गयी क्योंकि तीनों भालुओं में से किसी ने उसे फिर नहीं देखा।

अगर तुमको वह कहीं मिल जाये तो उन भालुओं को जरूर बताना वे अभी तक उसको ढूँढ रहे हैं।

4 छोटी लाल मुर्गी[4]

एक छोटी लाल मुर्गी एक पहाड़ी की तलहटी में अकेली अपनी झोंपड़ी में रहती थी। हर सुबह वह अपना घर झाड़ बुहार कर, दरवाजा बन्द कर और उसकी चाभी अपने ऐप्रन की जेब में डाल कर बाजार जाया करती थी।

उसी पहाड़ी की चोटी पर एक चालाक लोमड़ा अपनी मॉ के साथ जंगल में रहता था। रोज सुबह उसकी मॉ एक बड़े से बर्तन में पानी भरती थी और उसको उबलने के लिये रख देती थी।

उस समय वह लोमड़ा अपने होठ चाटता हुआ बोलता था — "मॉ, तुम क्या बना रही हो? आज मुझे गोश्त चाहिये। मुझे दस के बराबर भूख लगी है।"

और उसकी मॉ जवाब देती — "उॅह, दस के बराबर भूख? तो जाओ और उस लाल मुर्गी को पकड़ कर लाओ।"

रोज रोज वह लोमड़ा यह सुनते सुनते तंग आ गया था सो एक दिन उसने सोचा कि आज वह लाल मुर्गी को पकड़ कर ही लायेगा। सो वह लोमड़ा उस लाल मुर्गी की झोंपड़ी की तरफ चल दिया।

उसने उसकी झोंपड़ी के दरवाजे का हैन्डिल इधर घुमाया उधर घुमाया, पर वह दरवाजा नहीं खुला तो वह निराश हो कर घर लौट

[4] Little Red Hen.

आया और घर पर अकेले ही बैठ कर उस मुर्गी को पकड़ने के बारे में कुछ सोचने लगा।

उसने सोचा — "अगर मैं दस लोमड़ों के बराबर खाना खाना चाहता हूँ तो मुझे उस लाल मुर्गी को पकड़ कर लाना ही होगा। कल मैं तड़के ही उठ कर उस मुर्गी के घर के बाहर उसके निकलने का इन्तजार करूँगा।"

सो अगले दिन वह सुबह तड़के ही उठा। उस समय सभी सोये हुए थे। उसने अपने साथ एक बड़ी थैली और एक छोटी रस्सी ली और सूरज निकलने से पहले ही वह लाल मुर्गी की झोंपड़ी के पास पहुँच गया और छिप कर उसके बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा।

भीतर से मुर्गी के अपने घर को झाड़ने बुहारने की आवाज आ रही थी। घर झाड़ बुहार कर जल्दी ही वह बाहर आ गयी और दरवाजा खुला छोड़ कर वह पास वाले पेड़ के नीचे से लकड़ियाँ चुनने चली गयी।

लोमड़े के लिये यह अच्छा मौका था सो वह मुर्गी के घर में घुस गया और एक आराम खुशी पर छिप कर बैठ गया।

इतने में ही मुर्गी लकड़ियाँ चुन कर घर वापस आ गयी। वे लकड़ियाँ उसने अंगीठी के पास रख दीं और फिर उनमें आग लगाती हुई बोली — "लकड़ियों, मैं आग लगाती हूँ तुम जलो।"

इतने में ही लोमड़े को खॉसी आ गयी और वह बोला — "बहुत सुन्दर।"

मुर्गी बोली — "टुक टुक, कौन है यहॉ? टुक टुक।"

और वह डर के मारे कॉप गयी। उसके सामने तो लोमड़ा खड़ा था। अब क्या था, वह इस कोने से उस कोने में भागने लगी।

लोमड़े ने भारी सी आवाज में कहा — "जब तुम चावल के साथ पकोगी तब तुममें स्वाद आयेगा।"

छोटी लाल मुर्गी चिल्लायी — "भागो, भागो यहॉ से।"

डरी हुई लाल मुर्गी उड़ कर लकड़ी के एक लट्ठे पर बैठ गयी। वह इतनी डरी हुई थी कि लोमड़े पर से अपनी ऑख नहीं हटा पा रही थी।

दॉत किटकिटाते हुए और अपनी लाल जीभ बाहर निकालते हुए लोमड़े ने उसकी तरफ घूरा और फिर धीरे से अपनी पूँछ पर बैठ कर उसने जो चक्कर काटना शुरू किया तो वह घूमता ही रहा, घूमता ही रहा, घूमता ही रहा पर उसकी ऑखें मुर्गी पर ही लगी रहीं।

अब तो मुर्गी इतनी ज़्यादा डर गयी कि वह लोमड़े के सामने ही जा गिरी और लोमड़े ने तुरन्त ही उसे पकड़ लिया और बोला — "अहा, पकड़ लिया। मैंने तुम्हें पकड़ लिया। अब मैं तुम्हें थैली में बन्द करूँगा और फिर उसे रस्सी से बॉधूंगा।

मुझे दस के बराबर भूख लगी है, ओ लाल मुर्गी। मेरी मॉ तुझे पकायेगी और पका कर तुझे गर्म गर्म मेरे सामने परोसेगी। चावल तो अच्छे होते ही हैं परन्तु तेरा स्वाद तो निराला है।"

सो लोमड़े ने उसे एक थैली में बन्द किया और थैली का मुँह रस्सी से बॉध कर अपने घर चल दिया।

वह कहता जा रहा था — "मेरे इस बड़े थैले के अन्दर लाल मुर्गी है। मैं उसे अपने घर ले जा रहा हूँ। जब मैं घर पहुँचूँगा तो बोलूँगा कि मैं शाम का खाना ले आया हूँ।"

इस विचार से लोमड़े को और भी ज़्यादा भूख लग आयी कि शाम को उसे यह मुर्गी खाने को मिलेगी और वह और ज़्यादा तेज़ तेज़ चल दिया।

परन्तु पहाड़ी की चढ़ाई बहुत ऊँची थी और धूप भी बहुत तेज़ थी सो वह बहुत जल्दी ही हॉफने लगा। आखिर वह बीच रास्ते में बैठ गया और पानी पीने के बारे में सोचने लगा।

उसने थैली कन्धे से उतारी और एक गड्ढे में छिपा दी और पानी की खोज में जंगल में चल दिया।

थैली के अन्दर से मुर्गी सब सुन रही थी। वह बड़ी खुश हुई। जब लोमड़ा चला गया और उसके कदमों के आने की आवाज आनी बन्द हो गयी तो अपने ऐप्रन की जेब में कैंची ढूँढी।

कैंची उसकी जेब में ही थी और कैंची के साथ साथ उसका सुई धागा भी उसके पास था सो उसने दोनों निकाल लिये।

बड़ी होशियारी से उसने उस कैंची से थैली में एक छोटा सा छेद किया और फिर उसी कैंची से उस छेद को बड़ा किया और उसमें से इधर उधर झॉका पर लोमड़े का कहीं पता नहीं था। सो वह उस छेद में से बाहर निकल आयी।

बाहर निकल कर उसने एक बड़ा पत्थर उठा कर उस थैली में डाल दिया और छेद को सुई धागे से सिल दिया। छेद सिलने के बाद वह तुरन्त ही उलटे पैरों अपने घर की तरफ भाग ली और अन्दर घुस कर दरवाजा बन्द कर के ताला लगा लिया।

लोमड़ा भी जल्दी ही वापस लौट आया। उसे ठंडा पानी मिल गया था सो वह बहुत खुश था। उसने गड्ढे में से थैली निकाली, कन्धे पर डाली और आगे बढ़ चला।

वह अभी भी गा रहा था — "मेरे इस बड़े थैले के अन्दर छोटी लाल मुर्गी है मैं उसे अपने घर ले जा रहा हूँ।"

बीच बीच में वह यह भी कहता जा रहा था "लगता है इस मुर्गी की हड्डियॉ बहुत तेज़ धार के समान हैं बहुत चुभ रही हैं ये मुझे।"

घर पहुँच कर लोमड़ा मॉ से बोला — "मॉ, मेरी कमर बहुत दुख रही है। यह इतनी भारी होगी यह तो मुझे पता ही नहीं था। मैं तो थक गया। यह लो। क्या तुमने पानी उबाल रखा है? मुझे दस के बराबर भूख लगी है।"

मॉ ने पूछा — "क्या तुम दस के बराबर भूखे हो? क्या तुमको छोटी लाल मुर्गी मिल गयी?

लोमड़े ने जवाब दिया — "हॉ मॉ, मैं उसे ले आया हूँ। आज मैं उसके घर में घुस गया था और उसे पकड़ लाया। देखो यह है वह।"

कह कर लोमड़े ने उस थैली का मुँह पानी के बर्तन के ऊपर खोल दिया।

फड़ाक, अरे यह क्या? पानी में तो बजाय मुर्गी के पत्थर गिर गया। साथ ही वह उबलता पानी उसके और उसकी मॉ के ऊपर गिर गया।

लोमड़ा डर के मारे चीखता चिल्लाता दरवाजे की तरफ भाग लिया और पीछे पीछे उसकी मॉ भी "रुको रुको" की आवाज लगाती दौड़ी। सो आगे आगे बेटा और पीछे पीछे मॉ। और अभी भी वे एक दूसरे के पीछे दौड़ रहे हैं।

5 छोटी दर्जिन[5]

एक बार एक छोटी दर्जिन थी जो एक बड़ी दर्जिन के पास काम करती थी। उस छोटी दर्जिन का नाम लौटा था। हालॉकि वह उम्र में बहुत छोटी था परन्तु वह इतनी सुन्दर और साफ सिलाई करती थी और इतने सुन्दर डिजाइन के फ्राक बनाती थी कि वह राज्य भर में सबसे अच्छी दर्जिन थी।

पर यह छोटी दर्जिन इतनी छोटी थी कि बड़ी दर्जिन ने सोचा — "लौटा से मुझे यह कहने की जरूरत नहीं है कि वह इस राज्य की सबसे अच्छी दर्जिन है क्योंकि अगर मैं उससे यह नहीं कहूँगी तो उसको पता ही नहीं चलेगा कि वह राज्य की सबसे अच्छी दर्जिन है।

और अगर मैंने उससे यह कह दिया तो या तो वह कहीं और चली जायेगी और या फिर अपनी दूकान खोल लेगी और मेरा काम ठप्प हो जायेगा।"

यही सोच कर बड़ी दर्जिन ने लौटा से कुछ नहीं कहा मगर वह अक्सर उसकी तारीफ किया करती। लौटा भी इतनी भोली थी कि उसको अपने गुणों का कुछ पता ही नहीं था कि वह वाकई राज्य भर की सबसे अच्छी दर्जिन है।

[5] Little Tailor.

एक दिन बड़ी दर्जिन ने लौटा से कहा — "कल रौले पौले की माशनिस अपने लिये नाच की पोशाक सिलवाने आयी थी। वह हल्के गुलाबी रंग की सिल्क की पोशाक के पीछे पागल है।"

लौटा तुरन्त ही बोली — "मगर उस पर तो अलूचे के रंग की मखमली पोशाक बहुत अच्छी लगेगी।"

बड़ी दर्जिन बोली — "ठीक, मैंने भी उसको यही कहा था। फिर वह कहने लगी कि उसको अपनी स्कर्ट में सत्रह प्लेट चाहिये।"

लौटा बोली — "नहीं नहीं, उसको तो सादे काट वाली फ्राक पहननी चाहिये।"

"बिल्कुल ठीक। ठीक मैंने भी उसको यही कहा था।"

और रौले पौले की माशनिस के लिये उन्होंने बजाय गुलाबी रंग की सिल्क के अलूचे के रंग की मखमली पोशाक तैयार कर दी जो उसे और देखने वालों को बहुत पसन्द आयी। सबने बड़ी दर्जिन की बड़ी तारीफ की परन्तु लौटा का नाम उसमें कहीं नहीं था।

जिस देश में लौटा रहती थी उसकी रानी की उम्र सत्तर साल थी। उसके कोई अपना बच्चा नहीं था क्योंकि वह कुँआरी थी मगर उसके पच्चीस साल का एक भतीजा था जिसका नाम रिचर्ड था। वह वहीं पास के एक राज्य का राजा था और इस रानी के बाद इसका राज्य भी उसी को मिलने वाला था।

उस भतीजे ने बीस साल से अपनी बुआ को नहीं देखा था। वह एक सुन्दर कुऑरा नौजवान था। उसकी बुआ उसको कई बार शादी करने के लिये लिख चुकी थी पर उसके जवाब में वह लिख देता —

"प्रिय बुआ, तुम्हारे भेजे पेन्सिल के डिब्बे के लिये धन्यवाद।

तुम्हारा प्यारा भतीजा, डिक

फिरः शादी के लिये तो अभी बहुत समय है।"

मगर उसकी बुआ तो सत्तर साल की थी और राजा रिचर्ड था केवल पच्चीस साल का। अब सत्तर साल के आदमी के सामने तो इतना समय नहीं होता जितना कि एक पच्चीस साल के आदमी के सामने होता है इसलिये बुआ ने अबकी बार उसको अधिकारपूर्ण ढंग से आने के लिये एक पत्र लिखा। तो जवाब में उसने लिखा —

"ठीक है बुआ, जैसा तुम चाहो।

तुम्हारा प्यारा भतीजा, डिक"

फिरः मैं उसी लड़की से शादी करूँगा जो साढ़े उन्नीस साल की हो और जिसकी कमर का नाप भी साढ़े उन्नीस इंच ही हो।

रानी ने तुरन्त ही दरबार की सारी लड़कियों को बुलाया। उनमें से केवल तीन लड़कियॉ ही ऐसी निकलीं जो साढ़े उन्नीस साल की थीं और जिनकी कमर का नाप साढ़े उन्नीस इंच था।

उसने फिर अपने भतीजे को लिखा —

"प्रिय रिचर्ड, हमारे दरबार में केवल तीन लड़कियॉ ही ऐसी हैं जो अगले दिसम्बर में बीस साल की हो जायेंगी, अभी जून चल रहा है। वे तीनों ही सुन्दर हैं और तुम्हारे लायक हैं। तुम बस आ जाओ और उनमें से किसी एक को चुन लो।

तुम्हारी प्यारी बुआ"

इसके बदले में रिचर्ड ने जवाब दिया —

"प्रिय बुआ, ऐसा ही किया जायेगा। मैं सोमवार को आऊॅगा और मंगल, बुध, बृहस्पतिवार तीनों दिन एक एक लड़की के साथ नाचूॅगा और जो मुझे उनमें सबसे अच्छी लगेगी मैं उसी के साथ शुक्रवार को शादी कर लूॅगा और शनिवार को वापस आ जाऊॅगा।

तुम्हारा प्यारा भतीजा, डिक"

फिरः मैं नाच में उस लड़की को फैन्सी ड्रैस में देखना ही पसन्द करूॅगा क्योंकि मैं खुद भी नाच में फैन्सी ड्रैस ही पहनूॅगा।"

मगर रानी को यह पत्र सोमवार की सुबह मिला और उसी शाम को राजा आ रहा था। अब तुम लोग सोच सकते हो कि महल में क्या शोर और क्या हाय तौबा मच रही होगी, खास कर साढ़े उन्नीस इंच कमर वाली लड़कियों में तो बहुत ही भाग दौड़ मच रही थी।

उन सबने आव देखा न ताव वे सब तुरन्त ही बड़ी दर्जिन के पास पहुॅचीं और सबने उससे अपने लिये अच्छी से अच्छी पोशाक सिलने के लिये और समय पर देने के लिये कहा।

बड़ी दर्जिन ने तीनों लड़कियों से वायदा कर लिया कि वह उन सबकी पोशाकें समय पर दे देगी। जैसे ही वे तीनों चलीं गयीं वह अन्दर दौड़ी हुई लौटा के पास आयी और आ कर उसको सब

बताया। "अगर हम उन सबको समय से काम देना चाहें तो हमें अपने पूरे दिमाग और ताकत से काम करना होगा।"

लौटा खुशी से बोली — "मैं यह काम कर सकती हूँ पर यह काम तभी पूरा हो सकता है जब मैं दिन रात जाग कर काम करूँ।"

"बहुत अच्छे लौटा, बहुत अच्छे। अब यह सोचा जाये कि उनकी पोशाकें कैसी हों।"

"मेरे ख्याल से डचैस के लिये सुनहरी, काउन्टैस के लिये रुपहली और लेडी ब्लाक के लिये इन्द्रधनुषी रंग की पोशाकें ठीक रहेंगी।"

"तुमने बहुत ही अच्छा सोचा है लौटा। असल में तुमने मेरे मुँह की बात छीन ली। मैं भी यही सोच रही थी।"

अब लौटा पोशाकों के डिजाइन बनाने बैठी। पहली ड्रेस का डिजाइन ऐसा था कि जब उसे पहनने वाला उसको पहन कर नाचता तो उसमें से सुनहरी किरनें सी निकलती दिखायी देतीं।

वह दिन और रात बैठ कर यह पोशाक सिलती रही। राजा का आना भी वह नहीं देख पायी और अगले दिन नाच से करीब एक घंटा पहले ही उसने वह पोशाक तैयार कर के खत्म की।

बड़ी दर्जिन ने कहा — "महल से पोशाक लाने के लिये गाड़ी आयी है और यहाँ से एक लड़की को वह पोशाक पहन कर दिखानी होगी। मैं किस लड़की को भेजूँ? इस पोशाक की कमर तो केवल साढ़े उन्नीस इंच है।"

लौटा ने कहा — "यह तो मेरा नाप है।"

"चलो, अच्छा हुआ। तो उठो, जल्दी से इसे पहन लो और पहन कर महल चली जाओ।"

लौटा ने जल्दी से वह सुनहरी फ्राक पहनी, सुनहरे जूते पहने, एक छोटा सा ताज लगाया और उसके ऊपर अपना पुराना काला शाल ओढ़ कर गाड़ी में बैठ गयी।

जब वह महल में पहुँची तो एक चौकीदार ने उसको देखा और उसको डचैस के कमरे के पास वाले कमरे में ले गया और बोला — "तुम यहाँ बैठो। जब डचैस तुमसे मिलने के लिये तैयार होंगी तब वह घंटी बजा देंगी। तुमने अपने शाल के नीचे वही पोशाक पहन रखी है न?"

लौटा ने कहा — "हाँ, यह पोशाक डचैस की ही है। इसी पोशाक को पहन कर वह राजा के साथ नाचेंगी। क्या तुम इसे देखना चाहते हो?"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं।" लौटा ने अपना शाल उतारा तो लगा काले बादलों से सूरज की किरन फूट निकली हो।

उसने पूछा — "क्या यह सुन्दर नहीं है? क्या तुम सोचते हो कि इस फ्राक को देख कर राजा अपने आपको डचैस के साथ नाचने से रोक पायेगा?"

चौकीदार ने कहा — "मुझे पूरा विश्वास है कि वह बिल्कुल भी नहीं रोक पायेगा।" फिर वह थोड़ा सा झुक कर लौटा से बोला — "डचैस, क्या मैं आपके साथ नाच सकता हूँ?"

लौटा हँसी और बोली — "ओह योर मैजेस्टी, यह तो मेरी खुशीकस्मती है।"

चौकीदार ने अपनी बाँह लौटा की कमर में डाल दी और नाचना शुरू कर दिया और वह लौटा से यह कहने ही वाला था कि उसके बाल तो धूप से भी अधिक सुनहरे हैं कि घंटी बज गयी और लौटा को अन्दर जाना पड़ा।

डचैस अपनी पोशाक देख कर बहुत खुश हुई और जब लौटा ने उसको बताया कि उस पोशाक को पहन कर किस तरह चलना है और किस तरह उठना बैठना है तो उसने तुरन्त ही उसे पहन लिया और नाच वाले कमरे में चली गयी।

डचैस के कमरे में घुसते ही कमरा तालियों से गूँज उठा। लौटा ने तालियों की आवाज सुनी और अपना पुराना शाल ओढ़ कर यह सोचती हुई चली आयी कि राजा उसके साथ नाच करने से अब अपने आपको रोक नहीं पायेगा।

अब उसे काउन्टैस के लिये रुपहली पोशाक बनानी थी। सारी रात और सारा दिन काम कर के उसने उसके लिये उसकी वह रुपहली पोशाक तैयार की। जैसे ही उसने वह पोशाक सिल कर तैयार की तुरन्त ही उसको लेने के लिये शाही सवारी आ पहुँची।

पहले की तरह से उसने वह पोशाक पहनी, उसके ऊपर अपना वही पुराना काला शाल ओढ़ा और सवारी में बैठ गयी। पहले ही की तरह से उसी चौकीदार ने उसका स्वागत किया और उसे बाहर वाले कमरे में इन्तजार करने को बोला।

लौटा ने उससे पूछा — "कल रात क्या हुआ?"

चौकीदार ने कहा — "राजा ने कल रात सुनहरी डचैस के साथ पूरी शाम नाच किया और मुझे आशा नहीं कि वह आज काउन्टैस के साथ नाचेगा।"

लौटा ने अपना काला शाल उतारा तो लगा कि अँधेरी रात में चाँद निकल आया। वह चौकीदार से बोली — "क्या तुम अभी भी ऐसा ही सोचते हो?"

चौकीदार ने उसका हाथ थाम कर उसके हाथ को चूमते हुए कहा — "ओह काउन्टैस, क्या तुम मुझे नाच में अपना साथी बना कर मुझे दुनियाँ का सबसे अधिक खुशीकस्मत आदमी बनाओगी?"

लौटा ने मीठी मुस्कुराहट के साथ कहा — "यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी योर मैजेस्टी।"

और दोनों ने फिर एक बार उस कमरे में नाचना शुरू कर दिया। कुछ देर बाद वे बैठ गये और उन्होंने एक दूसरे के बारे में बात करना शुरू कर दिया।

लौटा ने उसे बताया कि वह साढ़े उन्नीस साल की है और उस की मॉ किसी घर में नौकरानी का काम करती है और उसका पिता जूते ठीक करने का काम करता है।

और चौकीदार ने लौटा को बताया कि वह पच्चीस साल का है और उसकी मॉ कपड़े धोती है और उसका पिता किताबों की जिल्द बॉधने का काम करता है।

वह खुद राजा के यहॉ चौकीदार का काम करता है और राजा की शादी होते ही वह राजा के साथ अपने देश वापस चला जायेगा।

यह सुन कर लौटा कुछ सोचने लगी और उदास हो गयी। चौकीदार के लाख पूछने पर भी वह उसको अपने उदास होने की कोई वजह नहीं बता सकी।

चौकीदार ने उसका हाथ पकड़ा और कहने ही वाला था कि उसका हाथ चॉदनी की तरह सफेद है कि घंटी बज गयी और लौटा अन्दर चली गयी।

काउन्टैस उस फ्राक को देख कर बहुत खुश हुई और उसके बारे में सब कुछ जान लेने के बाद उसने उसको पहना और नाच वाले कमरे में चली गयी।

लौटा वापस लौट चली और वापस जाते समय उसने उस पोशाक की तारीफों की आवाजें सुनी जो नाच के कमरे में गूॅज रही थीं।

लौटा ने फिर एक बार अपना पुराना काला शाल ओढ़ा और इन्द्रधनुषी पोशाक बनाने वापस आ गयी। फिर सारी रात और सारा दिन लगा कर उसने वह इन्द्रधनुषी पोशाक बनायी।

इस पोशाक को बनाते बनाते उसकी ऑखें थक चुकी थीं और मन बहुत भारी था मगर वह यह नहीं जान पायी कि उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा था। नाच शुरू होने से एक घंटा पहले उसकी पोशाक तैयार थी।

एक बार लौटा ने फिर से नाच की पोशाक पहनी, ऊपर से अपना वही पुराना काला शाल ओढ़ा और गाड़ी में सवार हो कर महल जा पहुॅची। फिर से वही चौकीदार उसको दरवाजे पर मिला जो उसे फिर से उसी कमरे में ले गया।

वहॉ जा कर वह धम्म से खुशी में धॅस गयी। एक बार फिर चौकीदार उसके सामने खड़ा था। उसने चौकीदार से पूछा — "कल रात नाच कैसा रहा?"

चौकीदार ने कहा — "राजा ने रुपहली काउन्टैस के साथ बहुत सारे नाच किये और अपनी ऑखें भी उस पर से नहीं हटायीं। मेरे ख्याल से लेडी ब्लाक के लिये अब राजा कुछ ज़्यादा उत्सुक नहीं है।"

लौटा ने कहा — "तुम कुछ नहीं कह सकते।"

पर क्योंकि वह इतनी थकी हुई थी कि उसने अपना शाल उतार कर उसको लेडी ब्लाक के लिये बनायी गयी पोशाक दिखाने की भी कोशिश नहीं की।

तब चौकीदार ने खुद ही यह काम किया और उसका शाल उतार कर खुशी के पीछे रख दिया।

जब उसने लौटा को उस इन्द्रधनुषी पोशाक में देखा तो वह खुशी से उसके पैरों पर झुक गया और बोला — "ओह माई लेडी, क्या आज तुम मेरे साथ नहीं नाचोगी?"

लौटा ने नहीं में अपना सिर हिला दिया क्योंकि आज वह बहुत थकी हुई थी। उसने मुस्कुराने की कोशिश भी की परन्तु मुस्कुराहट की बजाय बड़े बड़े ऑसू उसके नरम गालों पर बह निकले।

चौकीदार ने उससे कुछ नहीं पूछा बस उसको एक चुम्बन दिया कि तभी घंटी बज गयी और लौटा अन्दर चली गयी।

लेडी ब्लाक ने जब अपनी वह फ्राक देखी तो वह खुशी से उछल पड़ी। लौटा ने लौटते समय हाल में एक बार फिर तालियों की गड़गड़ाहट की गूँज सुनी। उसने फिर वही अपना पुराना शाल ओढ़ा और वापस आ गयी। वह सोच रही थी अब वह घर जा कर सोयेगी, खूब सोयेगी।

मगर दरवाजे पर ही बड़ी दर्जिन खड़ी थी। वह बोली — "लौटा जल्दी चलो, कल राजा की शादी है। दुलहिन के लिये सब

से सुन्दर पोशाक बनानी है जो कल सुबह तक तैयार हो जानी चाहिये। सोचो ज़रा कि वह पोशाक कैसी होनी चाहिये।"

लौटा ने सोचा कि वह दुलहिन की पोशाक बिल्कुल सफेद बनायेगी। जैसे ही वह कपड़ा काटने बैठी उसने पूछा — "यह पोशाक मैं किसके नाप की काटूँ?"

बड़ी दर्जिन ने कहा — "अपने ही नाप की काट लो क्योंकि तुम्हारा और उन तीनों लड़कियों का नाप तो एक ही है।"

लौटा ने फिर पूछा — "तुम क्या सोचती हो राजा किससे शादी करेगा?"

"कुछ पता नहीं। लोगों का कहना है कि उसे तीनों ही लड़कियॉ पसन्द हैं।"

"और राजा ने नाच के समय कौन सी पोशाक पहनी हुई थी?"

"उॅह, वह पोशाक तो राजा के लिये बड़ी शर्मनाक पोशाक थी। वह चौकीदार की पोशाक में था।"

इसके बाद लौटा ने कुछ नहीं पूछा और वह सफेद पोशाक बनाने में लग गयी। रात गुजरी सुबह हुई और शादी के समय से एक घंटा पहले दुलहिन की पोशाक तैयार थी।

बड़ी दर्जिन ने कहा — "जाओ, पोशाक पहनो और गाड़ी में बैठ कर जाओ क्योंकि दुलहिन यकीनन यह देखना चाहेगी कि पोशाक कैसे पहनी जाये।"

लौटा ने फिर पूछा — "दुलहिन कौन है?"

बड़ी दर्जिन बोली — "कोई नहीं जानता। राजा वहीं अपनी दुलहिन चुनेगा।"

लौटा ने वह पोशाक पहनी और गाड़ी की ओर गयी तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने उसी चौकीदार को वहॉ खड़ा देखा।

उसने उससे पूछा — "अरे क्या तुम राजा नहीं हो?"

"ऐसा तुमने कैसे सोच लिया?" कह कर उसने गाड़ी का दरवाजा खोला, लौटा को उसमें बिठाया और दरवाजा बन्द कर लिया। गाड़ी चल पड़ी। लौटा एक कोने में आराम से बैठ गयी और सो गयी और सपना देखने लगी जैसे वह खुद ही शादी के लिये जा रही हो।

जब उसकी ऑख खुली तो गाड़ी का दरवाजा खुल रहा था और बजाय महल के दरवाजे के वहॉ एक चर्च का दरवाजा था। चौकीदार कूदा और उसने लौटा का हाथ पकड़ कर उसे उतारा और उसकी बॉह में बॉह डाल कर चलने लगा। लौटा को लगा उसका सपना पूरा होने जा रहा था।

दो मिनट में ही उनकी शादी हो गयी और वह शादी की ऑगूठी पहने गाड़ी में वापस लौट आयी। इस बार वह चौकीदार उसके साथ बैठा और लौटा उसके कन्धे पर सिर रख कर फिर सो गयी।

जब राजा का शहर आया तभी उसकी ऑख खुली। वहॉ उनींदी सी वह चौकीदार की बॉह का सहारा लिये महल की सीढ़ियॉ चढ़ रही थी और सीढ़ियों के ऊपर राजा खुद उसका स्वागत करने के लिये खड़ा था।

क्योंकि चौकीदार तो असल में ही चौकीदार था। और क्योंकि राजा शादी नहीं करना चाहता था इसलिये उसने अपनी जगह अपना चौकीदार भेज दिया था।

चौकीदार को पहली ही नजर में लौटा से प्रेम हो गया था इस लिये उसके दिमाग में डचैस, काउन्टैस और लेडी ब्लाक किसी के साथ शादी करने का विचार भी नहीं आया।

और यही अच्छा भी हुआ क्योंकि अगर चौकीदार ने उन तीनों में से किसी से भी शादी कर ली होती तो रानी बहुत नाराज होती और साथ ही दुलहिन भी।

आखिरकार रानी को सच का पता चल गया तो उसने राजा के जन्म दिन पर उसको यह खत लिखा —

"प्रिय रिचर्ड,
यह तुम्हारे लिये कुछ भेंटें हैं। मैं तुमसे बहुत नाराज हूॅ और आगे से तुम्हारे शादी के मामलों में अब मैं कोई रुचि नहीं लूॅगी।
तुम्हारी प्रिय बुआ"

और बस यही राजा की शादी का अन्त था।

6 बेकर की बेटी[6]

एक बार की बात है कि इंगलैंड के एक छोटे से शहर में एक बेकर रहता था। उसकी डबल रोटियॉ और केक बहुत ही स्वादिष्ट हुआ करती थीं।

पर जैसे कि कोई सुन्दर आदमी कोई बुरा काम करे तो उसको लोग पसन्द नहीं करते उसी तरह से यह आदमी भी जो इतनी अच्छी बेकिंग करता था अपने बुरे तौर तरीकों के लिये नापसन्द किया जाता था।

यह बेकर बहुत ही लालची था। उसका ढंग और बरताव बहुत ही बुरे थे। उसको जब भी मौका लगता वह बहुत थोड़े से पैसों के लिये भी लोगों के साथ धोखा करने से बाज़ नहीं आता।

उस बेकर की एक बेटी थी जो और बहुत सारे सामान्य बच्चों जैसी थी। वह अपने पिता की नकल करती थी इसलिये वह भी बहुत बदनाम हो गयी थी। उसने कभी शादी नहीं की और वह सारा समय अपने पिता की बेकरी में ही सहायता करती रहती थी।

एक दिन वह बेकरी की दूकान में अकेली थी कि एक बहुत ही बूढ़ी स्त्री उसकी दूकान में आयी। वह बोली — "ओ छोटी लड़की, मैं बहुत बूढ़ी और भूखी हूॅ। मुझे थोड़ा सा आटा दो।"

[6] The Bajer's Daughter.

उस लड़की ने उसको वहॉ से टालना चाहा पर वह बुढ़िया वहॉ से टली ही नहीं। वह उससे थोड़ा सा आटा मॉगती ही रही और वहॉ से गयी नहीं।

लड़की ने हार कर उसकी तरफ आटे का एक छोटा सा टुकड़ा फेंक दिया जो एक डबल रोटी के आटे में से बच गया था और बोली — "अच्छा अब तुम जाओ और फिर वापस मत आना।"

बुढ़िया बोली — "धन्यवाद। लेकिन जाने से पहले मैं तुमसे यह प्रार्थना करूॅगी कि इसको कुछ मिनट के लिये ओवन में रख दो ताकि यह बेक हो जाये। मेरे पास अपना कोई ओवन नहीं है।"

भुनभुनाते हुए उसने उस बुढ़िया से वह आटा लिया और उसको ओवन में रख दिया। वह बुढ़िया वहीं बैठ गयी और उस आटे के बेक होने का इन्तजार करने लगी।

जब उसका बेक होने का समय हो गया तो लड़की ने ओवन खोला तो उसमें तो एक छोटी सी डबल रोटी की बजाय एक बहुत बड़ा सुन्दर और स्वादिष्ट केक था।

लड़की ने कहानी बनायी कि ओवन तो खाली था और उसने वह केक उसमें से निकाल कर आलमारी के पीछे रख दिया जहॉ उसे कोई न देख सके। वह फिर बोली — "मुझे तो तुम्हारा आटा यहॉ दिखायी नहीं दे रहा, लगता है कि वह आग में गिर पड़ा है।"

बुढ़िया बोली — "कोई बात नहीं, तुम मेरे लिये दूसरे आटे की डबल रोटी बना दो मैं उसके बेक होने तक फिर इन्तजार कर लूँगी।"

लड़की ने फिर एक आटे का टुकड़ा लिया और उसे ओवन में रख दिया। कुछ मिनट बाद उस लड़की ने ओवन खोल कर देखा तो उसमें तो एक बहुत ही बड़ी डबल रोटी थी। और वह तो इतनी बड़ी थी कि उसको तो राजा की खाने की मेज पर रखा जा सकता था।

उसने फिर कहानी बनायी कि ओवन में तो कुछ भी नहीं था। वह बोली — "लगता है कि तुम्हारी यह रोटी जल गयी और गायब हो गयी। क्योंकि वह तो यहाँ है ही नहीं।"

बुढ़िया के सामने ही उसने वह बड़ी डबल रोटी बाहर मेज पर निकाल कर रखी।

बुढ़िया ने कहा — "कोई बात नहीं बेटी, तुम मुझे एक और टुकड़ा दे दो पर तुम मुझे इस तरह से भूखा वापस नहीं लौटा सकतीं।"

अबकी बार उस लड़की ने आटे में से एक और छोटा सा टुकड़ा तोड़ा और उसको ओवन में रख दिया। बुढ़िया उस लड़की को बड़े ध्यान से देख रही थी।

इस बार उस लड़की ने ओवन में और बड़ी डबल रोटी देखी तो वह उस बुढ़िया से बोली — "तुमको यहाँ से जाना पड़ेगा। तुम्हारा आटा तो राख का ढेर हो गया।"

पर इस बार बुढ़िया बोली — "अब यह रोटी मेरी है जैसी भी है। इसे मुझे दे दो।"

बेकर की बेटी बोली — "यह नहीं हो सकता। तुम्हारा आटा तो बहुत ही छोटा सा था और यह रोटी तो बहुत बड़ी है।"

बुढ़िया बोली — "तुम और तुम्हारे पिता लोगों को बहुत दिनों से धोखा देते आ रहे हैं। तुम लोग अपनी जेबें भरने के लिये छोटी छोटी सी चीज़ों के लिये बहुत सारा पैसा लेते चले आ रहे हो। मैं एक परी हूँ और तुम्हारा इम्तिहान लेने आयी थी। तुम इस इम्तिहान में फेल हो गयीं।"

कह कर बुढ़िया ने हाथ हिलाया और वह लड़की एक उल्लू में बदल गयी। वह उल्लू उस दूकान में चारों तरफ उड़ने लगा। बुढ़िया ने दूकान का दरवाजा खोल दिया तो वह उल्लू बाहर उड़ कर शहर से दूर चला गया।

उल्लू सोच रहा था कि वह बुढ़िया कौन थी? ऐसा कौन है जो किसी से इस तरह से न्यायपूर्वक और मेहरबानी से बर्ताव करेगा? कौन हो सकता है वह?

7 पीटर और भाई रोबिन[7]

कुछ समय पुरानी बात है कि ब्रिटेन में तीन भले आदमी रहते थे जिनके नाम थे बैनैडिक्ट, बरनार्ड और पीटर। ये तीनों साधु थे और कई गॉव के अनपढ़ लोग इनके पास बैठ कर ईसा मसीह की कहानियॉ सुना करते थे।

इन तीनों के पत्थरों के बने अपने अलग अलग घर थे जिनमें खिड़कियॉ नहीं थीं, बस केवल एक दरवाजा था। उन मकानों में न तो कोई कालीन बिछा था न ही कोई चटाई। न ही वहॉ कोई खुशी थी और न ही कोई मेज।

ये साधु लोग या तो बड़े बड़े पत्थरों पर बैठते थे और या फिर बड़े बड़े लकड़ी के लट्ठों पर और लकड़ी के लट्ठों का ही तकिया लगा कर जमीन पर सो जाया करते थे।

वे बहुत गरीब थे लेकिन उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं थी क्योंकि उनके बहुत सारे दोस्त थे। जो लोग उनसे कहानियॉ सुनने आते थे वे उनको छोटी छोटी भेंटें दे जाते थे – कभी मक्खन, कभी पनीर के कुछ टुकड़े, या फिर डबल रोटी। कभी कभी कोई दूध भी दे जाता था।

[7] Peter And Brother Robin.

हर एक आदमी इन तीनों बूढ़े साधुओं को बहुत प्यार करता था। यहॉ तक कि चिड़िया और जानवर भी उनको बहुत प्यार करते थे।

जब बैनैडिक्ट जंगल में फल लेने जाता था तो रास्ते में उसको अवश्य ही कोई खरगोश मिल जाता जो उसके पैर चूमता और प्यार से दुम हिला कर चला जाता।

जब बरनार्ड मैदानों में से हो कर किसी रोगी को देखने जाता तो बीच में रुक रुक कर वह फूलों को सूँघता, मधुमक्खियों का संगीत सुनता और फिर दूर चलता चला जाता।

पीटर को पक्षी बहुत प्यार करते थे। जैसे ही वह अपने पथरीले घर से बाहर निकलता आस पास की सारी चिड़ियॉ उसके पास आ जातीं। कुछ उसके हाथ पर आ कर बैठ जातीं तो कुछ उसके कन्धों पर बैठ जातीं और कुछ उसकी गोद में आ कर दुबक जातीं।

पीटर को भी उन चिड़ियों से बहुत लगाव था पर उसे विशेष प्रेम एक रोबिन से था।

बरनार्ड और बैनैडिक्ट उसको रोबिन का नाम ले ले कर चिढ़ाया करते थे क्योंकि पीटर रात को रोबिन को "शुभ रात्रि रोबिन भाई" कह कर सोया करता था।

यह सुन कर रोबिन भी उसको पलट कर जवाब देता था और सुबह को वह पीटर को जगाने भी आया करता था।

इस पर बरनार्ड और बैनैडिक्ट अक्सर हॅसा करते और कहते — "पीटर, अगर रोबिन तुम्हें जगाने न आये तो तुम तो सुबह को उठ ही नहीं सकते।"

लेकिन एक दिन ऐसा भी आया जब उन दोनों ने रोबिन और पीटर पर हॅसना छोड़ दिया और उनको यह जान कर बहुत ही खुशी हुई कि रोबिन पीटर को सचमुच ही बहुत प्यार करता था। ऐसा कैसे हुआ, यह घटना कुछ इस तरह है...

एक बार तीनों साधुओं ने विचार किया कि ब्रिटेन से बाहर भी ईसाई धर्म फैलाया जाये क्योंकि उन्हें मालूम था कि बाहर के टापुओं पर जो लोग रहते थे उन्होंने ईसा मसीह का नाम भी नहीं सुना था।

सो वे तीनों बाहर जाने के लिये तैयार हुए। काफी समय तो उनको नाव बनाने और घर का सामान खरीदने में ही लग गया और फिर काफी समय दोस्तों से विदा लेने में भी लग गया।

बैनैडिक्ट ने उसी दिन से जंगल जाना छोड़ दिया क्योंकि वह अपने खरगोश से बिछड़ने की सोच भी नहीं सकता था। बरनार्ड भी दुखी था कि पता नहीं अब कब वह इन मधुमक्खियों को फिर से देखेगा।

लेकिन पीटर सबसे ज़्यादा दुखी था। उसने रोबिन से विदा लेने में इतनी देर लगा दी कि दूसरे लोग उस पर नाराज हो गये और कहने लगे — "तुम अगर रोबिन से दूर ही रहो तो अच्छा है क्योंकि

रोबिन के साथ तुम्हारा बहुत समय खराब जाता है। चलो, अब नाव पर चढ़ो, जाने का समय हो रहा है।"

रोबिन से विदा ले कर पीटर नाव पर चढ़ा, पतवार सँभाले और चल दिया। करीब पॉच दिन के बाद वह नाव एक पथरीले किनारे से लगी। वे सब नाव से उतरे, नाव अन्दर रखी और चारों तरफ उस टापू को देखना शुरू किया।

पहले तो उनको नयी जगह में सब कुछ अजीब सा लगा परन्तु कुछ देर घूमने के बाद उनको जंगल के पास एक सुन्दर सी जगह दिखायी दे गयी जहॉ कुछ पहाड़ियॉ थीं और गुफाऐं थीं। ये गुफाऐं उनके लिये तो घर के समान थीं।

तीनों साधु यह जगह देख कर बहुत खुश हुए। बैनैडिक्ट सबसे पहले जंगल की तरफ चला। वहॉ जल्दी ही तीन खरगोश फुदकते हुए आये और उन्होंने उसकी तरफ अपनी पूँछ हिलायी, अपने कान हिलाये जैसे कह रहे हों — "बैनैडिक्ट देखो, हम यहॉ भी हैं।" और बैनैडिक्ट को वहॉ का वातावरण अपना सा लगा।

केवल पीटर को घर की याद आती रही। सारी चिड़ियों ने उसका स्वागत किया पर उनमें उसका भाई रोबिन कहीं नहीं था। वह बहुत दुखी और शान्त रहने लगा तो एक दिन बैनैडिक्ट ने उसको डॉटा कि वह बच्चों की तरह बर्ताव न करे। वह तो बूढ़ा साधु है उसको साधु की तरह रहना चाहिये।

उसने पीटर से कहा — "देखो पीटर, रोबिन ने तुम्हारा बहुत समय बरबाद किया है। अब तुम उससे दूर हो यह अच्छा है क्योंकि अब तुम मन लगा कर अपना काम कर सकते हो। उठो और खुशी खुशी काम पर जाओ। आओ चलो, हम लोग पहले एक चर्च बनायें और लोगों को प्रार्थना करना सिखायें।"

पीटर हॅस दिया परन्तु रोज रात को सोते समय वह घर के दरवाजे पर "शुभ रात्रि" कहने के लिये भाई रोबिन का इन्तजार जरूर करता पर वह न आता।

धीरे धीरे उसने अपने काम में मन लगाना शुरू किया जिससे दूसरों ने समझा कि वह रोबिन को भूल गया। वे तीनों अब या तो काम की ही बातें करते या फिर चर्च की। रोबिन की तो अब उन्होंने बातें करना भी छोड़ दिया था।

कभी कभी वे खाने के बारे में भी बात करते क्योंकि इस टापू पर उन्हें केवल जंगली फल ही खाने को मिल रहे थे।

कभी कभी उनकी इच्छा होती कि उनको डबल रोटी मिल जाये या फिर कुछ पनीर मिल जाये पर क्योंकि उनकी वहॉ के रहने वालों से अभी ठीक से जान पहचान नहीं थी इसलिये वे उनको भेंट भी नहीं देते थे और अपने साथ वे अन्न लाये नहीं थे।

इस खाने की कमी की वजह से अन्त में पीटर जो सबसे बड़ा था बीमार हो गया। दूसरों ने उसकी बहुत सेवा की पर उसकी हालत दिन पर दिन खराब ही होती चली गयी।

रोज बरनार्ड और बैनैडिक्ट उसके पास बैठते, उसको जंगली रसीले फल खिलाते, मुलायम जड़ें पका कर खिलाते, परन्तु पीटर ने आशा छोड़ रखी थी।

वह कहता — "मुझे मरने में कोई दुख न हो अगर मुझे यह पता चल जाये कि तुमको रोटी मिल जायेगी।"

एक दिन वे पीटर को गुफा के बाहर ले गये और एक पेड़ की छॉह में लिटा दिया। मगर वह आधी ऑखें बन्द किये पड़ा रहा और केवल यही बुदबुदाता रहा — "हे परमेश्वर, हमें आज हमारी रोटी दे दो।"

अचानक जैसे उसने कुछ सुना और ऑखें खोल दीं और बोला — "रोबिन भाई।"।

पास बैठे लोगों ने आश्चर्य से चारों तरफ देखा तो उन्हें न तो कुछ दिखायी दिया और न कुछ सुनायी दिया।

पीटर ने फिर पुकारा "रोबिन भाई" और लोगों ने देखा कि रोबिन उसके पास ही उड़ रहा था। वह धीरे से पीटर के ऊपर बैठ गया और धीरे से ही उसने गेहूँ का एक दाना पीटर के खुले हाथ पर रख दिया। जब पीटर ने अपनी मुट्ठी बन्द कर ली तो वह उड़ कर दूर जा बैठा और गाना गाने लगा।

उसी समय से पीटर अच्छा होने लगा और फिर वे तीनों कभी भूखे नहीं रहे क्योंकि रोबिन के दिये दाने से उनके गेंहूँ के खेत फलने फूलने लगे थे।

8 पीटर के दादा जी[8]

ब्रिटेन की यह लोक कथा बहुत मजेदार और हॅसी की है। इसको पढ़ कर अगर तुम हॅसी से लोटपोट न हो जाओ तो कहना।

एक बार की बात है कि ब्रिटेन में एक आदमी रहता था जिसका नाम था पीटर। वह अपनी पत्नी और बूढ़े दादा जी के साथ एक छोटे से घर में रहता था।

उनके पास एक छोटा सा बागीचा था जिसमें वे फूल उगाया करते थे। पीटर उन फूलों को बाजार में बेचा करता था और उसी से अपने घर का खर्च चलाता था।

पर वह बागीचा बहुत छोटा था और पीटर को पेट भरने के लिये उसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती थी।

एक दिन पीटर अपने बागीचे में दोपहर तक काम करता रहा और दोपहर को जब वह घर में घुसा तो निढाल सा खुशी पर पड़ गया और बुड़बुड़ाने लगा —

"उॅह, सारा दिन काम, काम, काम। और मुझे उसके बदले में क्या मिलता है? केवल कुछ रुपये जो हफ्ते के खत्म होने तक भी नहीं चलते। मैं अब जा रहा हूॅ और अब मैं कभी बागीचे में काम नहीं करूॅगा।"

[8] The Grandfather of Peter.

उसकी पत्नी ने जब उसका यह बुड़बुड़ाना सुना तो कपड़े से ऑखें ढॉप कर रोने लगी और बोली — "पीटर, अगर तुम चले गये तो बगीचे की खुदायी कौन करेगा। उसकी खुदायी तो फिर मुझे ही करनी पड़ेगी न। और मैं तुम्हारे जितनी ताकतवर नहीं हूॅ। पीटर, मेहरबानी कर के तुम मत जाओ।"

लेकिन पीटर उठा और कमरा पार कर के दरवाजा खोल कर बाहर चला गया और बोला — "विदा, बस अब मैं जा रहा हूॅ।"

जब बूढ़े दादा जी ने देखा कि पीटर दरवाजे से बाहर जा रहा है तो उन्होंने अपना पाइप मुॅह से निकाला और कुछ कहने ही जा रहे थे कि "आक छीं"।

पीटर रुक गया। उसकी पत्नी को आश्चर्य हुआ। बूढ़े दादा जी ने फिर कुछ कहने के लिये फिर अपना मुॅह खोला कि फिर "आक छीं"। अब पीटर वापस अपने कमरे में आ गया।

पीटर की पत्नी ने अपने ऑसू पोंछ लिये। दादा जी ने एक बार और आक छीं की कि उनके घर की दीवार घड़ी का घंटा बोला "टन्न"।

दादा जी ने कहा — "तीन बार की छींक तो बड़ी अच्छी होती है और वह भी जब जबकि घड़ी भी साथ में एक बार टन्न बजाये। अच्छा हो पीटर अगर तुम अभी रुक जाओ। हो सकता है कि मेरी यह बात तुम्हारी किस्मत सॅवार दे।"

पीटर की पत्नी ने पीटर की बॉह पकड़ कर कहा — "पीटर, दादा जी ठीक कहते हैं। हो सकता है कि दादा जी के कहे अनुसार हमारा कुछ भला हो जाये।"

दादा जी ने फिर कहा — "पीटर, यही ठीक है। हालॉकि कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा पर फिर भी। अब तुम ऐसा करो कि दोबारा जा कर बागीचे की खुदायी करो, हो सकता है कि तुम्हें वहॉ कोई गड़ा खजाना हाथ लग जाये।"

पीटर ज़ोर से हॅसा पर सबके सामने झुक गया। उसने अपना इरादा बदल दिया था।

उसने अपना फावड़ा उठाया और बागीचे में खुदायी करने चल दिया। उसको वास्तव में तीन छींकों और घड़ी के एक घंटे में कोई विश्वास नहीं था पर जब दादा जी ऐसा कह रहे हैं तो शायद ऐसा हो जाये, यही सोच कर वह बागीचे में पहुॅच गया।

उसने दो मिनट भी फावड़ा नहीं चलाया था कि उसका फावड़ा टन्न से किसी चीज़ से टकराया। वह सख्त जरूर था पर पत्थर के समान नहीं।

पीटर खोदता रहा, खोदता रहा और कुछ देर बाद उसमें से कपड़े धोने का एक तसला निकला। पीटर ने सोचा — "चलो यही ठीक है। पत्नी से कह कर इसे साफ कराऊॅगा। हो सकता है यह किसी काम की चीज़ हो।"

सो वह वह तसला उठा कर घर ले गया और पत्नी से उसे साफ करने के लिये कहा। मगर वह इतना ज़्यादा गन्दा था कि बहुत देर तक ब्रश से रगड़ने के बाद भी साफ नहीं हुआ।

आखिरकार जब उसकी पत्नी उसे साफ करते करते बहुत थक गयी तो ब्रश को तसले में फेंकती हुई बोली — "मेरे तो हाथ दुख गये, मुझसे नहीं होता यह साफ।"

इतना कहते ही उसकी ऑखों ने कुछ अचम्भा देखा और वह चिल्लायी — "पीटर पीटर, देखो देखो, यहॉ आओ।"

"क्या हुआ? क्या बात है?"

पीटर बागीचे से भागा भागा आया और उसने भी वह सब देखा जो उसकी पत्नी ने देखा। उसने भी दॉतों तले उॅगली दबा ली और चिल्लाया — "दादा जी, ज़रा यहॉ तो आइये। देखिये तो ज़रा।"

"आया भाई आया।" कहते हुए दादा जी भी आये और बोले — "मैरी, इतने सारे ब्रश तुम्हारे पास कहॉ से आये?"

मैरी ने उत्साहपूर्वक जवाब दिया — "दादा जी, पीटर ने यह तसला बाहर बगीचे में पाया। मैं इसे ब्रश से साफ कर रही थी कि वह ब्रश इस तसले में गिर गया और अचानक ही यह तसला ब्रश से भर गया।"

दादा जी ने खुशी से कहा — " देखा मैंने कहा था न। तीन छींकें और घड़ी के घंटे की एक आवाज जरूर ही किस्मत चमकाती हैं। यह जादू का तसला है।"

मैरी तो खुशी से नाचने लगी और कहने लगी — "पीटर, अब तो तुम ब्रश बेचा करो फिर हम उस पैसे से एक बड़ा बागीचा खरीद लेंगे।"

पीटर ने सब ब्रशों को इकट्ठा किया और एक गठरी बना कर बॉध दी। लेकिन उसने उसमें से आधा तसला भी ब्रश न निकाले थे कि वह तसला फिर से ब्रशों से भर गया।

दादा जी ने कहा — "अब तुम्हारे गरीबी के दिन गये पीटर, ब्रश बेचो और खूब पैसा कमाओ। जाओ बेटे, गॉव गॉव जा कर ब्रश बेचो।"

और अब पीटर ब्रश बेचने लगा। जितने ब्रश वह तसले में से निकालता उतने ही ब्रश उसमें फिर आ जाते। इस तरह वह तसला हमेशा ब्रशों से भरा रहता। पीटर ने अब एक नया मकान खरीद लिया था, एक बड़ा बागीचा भी, अच्छे कपड़े, परन्तु फिर भी वह सन्तुष्ट नहीं था।

एक बार वह ब्रश बेच कर घर आया तो वह फिर खुशी पर निढाल सा पड़ गया और बोला — "क्या सारा दिन ब्रश बेचना। फिर मुझे इससे मिलता भी क्या है केवल कुछ रुपये जो सप्ताह के

अन्त तक खत्म हो जाते हैं। मैं जा रहा हूँ अब मैं ब्रश नहीं बेचूँगा।"

यह सुन कर मैरी ने फिर रोना शुरू कर दिया और दादा जी ने अपने मुँह से पाइप निकाला — आक छीं।

मैरी फिर आश्चर्यचकित रह गयी और दादा जी ने अपनी आँखें एक बार फिर बन्द कीं — आक छीं। मैरी ने अपने आँसू पोंछे और उनके घर की दीवार घड़ी का घंटा बोला "टन्न"। और फिर एक और आक छीं।

दादा जी को यह छींक इतनी ज़ोर से आयी कि उनके कोट का बटन खुल गया और उनकी जेब से चाँदी का एक सिक्का निकल कर तसले में जा गिरा।

दादा जी बोले — "मैंने क्या कहा था कि तीन छींकें और घड़ी के घंटे की एक आवाज अच्छी होती है।"

इतना कह कर दादा जी ने तसले की ओर इशारा किया। सबने देखा कि तसले में से ब्रश गायब हो गये थे और तसला चाँदी के सिक्कों से भर गया था। मैरी ने तो फिर खुशी से नाचना शुरू कर दिया परन्तु पीटर सोच में पड़ गया।

वह सोच रहा था — "अगर मैं इस तसले में से ये सिक्के निकालता रहूँ तो मैं खूब अमीर हो जाऊँगा, लेकिन सिक्के निकालने का काम अगर मैंने किया तो मैं तो थक जाऊँगा और जीवन को

सुख से नहीं बिता सकूँगा। अगर कोई और मेरे सिक्के निकाले और मैं उसे खर्च करूँ तभी मजा है।"

उसने कुछ देर सोचने के बाद दादा जी की ओर देखा और कहा — "दादा जी।"

"हॉ बेटा।"

"आपने उस सिक्के को तसले में फेंका।"

"हॉ बेटा।"

"तो अब आप ही उस तसले में से सिक्के निकालिये और अगर आप रुके तो आपको खाना नहीं मिलेगा।"

मैरी और दादा जी दोनों के ही मुँह से निकला — "पीटर, यह तुम क्या कह रहे हो?"

फिर दादा जी समझाने के ढंग से बोले — "देखो पीटर, मैं बूढ़ा आदमी ठहरा, मैं सारा दिन इस तसले में से सिक्के नहीं निकाल सकता। मैं इतनी ठंड में बाहर खड़े हो कर यह काम नहीं कर सकता।"

"अब यह काम तो आपको करना ही पड़ेगा दादा जी। चलिये, सिक्के निकालना शुरू कीजिये।"

न तो दादा जी और न ही मैरी पीटर को समझा सके कि दादा जी की उम्र अब यह काम करने की नहीं थी। पर क्या करते, पीटर

की समझ में तो कुछ और आ ही नहीं रहा था। बेचारे दादा जी खड़े खड़े उस तसले में से सिक्के निकालते रहे।

दिन पर दिन, हफ्ते पर हफ्ते बीतते गये और वह बेचारे एक कोने खड़े हुए तसले में से सिक्के निकालते रहे जो खाली होने से पहले ही भर जाता था।

दादा जी पीले पड़ गये थे। बहुत दुबले हो गये। उनकी बाँहें दर्द करने लगीं थीं। उनकी कमर झुकने लगी थी।

आखिरकार एक दिन जब बहुत ठंड थी तो हवा से दरवाजा खुल गया और वह हवा उनके गले को लगी तो फिर एक आक छीं।

पीटर डर गया, मैरी दुखी हो गयी — आक छीं। पीटर और डर गया, मैरी सिकुड़ गयी और दीवार घड़ी ने बजाया "टन्न।" दादा जी की आखिरी छींक इतनी अचानक और भयानक थी कि बेचारे दादा जी खुद ही तसले में गिर गये।

पल भर में वह तसला छींकते हुए दादा जी से भर गया। मैरी और पीटर दोनों के मुँह से चीख निकली — "अरे इनमें से हमारे दादा जी कौन से हैं?"

मैरी ने एक दादा जी को बाहर निकाला तो दूसरे दादा जी उस तसले में आ खड़े हुए।

अभी भी वहाँ बहुत सारे दादा जी छींक रहे हैं और मैरी और पीटर दोनों में से किसी की हिम्मत नहीं हो रही कि वह और दादा

जी उस तसले में से निकालें। क्योंकि जैसे ही वे एक दादा जी निकालेंगे दूसरे दादा जी उसमें आ खड़े होंगे।

वे बेचारे अभी तक उस तसले के पास खड़े हैं और यह सोच रहे हैं कि वे अब क्या करें। अगर तुम उनकी कुछ सहायता कर सकते हो तो उनकी सहायता करो न। लेकिन सँभाल कर। कहीं तुम खुद उस तसले में न गिर जाना।

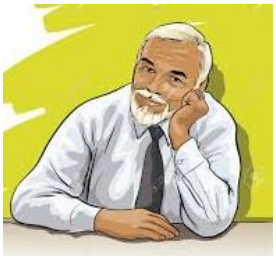

9 आलसी जैक[9]

ब्रिटेन की यह कहानी एक बहुत ही मजेदार और हॅसी की कहानी है। इस कहानी में देखो कि एक बेवकूफ लड़का किस तरह एक अमीर आदमी की बेटी को हॅसा कर उससे शादी कर के खुद एक अमीर आदमी बन जाता है।

एक गॉव में एक स्त्री अपने एकलौते बेटे जैक के साथ रहती थी। जैक बहुत ही आलसी था। न तो वह घर में ही मॉ की कोई सहायता करता था और न वह बाहर ही कोई काम करता था। उसकी इस आदत से उसकी मॉ बहुत दुखी थी।

एक दिन गुस्से मे आ कर उसने जैक से कहा — "अगर कल से तुमने कोई काम शुरू नहीं किया तो मैं तुम्हें घर से बाहर निकाल दूॅगी।"

अब जैक तो यह सुन कर घबरा गया सो अगले दिन ही वह कुछ काम ढूॅढने चल दिया। काम ढूॅढते ढूॅढते वह एक किसान के पास पहुॅचा और उसके पास उसने एक पैंस के लिये पूरे दिन काम करने का निश्चय किया।

शाम को बड़ी खुशी के साथ जैक ने वह पैंस का सिक्का किसान से लिया और घर चला।

[9] Lazy Jack.

आज वह बहुत खुश था। आज उसने पहली बार पैसा अपनी मेहनत से कमाया था। पहले उसने पैसा कभी रखा नहीं था सो उस को पैसा रखना आता भी नहीं था इसलिये वह उस पैनी को उछालता हुआ चला आ रहा था।

चलते चलते वह एक पुल पर से गुजरा जो एक नदी के ऊपर बना हुआ था। पैनी उछल कर नदी में जा गिरी और नदी में खो गयी। वह दुखी दुखी अपने घर आया।

जब उसने अपनी मॉ को यह बताया तो वह बोली — "तुमको वह पेनी जेब में रख कर लानी चाहिये थी।"

जैक कुछ दुखी आवाज में बोला — "अच्छा, अबकी बार मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन वह एक ग्वाले के पास काम करने के लिये गया। शाम को ग्वाले ने जैक को उसके काम के बदले में एक जग भर कर दूध दिया। उसने अपनी मॉ की सलाह के अनुसार उसको अपनी जैकेट की बड़ी जेब में भर लिया।

जाहिर है कि घर पहुँचने से पहले पहले ही वह दूध बिखर चुका था। घर पहुँचने पर जब उसकी मॉ ने पूछा कि "आज तुमको क्या मिला?"

तो उसने उसको बताया कि आज उसको दूध मिला। मॉ ने पूछा कि "दूध कहॉ है?"

तो उसने उसको बताया कि वह उसके कहे अनुसार अपनी जेब में रख कर लाया था पर अब वह पता नहीं कहॉ है।

उसकी मॉ ने कहा — "बहुत ही बेवकूफ हो तुम, तुमको वह दूध सॅभाल कर सिर पर रख कर लाना चाहिये था।"

जैक बोला "अच्छा, अगली बार से मैं ऐसा ही करूॅगा।

अगले दिन वह फिर किसी खेत पर काम करने गया। वहॉ सारा दिन काम करने के बाद मजदूरी के रूप में उसे क्रीम चीज़ मिली। तो अपनी मॉ के कहे अनुसार उसे अपने सिर पर रख लिया।

लेकिन यह क्या? उस दिन कड़ी धूप होने की वजह से घर आते आते वह सारी क्रीम चीज़ पिघल गयी और उसका चेहरा, बाल और कपड़े सभी खराब हो गये।

उसकी मॉ ने गुस्से में कहा — "जैक, तुम्हें अक्ल कब आयेगी। उसको तुम्हें हाथों में सॅभाल कर लाना था।"

जैक ने फिर वायदा किया कि अगले दिन से वह वैसा ही करेगा।

अगले दिन वह एक डबल रोटी बनाने वाले के पास गया। शाम को काम के बदले में उसे एक बिल्ली मिली। वह उसे सॅभाल कर हाथों में ला रहा था कि रास्ते ही में उसने कुलमुलाना शुरू कर

दिया और वह इतना ज़्यादा कुलमुलाई कि उसके हाथों से छूट कर भाग गयी।

खाली हाथ जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ फिर बहुत नाराज हुई और बोली — "तुम कैसे आदमी हो, वह बिल्ली थी तुमको उसे उसके गले में रस्सी बाँध कर लाना था।"

जैक फिर बोला — "माँ, कल से मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन वह काम करने के लिये एक कसाई की दूकान पर गया। उस दिन शनिवार था इसलिये रविवार को खाने के लिये उसने उसको बकरे का एक बहुत ही बढ़िया कन्धा दिया।

जैक उसको देख कर बहुत ही खुश हुआ कि आज उसको बहुत बढ़िया खाना मिलेगा।

उसने अपनी माँ के कहे अनुसार बकरे के उस कन्धे में एक रस्सी बाँधी और उसे खींचता हुआ घर की तरफ चल दिया।

जाहिर है जब तक वह उसे ले कर घर पहुँचा वह टुकड़ा बिल्कुल ही बेकार हो चुका था।

अबकी बार उसकी माँ ने उसे बहुत डाँटा और कहा — "बेवकूफ लड़के, तुम बहुत ही बेकार आदमी हो। रोज कमाते हो और रोज ही किसी न किसी तरीके से उसे बेकार कर देते हो।

अब केवल बन्द गोभी ही रखी है मेरे पास कल के लिये, वही खाना तुम कल। तुमको यह गोश्त अपने कन्धे पर रख कर लाना था।"

जैक बहुत ही शरमिन्दा हो कर बोला — "अच्छा मॉ, अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा।"

सोमवार को जैक फिर ग्वाले के पास काम के लिये गया। अब की बार उसे अपने काम के बदले में एक गधा मिला।

काफी परेशानी के बाद वह उस गधे को अपने कन्धे पर रखने में कामयाब हो सका। वह उसे ले कर धीरे धीरे सॅभाल कर चलने लगा।

उसके घर के रास्ते में एक बहुत ही अमीर आदमी का घर पड़ता था। उसके एक इकलौती बेटी थी। अमीर की बेटी बहुत सुन्दर थी पर वह गूँगी थी।

अपने जीवन में वह कभी नहीं हॅसी थी। डाक्टरों का कहना था कि यदि दूसरा कोई उसे हॅसा सके तो शायद वह बोलने लायक हो सके।

उस अमीर के घर में उसको हॅसाने के लिये रोज ही कोई न कोई नाच, हॅसी के नाटक, मजाकिया कहानियॉ, मजाकिया गाने आदि होते रहते थे परन्तु उस लड़की के चेहरे पर अभी तक एक हल्की सी मुस्कुराहट भी नहीं आयी थी।

आखिर उस अमीर ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई उसकी बेटी को हॅसा देगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसी को अपनी सारी धन दौलत भी दे देगा।

और दिनों की तरह से उस शाम को भी वह लड़की खिड़की में उदास बैठी बाहर की ओर देख रही थी कि उसको एक अजीब चीज़ देखने को मिली।

एक जवान लड़का एक ज़िन्दा गधे को अपने कन्धों पर रख कर ले जा रहा था। यह देखते ही वह लड़की ज़ोर से हॅस पड़ी और तब तक हॅसती रही जब तक कि उसकी ऑखों से ऑसू नहीं निकल पड़े।

जब अमीर ने अपनी बेटी की हॅसी की आवाज सुनी तो वह तुरन्त भागा भागा आया और जैक को अन्दर बुलाया।

वायदे के मुताबिक उसने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी और अपनी सारी धन सम्पत्ति उसको दे दी। जैक अपनी ससुराल चला गया और अब उसे काम करने की कोई जरूरत नहीं थी।

वहॉ जा कर उसने अपनी मॉ को भी बुला लिया और सब आराम से रहने लगे।

10 जैक और उसका सोने का सुँघनी का बक्सा[10]

एक बार की बात है, बड़ा अच्छा समय था वह, हालाँकि वह न तो तुम्हारा समय था न मेरा समय था और न किसी और का समय था बस एक समय था कि कहीं एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया रहते थे। उनके एक बेटा था।

वे एक बहुत बड़े जंगल में रहते थे। उनके बेटे ने अपने माता पिता के अलावा अपनी ज़िन्दगी में कोई और आदमी नहीं देखा था। पर उसे मालूम था कि उसके माता पिता और उसके खुद के अलावा भी दुनियाँ में और बहुत सारे लोग रहते थे। क्योंकि उसके पास बहुत सारी किताबें थीं जिनमें वह उनके बारे में पढ़ता रहता था।

एक दिन जब उसका पिता लकड़ी काट रहा था तो उसने अपनी माँ से कहा कि वह कहीं दूसरी जगह जा कर अपनी कमाई खुद करना चाहता है। इसके अलावा वह उन दोनों के अलावा दुनियाँ के दूसरे लोगों से भी मिलना चाहता है।

उसने आगे कहा — "यहाँ तो मुझे इन पेड़ों के अलावा और कुछ दिखायी नहीं देता। मुझे लगता है कि अगर मैंने कुछ और नहीं देखा तो मैं पागल हो जाऊँगा।"

[10] Jack and His Golden Snuff-box.

जब वह यह सब बातें अपनी मॉ से कर रहा था उस समय उसका पिता घर से बाहर था।

बुढ़िया ने अपने बच्चे से उसके वहॉ से जाने से पहले कहा — "मेरे बच्चे अगर तुम जाना ही चाहते हो तो यह तुम्हारे लिये अच्छा ही है। भगवान हमेशा तुम्हारे साथ रहे।" जब उसने यह सब उससे कहा तो वह तो उसके बारे में अच्छा ही अच्छा सोच रही थी।

"पर हॉ एक मिनट रुको। तुम रास्ते के लिये कौन सा केक ले जाना पसन्द करोगे – एक छोटा केक मेरे आशीर्वाद के साथ या एक बड़ा केक मेरी बद्दुआ के साथ।"

"ओह मेरी प्यारी मॉ। मेरे लिये एक बड़ा केक बना देना क्योंकि क्या पता रास्ते में मुझे बहुत भूख लगे।"

सो मॉ ने एक बड़ा केक बना कर उसे दे दिया। फिर वह अपने घर के ऊपर गयी और जहॉ तक वह उसको देख सकी वहॉ तक उसको बद्दुआ ही देती रही।

रास्ते में उसको उसका पिता मिल गया तो उसने पूछा — "अरे तुम कहॉ जा रहे हो मेरे बेटे?"

जब लड़के ने अपने पिता को भी वही बात बतायी जो उसने अपनी मॉ से कही थी तो उसके पिता ने कहा — "मुझे तुम्हें जाते हुए देख कर बहुत दुख हो रहा है पर जब तुमने जाने की ठान ही ली है तो तुम्हारे लिये यही अच्छा है कि तुम चले जाओ।"

लड़का अभी ज़्यादा दूर नहीं गया था कि उसके पिता ने उसको आवाज लगायी। उसने अपनी जेब से सोने का एक सुँघनी का बक्सा निकाला और उसे देते हुए कहा — "लो यह बक्सा लो और इसे अपनी जेब में रख लो। तुम इसको तब तक किसी हालत में नहीं खोलना जब तक तुम मरने की हालत तक न पहुँच जाओ।"

सुँघनी का बक्सा उसने अपने पिता से ले कर अपनी जेब में रखा और वहाँ से चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा जब तक कि वह थक नहीं गया और भूखा नहीं हो गया। उसने अपनी सारी केक तो सड़क पर ही खा कर खत्म कर ली थी।

अब तो रात होने वाली थी। उसको आगे का रास्ता भी ठीक से दिखायी नहीं दे रहा था। पर दूर उसने एक रोशनी चमकती देखी।

वह वहाँ तक पहुँच गया। उसको उस मकान का पिछला दरवाजा मिल गया सो उसने वह दरवाजा खटखटाया। एक नौकरानी दरवाजा खोलने आयी और उसने उससे पूछा — "क्या बात है। क्या चाहिये तुम्हें।"

लड़के ने कहा — "चलते चलते मुझे रात हो गयी है। रात को सोने की जगह चाहिये।"

नौकरानी उसको अन्दर आग के पास ले गयी। वहाँ ले जा कर उसने लड़के को भर पेट खाना दिया – मॉस रोटी मक्खन बीयर।

जब वह खाना खा रहा था तो उसने देखा कि एक नौजवान लड़की वहॉ उसको देखने के लिये आयी। उन दोनों को देखते ही एक दूसरे से प्यार हो गया। यह बताने के लिये वह लड़की अपने पिता के पास भागी गयी।

उसने उससे कहा — "पिता जी। एक सुन्दर नौजवान लड़का पीछे वाले रसोईघर में बैठा है।" तुरन्त ही उसका पिता वहॉ आया। उससे कुछ सवाल किये और उससे पूछा कि वह क्या कर सकता था। जैक बोला "कुछ भी।"

वह आदमी उससे बोला — "अगर तुम कुछ भी कर सकते हो तो कल सुबह तक मुझे अपने घर के सामने एक झील चाहिये और उस झील में तैरते हुए कुछ लड़ाई वाले बड़े वाले पानी के जहाज़ चाहिये जो मुझे सुबह सुबह शाही सलामी दें।

और उसमें जो आखिरी तोप छूटे उससे मेरी बेटी के पलंग की एक टॉग टूट जानी चाहिये। अगर तुमने यह नहीं किया तो तुमको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

जैक बोला — "ठीक है।" और सोने चला गया। बिना कुछ बोले मन ही मन में अपनी प्रार्थना की और सो गया। वह सुबह आठ बजे तक सोता रहा। अब तो उसके पास सोचने का भी समय नहीं था। अब वह क्या करे।

कि तभी उसे अपने पिता के दिये हुए सोने के सुँघनी के बक्से की याद आयी। उसने सोचा "मैं तो मौत के कभी इतनी पास नहीं था जितना कि मैं अब हूँ।"

सो उसने अपनी जेब में हाथ डाला सोने का सुँघनी का बक्सा निकाला और उसे खोला तो उसमें से तीन लाल छोटे आदमी निकल पड़े और जैक से पूछा — "हमारे लिये क्या हुक्म है।"

जैक बोला — "मुझे इस घर के सामने एक बहुत बड़ी झील चाहिये उसमें कुछ बड़े वाले लड़ाई के जहाज़ चाहिये। और उसमें से एक सबसे बड़ा जहाज़ शाही सलामी दे और उसके आखिरी तोप की आवाज से लड़की के पलंग की एक टॉग टूट जानी चाहिये।"

तीनों ने कहा "ठीक है। तुम सोओ।"

जैक के मुँह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि उन्हें क्या करना है कि उसने सबसे बड़े लड़ाई के जहाज़ से उसने धड़ाम धड़ाम की आवाजें सुनी।

जैक तो अपने बिस्तर से कूद कर उछल गया। वह बाहर देखने के लिये खिड़की पर पहुँचा तो सामने का दृश्य देख कर हैरान रह गया। ऐसा दृश्य तो उसने अपने माता पिता के साथ रहते हुए पहले कभी नहीं देखा था।

जब तक जैक कपड़े पहन कर तैयार हुआ और अपनी प्रार्थना की और मुस्कुराता हुआ नीचे आया क्योंकि उसको अपने ऊपर

बहुत गर्व हो रहा था क्योंकि जो उसने कहा था वह सब इतनी अच्छी तरह से किया गया था।

लड़की का पिता वहॉ आया और उसने उससे कहा — "मुझे यह देख कर बहुत अच्छा लगा कि तुम यह सब कर सके और मैं अब यह कह सकता हूँ कि तुम बहुत होशियार हो। आओ चलो कुछ नाश्ता कर लो। फिर इसके बाद दो काम तुम्हें और करने हैं। तब तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

जैक उसके साथ नाश्ता करने चला गया। वहॉ उसने नाश्ता किया एक पल लड़की को देखा लड़की ने भी उसे देखा।

दूसरा काम उस आदमी ने जैक से करने के लिये कहा कि वह अगले दिन सुबह के आठ बजे तक उसके घर के आसपास के चारों तरफ मीलों तक बड़े बड़े पेड़ों को गिरवा दे। यह काम भी हो गया। इस काम से भी वह आदमी बहुत खुश था।

आदमी आगे बोला — "अब तीसरा काम यह है कि तुम मेरे लिये एक बहुत बड़ा महल बनवाओ जो बारह सोने के खम्भों पर खड़ा हो और उसमें कई फौजें ड्रिल कर रही हों। सुबह आठ बजे उनका औफीसर कहे "शोल्डर अप।"

जैक ने कहा — "ठीक है।"

जब तीसरी और आखिरी सुबह हुई तो आदमी का बताया हुआ तीसरा काम भी खत्म हो गया था। उसके बाद उस आदमी की बेटी से उसकी शादी हो गयी।

पर यही सब कुछ नहीं था इससे बुरा तो अब आने वाला था।

लड़की के पिता ने शिकार की एक पार्टी बनायी और देश के सारे लोगों को शिकार के लिये बुलाया। साथ में अपना महल भी। उनके साथ जाने के लिये इस समय तक उसके पास एक नया घोड़ा भी आ गया था और एक लाल रंग की पोशाक भी।

उस दिन उसके नौकर ने शिकार पर जाने के लिये उसको कपड़े पहनाने के बाद उसके कोट की एक जेब में हाथ डाला तो उस जेब में उसका सुँघनी का बक्सा रखा था। उस आदमी ने वह बक्सा निकाल लिया। इस तरह से जैक उसको पीछे छोड़ गया।

अब उस आदमी ने उस बक्से को खोला तो तीन लाल रंग के छोटे आदमी उसमें से निकल आये और बोले — "हमारे लिये क्या हुक्म है।"

नौकर ने उनसे कहा — "मैं यह चाहता हूँ कि यह महल यहाँ से हट कर दूर समुद्र के उस पार चला जाये।" तीनों आदमियों ने कहा "ठीक है। क्या तुम भी इसके साथ ही जाना चाहते हो।"

"हाँ।"

"तो उठो।" और वे सब उस महल को ले कर समुद्र के उस पार बहुत दूर चले गये।

जब शिकारी पार्टी शिकार से वापस आयी तो उनको बारह सोने के खम्भों पर खड़ा महल कहीं दिखायी नहीं दिया। वह तो गायब

हो चुका था। जो लोग उसको देखने के लिये आये थे क्योंकि वे भी उसको नहीं देख पाये थे सो वे सब भी बहुत निराश हुए।

अब उस बेवकूफ जैक को धमकी दी गयी कि लड़की के पिता को इस परेशानी में डालने के लिये उसकी सुन्दर पत्नी को उससे वापस ले लिया जायेगा।

लेकिन फिर पिता ने जैक से एक समझौता किया। उसने जैक को उसको ढूँढने के लिये बारह महीने और एक दिन दिया कि वह उसको उतने समय में ढूँढ निकाले... । जैक अपने घोड़े पर सवार हुआ कुछ पैसे लिये और महल ढूँढने चल दिया।

अब बेचारा जैक महल ढूँढने जा रहा है। वह पहाड़ियों पर चढ़ा घाटियों में उतरा जंगलों से गुजरा जानवरों के चरागाहों से गुजरा। वह बढ़ता चला गया बढ़ता चला गया कि आखीर में वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ दुनियाँ भर के चूहों का छोटा सा चूहा राजा रहता था।

महल के दरवाजे पर एक बहुत छोटा सा चूहा सन्तरी की जगह खड़ा था। जब जैक अन्दर जाने लगा तो उसने उसे रोका। जैक ने पूछा — "राजा साहब कहाँ रहते हैं। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।"

इस चूहे ने उसको एक दूसरे चूहे के साथ अन्दर भेज दिया। राजा ने जब जैक को देखा तो उसने उसे अन्दर बुलाया और उससे पूछा कि इस रास्ते से वह कहाँ जा रहा था।

जैक ने उसे सब सच सच बता दिया। कि उसका एक बहुत बड़ा महल खो गया है और वह उसी को ढूँढने के लिये निकला है। इस काम के लिये उसके पास बारह महीने और एक दिन है। जैक ने फिर पूछा "क्या आपको पता है कि वह कहाँ है।"

राजा चूहा बोला — "नहीं मुझे तो नहीं पता है पर मैं दुनियाँ भर के चूहों का राजा हूँ। मैं कल सुबह सब चूहों को बुलाऊँगा हो सकता है कि वे इस बारे में कुछ जानते हों।"

उसके बाद जैक ने वहाँ बहुत अच्छा खाना खाया और आराम से सो गया। सुबह उठ कर वह और राजा दोनों मैदान में गये। वहाँ पहुँच कर राजा चूहे ने अपने सारे चूहों को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या वे किसी ऐसे महल को जानते थे जो सोने के बारह खम्भों पर खड़ा हो।" छोटे छोटे चूहों ने मना कर दिया कि उन्होंने कोई ऐसा महल नहीं देखा।

तब राजा चूहे ने कहा कि उसके दो भाई और हैं। उनमें से एक मेंढकों का राजा है और दूसरा भाई जो सबसे बड़ा है वह चिड़ियों का राजा है। अगर तुम वहाँ जाओ तो वे शायद तुम्हें उसके बारे में कुछ बता सके।"

राजा चूहे ने आगे कहा — "जब तक तुम वापस आते हो अपना घोड़ा यहीं छोड़ जाओ और हमारा बहुत बढ़िया वाला घोड़ा ले जाओ। और यह केक लो मेरे भाई को दे देना। इसको देख कर वह जान जायेगा कि इसे तुम्हें किसने दिया है। उससे यह कहने का

ध्यान रखना कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ उसे याद करता हूँ और उससे मिलना चाहता हूँ।"

जैक ने राजा चूहे से हाथ मिलाया केक ली तेज़ घोड़े पर बैठा और अपने रास्ते चल दिया। जब जैक महल के फाटक से गुजर रहा था तो सन्तरी चूहे ने पूछा कि क्या वह भी उसके साथ चले।

जैक ने कहा — "नहीं। फिर मैं राजा के साथ परेशानी में पड़ जाऊँगा।"

छोटा चूहा बोला — "तुम्हारे लिये यह ज़्यादा अच्छा रहेगा अगर तुम मुझे अपने साथ ले चलो तो। हो सकता है कि मैं तुम्हारे लिये तुम्हारे बिना जाने तुम्हारा ही कुछ भला कर दूँ।"

"ठीक है आ जाओ।"

चूहा कूद कर घोड़े की टाँगों पर चढ़ कर जैक तक पहुँच गया और जैक ने उसे अपनी जेब में रख लिया। अब जैक सन्तरी चूहे को अपने जेब में ले कर चल दिया। उसको तो बहुत दूर जाना था और आज तो उसका केवल पहला ही दिन था।

आखिर उसको राजा चूहे के राजा मेंढक भाई की जगह मिल ही गयी। वहाँ उसको एक मेंढक सन्तरी की जगह खड़ा मिल गया। उसके कन्धे पर बन्दूक रखी हुई थी।

उसने भी जैक को अन्दर जाने से रोका पर जैक ने जब कहा कि उसको राजा से मिलना है तो उसने उसको जाने दिया।

जैक अन्दर के दरवाजे तक गया राजा मेंढक उससे मिलने के लिये बाहर तक आया और उससे पूछा कि उसे उससे क्या काम है। जैक ने उसको अपनी सारी कहानी शुरू से ले कर आखीर तक बता दी।

राजा मेंढक ने उसको अन्दर बुला लिया। उस रात उसने जैक के लिये एक पार्टी का इन्तजाम किया।

अगले दिन सुबह उसने एक अजीब सी आवाज निकाली और दुनियॉ भर के सारे मेंढकों को वहॉ इकट्ठा कर लिया। उसने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कोई ऐसा महल देखा है जो सोने के बारह खम्भों पर खड़ा हो।

उन्होंने अजीब सी आवाज में टर्र टर्र बोल दिया – नहीं।

वहॉ से जैक को दूसरा घोड़ा मिल गया और एक और केक मिल गयी तीसरे भाई के लिये जो सब चिड़ियों का राजा था। जब जैक उस महल के फाटक से बाहर जा रहा था तो सन्तरी मेंढक ने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ चल सकता है।

जैक ने पहले तो उसे मना कर दिया पर फिर उसे भी साथ में ले लिया। उसको उसने दूसरी जेब में रख लिया और अपनी लम्बी यात्रा पर फिर से चल दिया। जितनी दूर वह पहले दिन चला था इस बार वह उससे तीन गुना दूर चला।

खैर उसको वह जगह मिल गयी जहॉ चिड़ियों का राजा रहता था। वहॉ सन्तरी की जगह एक बहुत सुन्दर चिड़िया बैठी थी।

उसने जैक को अन्दर जाने से रोकने की कोई कोशिश नहीं की उसने उसको अन्दर जाने दिया।

अन्दर जा कर उसने चिड़ियों के राजा से बात की और उसे अपने महल खोने की पूरी कहानी सुना दी। राजा चिड़े ने उसे खाना खिलाया और सोने भेज दिया। अगले दिन उसने एक आवाज निकाल कर सब चिड़ियों को बुलाया।

उसने उनसे पूछा कि क्या उनमें से किसी ने कोई ऐसा महल देखा है जो सोने के बारह खम्भों पर खड़ा हो। सब चिड़ियों ने मना कर दिया कि उन्होंने ऐसा कोई महल नहीं देखा।

फिर राजा ने चारों तरफ देखा और पूछा — "और वह बड़ी चिड़िया कहाँ है?"

उस बड़ी चिड़िया गरुड़ के लिये उन लोगों को काफी इन्तजार करना पड़ा।

राजा ने दो छोटी चिड़ियों को उसके पास भेज कर उससे जल्दी आने के लिये कहा। और जब वह आया तो उसको बहुत पसीना आ रहा था।

राजा चिड़े ने उससे भी वही सवाल पूछा कि क्या उसने कोई ऐसा महल देखा है जो बारह सोने के खम्भों पर खड़ा हो। गरुड़ बोला — "हाँ सरकार। मैं अभी वहीं से आ रहा हूँ।"

राजा चिड़ा बोला — "वह महल इस भले आदमी का है। तुम इसको ले कर तुरन्त वहॉ वापस चले जाओ। पर ठहरो पहले कुछ खाते जाओ।"

उन्होंने एक चोर को मारा और उसका सबसे अच्छा हिस्सा गरुड़ के खाने के लिये भेज दिया जो वह रास्ते में खाता। उसको जैक को अपनी पीठ पर बिठा कर ले जाना था।

जब उन्हें वह महल दिखायी दिया तो अब उन्हें यह पता नहीं था कि वह सोने के बक्से का क्या करें। उसे कैसे हासिल करें। चूहा बोला — "आप लोग मुझे नीचे उतार दें तो मैं उस बक्से को आपके पास ले आऊॅगा।"

सो उन्होंने चूहे को नीचे उतार दिया। चूहा महल में घुस गया और वह बक्सा अपने कब्जे में कर लिया। किसी ने उसे देख लिया था तो एक बार तो वह गिर ही गया और जब वह सीढ़ियों से नीचे आ रहा था तब तो बस वह पकड़े जाने ही वाला था।

खैर वह किसी तरह से अपने काम पर हॅसता हुआ बक्सा ले कर आ गया। जैक ने पूछा — "क्या तुम्हें वह मिल गया।"

"हॉ मिल गया। यह रहा।"

और वे सब महल को वहीं छोड़ कर वापस आ गये। जब वे चारों वापस आ रहे थे और हरा समुद्र पार कर रहे थे उनमें झगड़ा हो गया कि उस बक्से को कौन लाया और इस झगड़े में वह बक्सा

समुद्र में गिर पड़ा। ऐसा जब हुआ जब सब उस बक्से को एक दूसरे के हाथों से छीन रहे थे।

मेंढक बोला — "मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है सो आप लोग मुझे पानी में जाने दें।"

और उन्होंने उसको पानी में जाने दिया। वह पानी में तीन दिन तीन रात रहा फिर वह बाहर आया उसकी छोटी सी नाक और मुँह बाहर दिखायी दिया।

ऊपर से तीनों ने पूछा — "क्या तुमको बक्सा मिला।"

उसने कहा "नहीं।"

"तो फिर तुम वहाँ क्या कर रहे हो।"

वह बोला — "कुछ नहीं। मैं तो केवल अपनी साँस लेने के लिये बाहर निकला था। मैं अब फिर जा रहा हूँ।" कह कर वह छोटा सा मेंढक फिर से पानी में चला गया। इस बार वह वहाँ एक दिन और एक रात रहा और उसे निकाल लाया।

इस तरह से चार दिन और चार रात वहाँ रह कर वे चिड़ियों के के राजा के घर वापस आ गये। चिड़ियों के राजा को उन सबको देख कर बहुत खुशी हुई। उसने उनका दिल खोल कर स्वागत किया और उनसे बहुत देर तक बातें कीं।

जैक ने बक्सा खोला और उन छोटे आदमियों से वापस जा कर उस महल को वहाँ लाने के लिये कहा। और उनसे कहा कि वे इस काम को जितनी जल्दी हो सकें कर दें।

तीनों छोटे लोग वहॉ से चले गये पर जब वे महल के पास आये तो उसके अन्दर जाने से डरने लगे क्योंकि वह आदमी उसकी पत्नी और नौकर चाकर सब नाच देखने गये हुए थे। कोई भी आदमी वहॉ नहीं था सिवाय एक रसोइये और उसकी नौकरानी के।

तीनों छोटे आदमियों ने उनसे पूछा कि वे कहॉ जाना पसन्द करेंगे – यही रहना पसन्द करेंगे या उनके साथ जाना पसन्द करेंगे। उन्होंने कहा कि वे उनके साथ जाना ज़्यादा पसन्द करेंगे। तो उन्होंने कहा कि ठीक है वे जल्दी से ऊपर भाग जायें।

जैसे ही वे ऊपर पहुॅचे तो उनको वह आदमी उसकी पत्नी और नौकर चाकर आते दिखायी दिये पर तब तक देर हो चुकी थी। महल तो अपनी पूरी रफ्तार से उड़ कर चल दिया था। खिड़कियों से स्त्रियॉ हॅस रही थीं। हालॉकि उन्होंने उनको रोकने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार।

वे नौ दिन की यात्रा पर थे। इस यात्रा में उन्होंने रविवार को पवित्र दिन रखने की पूरी पूरी कोशिश की। उन तीनों छोटे आदमियों में से एक आदमी पादरी बना दूसरा क्लर्क बना और तीसरे ने औरगैन सॅभाला। स्त्रियॉ गाने वाली बनीं। क्योंकि उस महल में एक सुन्दर सा चर्च भी था।

पर औरगैन में दो सुर गड़बड़ हो रहे थे और वे साफ पता चल रहे थे। सो एक छोटा आदमी दौड़ कर औरगेन पर गया यह देखने के लिये कि यह गड़बड़ कहॉ हो रही थी। उसने पाया कि दो स्त्रियॉ

उस छोटे आदमी पर हॅस रही थीं क्योंकि वह बास पाइप पर अपनी टॉगें फैलाये था और अपनी दोनों बॉहें भी।

उसने छोटी सी लाल सोने वाली टोपी भी पहन रखी थी जिसको पहनना वह कभी भूलता नहीं था और जो उन्होंने पहले कभी देखी नहीं थी। इसी वजह से वह महल एक बार तो समुद्र के बीच में डूबने के बहुत करीब आ गया था।

हॅसी खुशी वे जैक और चिड़ियों के राजा के पास आ गये थे।

राजा तो महल देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया।

वह सीढ़ियॉ चढ़ कर ऊपर देखने गया। वह उसे देख कर बहुत खुश हुआ। पर जैक के बारह महीने और एक दिन खत्म होने के बहुत करीब थे। वह जल्दी से जल्दी अपनी पत्नी के पास पहुॅचना चाहता था।

उसने उन तीनों छोटे आदमियों को अगले दिन आठ बजे जल्दी से जल्दी राजा के दूसरे भाई के पास चलने का हुक्म दिया। उसने कहा वहॉ वह एक रात रुकेगा। उसके अगले दिन फिर वह सबसे छोटे भाई के पास जायेंगे जो सारी दुनियॉ के चूहों का राजा था।

वहीं वह अपना वह महल उसकी रक्षा में छोड़ जायेगा जब तक उसको बुलाया न जाये। जैक ने राजा से विदा ली और उसकी मेहमाननवाजी और सहायता के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जैक और महल फिर वहॉ से चले गये। एक रात दूसरे भाई के घर रुके। फिर वहॉ से गये तो तीसरे भाई के घर पहुॅचे जहॉ उसने

अपना घोड़ा छोड़ा था जब वह वहॉ से चला था। सो वहॉ से उसने अपना घोड़ा लिया।

यहॉ जैक ने अपना महल छोड़ा और घर चल दिया। तीन दिन रात तक तीनों भाइयों के साथ खुशी खुशी बिताने बाद अब जैक को नींद आ रही थी सो वह घोड़े पर सोया सोया हो रहा था। वह तो रास्ता भी खो जाता अगर उसको एक छोटे आदमी ने न बताया होता।

वह बहुत थका हुआ घर पहुॅचा पर उन्होंने उसका बिल्कुल भी प्यार से स्वागत नहीं किया क्योंकि वह अब तक चोरी किया गया महल नहीं ढूॅढ पाया था। और इससे ज़्यादा बुरी बात तो यह थी कि उसकी प्यारी पत्नी भी उसको मिलने नहीं आयी। असल में उसके माता पिता ने ही उसे वहॉ जाने से रोक दिया था।

पर वे उसको बहुत समय तक नहीं रोक सके। जैक ने अपनी पूरी ताकत लगा कर उन तीनों छोटे आदमियों से वह महल मॅगवा लिया।

जैक ने राजा से हाथ मिलाया और उसके शाही मेहरबानियों के लिये बहुत धन्यवाद दिया चाहे वह उसको महल देने की वजह से ही क्यों न हो। फिर जैक ने तीनों छोटे आदमियों को हुक्म दिया कि वे उस उसके घर जल्दी से जल्दी पहुॅचा दें।

जब उसकी पत्नी एक छोटे बच्चे को ले कर जैक के माता पिता से मिली तो उसके माता पिता भी बहुत खुश हुए। और फिर सब हमेशा हॅसी खुशी रहे।

11 जैक और बीन्स का पेड़[11]

यह राजा अल्फ्रेड के समय की बात है कि एक गरीब स्त्री लन्दन से दूर एक गॉव में एक झोंपड़ी में रहती थी। वह कई सालों से विधवा थी और उसके केवल एक ही बेटा था जिसका नाम था जैक।

अकेला बेटा होने की वजह से वह उसको बहुत प्यार करती थी और उसके इसी प्यार ने उसको बिगाड़ दिया था। वह किसी भी तरफ ध्यान नहीं देता था, बहुत ही लापरवाह था और जितना पैसा उसके पास होता था वह सब खर्च कर देता था।

इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसकी मॉ ने ही उसको कभी नहीं रोका। धीरे धीरे सिवाय एक गाय के उसके घर की सभी चीज़ें बिक गयीं।

एक दिन वह स्त्री जैक से ऑखों में ऑसू भर कर बोली — "बेटा, तुम्हारी वजह से मुझे आज यह गरीबी के दिन देखने पड़ रहे हैं। आज मेरे पास खाने के लिये बिल्कुल भी पैसे नहीं हैं केवल यह गाय ही रह गयी है।

मैं उसे अपने से अलग नहीं करना चाहती पर क्या करूॅ भूखा भी नहीं रहा जाता। पर उसको बेचते हुए मुझे बड़ा दुख होता है।

[11] Jack and the Beanstalk.

यह सुन कर कुछ पल के लिये तो जैक का मन भी पिघल गया पर जल्दी ही वह ठीक हो गया। उसने अपनी मॉ को अपनी गाय को पड़ोस के गॉव में बेचने की सलाह दी।

जब वह अपनी गाय को दूसरे गॉव ले जा रहा था तो उसे रास्ते में एक कसाई मिला। कसाई ने पूछा — "तुम यह गाय कहॉ ले जा रहे हो?"

जैक बोला — "मैं इसे बेचने के इरादे से ले जा रहा हूॅ।"

कसाई के पास कई रंगों की कुछ अजीब सी बीन्स थीं। जैक को वे बीन्स बहुत अच्छी लगीं। कसाई ने ताड़ लिया कि जैक को वे बीन्स बहुत अच्छी लगीं हैं सो उसने सोचा कि जैक जैसे सीधे आदमी को ठगने का यह अच्छा तरीका है सो उसने जैक से गाय का दाम पूछा और वे बीन्स के सारे दाने जैक के हाथ पर रख दिये।

वह मूर्ख लड़का इस प्रस्ताव पर बहुत खुश हुआ। सौदा तय हो गया और जैक ने बीन्स के कुछ दानों के बदले उस कसाई को अपनी गाय बेच दी। खुशी खुशी वह घर आया और बाहर से ही मॉ को आवाज देने लगा ताकि वह उसको चकित कर सके।

मॉ बाहर आयी और जब उसने बीन्स देखीं और जैक से पूरा हाल सुना तो गुस्से में भर कर उसने वे सारी की सारी बीन्स घर के बाहर फेंक दीं और अपनी किस्मत पर रो पड़ी।

बीन्स के वे दाने उड़ कर चारों ओर बिखर गये। कुछ उनमें से बागीचे में फैल गये।

स्त्री को अपनी गाय के इस तरह चले जाने का बड़ा दुख हुआ और वह बहुत निराश हुई। उनके घर में तो खाने के लिये पहले से ही कुछ नहीं था सो उस दिन वे दोनों बिना खाना खाये ही सो गये।

जैक सुबह जल्दी ही उठ गया। उसने अपने सोने के कमरे की खिड़की से कुछ अजीब सा दृश्य देखा तो तुरन्त ही भागा भागा बागीचे में गया।

उसने देखा कि बीन्स के कुछ दानों में छोटी छोटी जड़ें फूट आयी हैं और वे आश्चर्यजनक गति से बढ़ रहीं हैं। उसकी डंडियॉ बहुत मोटी हैं और देखने में उन्होंने सीढ़ी जैसी शक्ल बना रखी है

और उसने ऊपर अपना सिर उठा कर जो देखा तो उन पौधों का तो उसे कोई ओर छोर ही नजर नहीं आ रहा था। वह कहीं बादलों में छिपा था। उसने डंडियों को हिला कर देखा तो वे काफी मजबूत थीं। वे तो हिल भी नहीं रहीं थीं।

उसने तुरन्त ही ऊपर जाने का विचार बना लिया कि शायद उसकी किस्मत कहीं ऊपर ही उसका इन्तजार कर रही हो। सो यह बताने के लिये वह मॉ के पास दौड़ा गया।

वह सोच रहा था कि यह सब सुन कर उसकी मॉ बहुत खुश होगी पर हुआ इसका उलटा। उसकी मॉ यह सब सुन कर बहुत नाराज हुई और उसने उसको ऊपर जाने से मना किया। उसने उसको धमकी भी दी पर सब बेकार।

जैक को तो जाना था सो वह चला गया। कई घंटों तक चढ़ने के बाद वह उस पेड़ की चोटी तक पहुँच गया। थका थका सा वह चारों तरफ देखने लगा।

उसे लगा कि वह किसी अनजाने देश में आ गया है। वहाँ तो उसे सारी की सारी जगह रेगिस्तान सी नजर आयी जहाँ न कोई झाड़ी थी न कोई पेड़ था, न कोई लता थी और न कोई घास। सब कुछ उजाड़ पड़ा था।

किसी आदमी की सूरत भी नहीं दिखायी देती थी। केवल पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े इधर उधर पड़े थे सो वह एक पत्थर पर बैठ गया और अपनी माँ के बारे में सोचने लगा।

उसे अपनी माँ का कहना न मानने पर बहुत दुख हो रहा था पर अब क्या हो सकता था। अब उसे भूख भी लग आयी थी और वह भूख से मरना नहीं चाहता था।

कुछ खाने पीने की उम्मीद में वह वहाँ से उठ कर चल दिया कि शायद कहीं कोई मकान आदि उसे दिखायी दे जाये। तुरन्त ही उस को एक औरत दिखायी दी जो बहुत बूढ़ी थी। उसके सारे शरीर पर झुर्रियाँ पड़ी थीं। उसके फटे कपड़े साफ बता रहे थे कि वह कितनी गरीब है।

उसने जैक से पूछा — "तुम यहाँ कैसे आये?"

जैक ने उसे बीन्स के बारे में सब कुछ बताया तो वह बोली — "क्या तुम्हें अपने पिता की याद है?"

"नहीं, पर कुछ याद जरूर है क्योंकि जब मैंने अपने पिता के बारे में पूछा तब मेरी मॉ रो पड़ी थी। वह मेरे पिता के बारे में बताने से कतराती है।"

बुढ़िया बोली — "मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में सब कुछ बताती हूॅ लेकिन कहने से पहले तुमसे यह वायदा लेना चाहती हूॅ कि जो कुछ भी मैं कहूॅगी तुम वही करोगे क्योंकि मैं एक परी हूॅ। अगर तुमने मेरे कहे अनुसार काम नहीं किया तो तुम और तुम्हारी मॉ दोनों का बुरा होगा।"

जैक यह सुन कर डर गया और उसका कहा मानने को तैयार हो गया।

तब परी ने कहा — "तुम्हारे पिता एक बहुत ही अमीर आदमी थे और नेक स्वभाव के थे। वे गरीबों की सहायता करते थे और उनको सदा खुश रखने की कोशिश में लगे रहते थे।

उनका यह एक नियम सा बन गया था कि बिना भलाई किये उनका कोई दिन ही नहीं जाता था। हफ्ते में एक दिन उनका घर गरीबों के लिये खुला रहता था। अमीर और बड़े लोग वहॉ नहीं बुलाये जाते थे।

नौकर चाकर सभी उनसे खुश थे और सदा अपने मालिक की भलाई चाहते थे। तुम्हारे पिता राजाओं की तरह अमीर तो जरूर थे पर उनको घमंड बिल्कुल भी नहीं था। ऐसा आदमी चर्चा का कारण बन जाता है सो वह भी बन गये।

एक राक्षस बहुत दूर रहता था वह उतना ही खराब था जितने तुम्हारे पिता अच्छे थे। वह बहुत ही ईर्ष्यालु और बेरहम था। वह बहुत गरीब था और हमेशा अमीर बनने के सपने देखता था।

तुम्हारे पिता के बारे में सुन कर उसने उनसे मिलने का विचार किया और उनके पड़ोस में आ कर बस गया। उसने तुम्हारे पिता को बताया कि वह एक भला आदमी था और एक भूचाल में अपना सब कुछ खो चुका था।

तुम्हारे पिता ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और उसे अपने ही घर में एक अच्छा सा कमरा रहने के लिये दे दिया और उसकी काफी देखभाल भी की।

पर उस राक्षस के दिमाग में तो कुछ और ही चल रहा था। कुछ दिनों तक तो सब कुछ ठीक सा चलता रहा पर राक्षस को चैन कहॉ? वह तो अपना काम पूरा करने की योजना बना रहा था। आखिर वह समय भी आ गया।

तुम्हारे पिता का घर समुद्र के किनारे से कुछ दूर था परन्तु किसी अच्छी दूरबीन की सहायता से उसका किनारा बखूबी देखा जा सकता था।

एक दिन वह राक्षस दूरबीन से समुद्र की ओर देख रहा था कि उसे एक जहाज़ी बेड़ा दिखायी दिया। हवा बहुत तेज़ थी और वह जहाज़ी बेड़ा बहुत परेशान था।

राक्षस ने तुम्हारे पिता को बुलाया और उन दुखियों की सहायता करने को कहा। सारे नौकर चाकर उनकी सहायता के लिये तुरन्त ही भेज दिये गये।

केवल तुम्हारे पिता, तुम्हारी मॉ, तुम और तुम्हारी आया ही घर में रह गये। उस समय वह राक्षस तुम्हारे पिता के पढ़ने वाले कमरे में पहुँच गया। तुम्हारे पिता ने उसको एक किताब पढ़ने के लिये दी।

राक्षस को उनको वहॉ अकेला देख कर मौका मिल गया और उसने उनको दबोच लिया। वह तुरन्त ही मर गये। राक्षस ने उनके मरे हुए शरीर को वहीं छोड़ दिया और वहॉ से जाने लगा तो रास्ते में तुम्हारी आया मिल गयी। उसने उसको भी रफा दफा कर दिया।

उस समय तुम केवल तीन महीने के थे। तुम्हारी मॉ तुमको गोद में लिये घर के किसी दूसरे हिस्से में बैठी थी। घर में क्या हो रहा था उसको कुछ पता ही नहीं था।

वह जब पढ़ाई वाले कमरे में गयी तो यह देख कर सन्न रह गयी कि तुम्हारे पिता मरे पड़े थे और उनके शरीर से खून बह रहा था। और तुम्हारी मॉ दुख और डर से पागल सी हो गयी, हिल डुल भी न सकी।

राक्षस उसको भी खोज रहा था। उसको इस हाल में देख कर वह उसका भी वही हाल करने को तैयार हुआ जो उसने तुम्हारे पिता का किया था परन्तु तुम्हारी मॉ उसके पैरों पर गिर पड़ी और उससे अपनी ज़िन्दगी की भीख मॉगने लगी।

उस बेरहम राक्षस ने तुम दोनों को छोड़ तो दिया पर तुम्हारी मॉ से यह वायदा ले लिया कि वह कभी तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में नहीं बतायेगी। अगर उसने बताया तो वह तुम दोनों को बेरहमी से मार डालेगा। तुम्हारी मॉ तुमको गोद में लिये हुए जितनी जल्दी हो सका वहॉ से भाग गयी।

बाद में राक्षस को पछतावा हुआ कि उसने तुम्हारी मॉ को जाने ही क्यों दिया पर उसको जल्दी ही नौकरों के आने से पहले भाग जाना था।

उसको उनके खजाने के बारे में सब कुछ मालूम था सो तुरन्त ही उसने और उसकी पत्नी ने वह खजाना उठाया, घर में कई जगह आग लगायी और वहॉ से भाग लिया। जब तक नौकर वापस आये सारा घर जल कर खाक हो चुका था।

तुम्हारी गरीब मॉ मीलों तक इधर उधर मारी मारी फिरती रही। डर उसके रोम रोम में बस गया था। किसी तरह उसने एक घर बनाया और उसमें रह कर तुमको पाला पोसा।

यह केवल उस राक्षस का डर था जो उसने तुमको तुम्हारे पिता के बारे में एक शब्द भी नहीं बताया।

मैं तुम्हारे पिता की उनके जन्म से ही रक्षक थी परन्तु जैसे धरती पर रहने वालों के कुछ नियम होते हैं वैसे ही हमारे भी कुछ नियम हैं।

राक्षस के तुम्हारे पिता से मिलने से कुछ दिन पहले ही मुझे कुछ सजा मिली थी और उस सजा में मेरी ताकत छीन ली गयी थी इसलिये मैं कुछ नहीं कर सकी पर जिस दिन तुम गाय बेचने जा रहे थे और तुम कसाई से मिले तब तक मेरी ताकत मुझे वापस मिल चुकी थी।

मैंने ही तुम्हारे मन में बीन्स के दाने लेने की इच्छा जगायी। मेरी ही ताकत से वे बीन्स के दाने इतने ऊँचे उगे और उनमें सीढ़ी सी बन गयी। और अब यह कहने की भी जरूरत नहीं कि उस सीढ़ी पर चढ़ने की इच्छा भी तुम्हारे मन में मैंने ही जगायी।

वह राक्षस इसी देश में रहता है और तुम ही उसको उसके इस जुर्म की सजा दोगे। खतरे और मुश्किलें तो तुम्हारे रास्ते में आयेंगी मगर तुमको अपने पिता की हत्या का बदला जरूर लेना है नहीं तो तुम कभी फल फूल नहीं सकोगे और हमेशा दुखी रहोगे।

राक्षस के पास जो कुछ भी है वह सब तुम्हारा है क्योंकि वह सब उसने तुम्हारे पिता से लिया था।

एक बात का ख्याल रखना कि अपने यहाँ आने जाने के बारे में अपनी माँ को न बताना क्योंकि वह बेचारी तो केवल इस घटना के बारे में सोच कर ही मर जायेगी। अभी तक उसके मन से तुम्हारे पिता की हत्या का डर निकला नहीं है।

यह सड़क सीधी राक्षस के घर को जाती है। तुम इसी सड़क से चले जाओ। मेरा कहा नहीं माना तो सख्त सजा के लिये भी तैयार रहना।"

यह कह कर परी गायब हो गयी और जैक परी के बताये रास्ते पर चल पड़ा।

जैक चलता रहा, चलता रहा, वह गये रात तक चलता रहा और अन्त में एक बड़े महल के सामने आ पहुँचा। एक मामूली सी औरत महल के दरवाजे पर खड़ी थी। जैक ने उसको नमस्ते की और उससे कुछ खाना और रात को रहने की जगह माँगी।

वह जैक को देख कर आश्चर्य में पड़ गयी और बोली कि उसने इस घर के आस पास कभी कोई आदमी नहीं देखा था क्योंकि सभी लोग उसके पति के बारे में जानते थे कि वह एक बड़ा ताकतवर राक्षस है और इसी लिये कोई भी उधर आने की हिम्मत तक नहीं करता था तो फिर वह वहाँ कैसे आ गया।

दूसरी बात यह थी कि वह राक्षस केवल आदमियों का ही माँस खाता था और आदमी की खोज में रोज पचास पचास मील तक जाया करता था। इसलिये भी कोई आदमी उस महल के आस पास आने की हिम्मत नहीं करता था।

यह हाल सुन कर तो जैक के हाथों के तोते उड़ गये फिर भी उसने साहस से काम लिया। उसने उस औरत से दोबारा कुछ खाना और रात भर ठहरने की जगह माँगी।

उस औरत ने उसे भट्टी में छिप जाने के लिये कहा तो वह भट्टी में छिपे रहने पर तैयार हो गया। वह नेक औरत उसको अन्दर ले गयी और उसे भर पेट खाना खिलाया।

पहले वे एक बड़े कमरे में पहुँचे जो बहुत सुन्दर सजा हुआ था फिर वे कई बड़े कमरों से होते हुए एक गैलरी में पहुँचे। जैक ने देखा कि सभी कमरे उतनी ही सुन्दरता से सजे हुए थे जितना कि पहला कमरा।

गैलरी में एक तरफ लोहे की जाली लगी थी जिसके दूसरी तरफ वे आदमी थे जिनको उस राक्षस ने अपना पेट भरने के लिये रखा हुआ था।

यह सब देख कर जैक की तो जान ही निकलने लगी। वह सोचता रहा कि अब शायद वह अपनी मॉ को कभी नहीं देख पायेगा।

गैलरी के आखीर में एक गोल चक्करदार सीढ़ी थी जो रसोईघर में जाती थी। वह रसोईघर खूब बड़ा था। वह अपना डर भूल गया और वहॉ जलती हुई आग तापने लगा।

इतनी देर में महल के मुख्य दरवाजे पर ज़ोर की भड़भडाहट हुई। राक्षस घर वापस आ गया था। राक्षस की पत्नी ने उसे फिर भट्टी में छिपा दिया और फिर वह तुरन्त ही पति की अगवानी के लिये दरवाजे पर जा पहुँची।

जैक ने सुना राक्षस अपनी पत्नी से कह रहा था —"प्रिये, मुझे ताजा आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

पत्नी बोली — "प्रिय, यह तो तुम्हारे उन्हीं पुराने आदमियों की खुशबू है जिनको तुमने पहले से ही कैद कर रखा है।"

राक्षस ने उसका विश्वास कर लिया और रसोईघर में आ गया। राक्षस को देख कर जैक इतना डर गया जितना वह अपनी ज़िन्दगी में कभी किसी से नहीं डरा था।

वह राक्षस वहीं आग के पास बैठ गया और उसकी पत्नी खाना बनाने लगी। धीरे धीरे जैक की जान में जान आयी और अब वह राक्षस को पूरी तरह देखने लगा।

उसको राक्षस का खाना देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे लगा वह खुद तो खाना ही नहीं खाता था क्योंकि उसका अपना खाना तो राक्षस के खाने से बहुत ही कम था।

खाने के बाद उसने अपनी पत्नी से मुर्गी लाने के लिये कहा। पत्नी ने एक बहुत सुन्दर मुर्गी मेज पर ला कर रख दी।

जैक सोचने लगा कि देखें अब क्या होता है। उसने देखा कि जब भी राक्षस कहता "अंडा दे" तो वह मुर्गी एक सोने का अंडा दे देती। इस तरह राक्षस काफी देर तक उस मुर्गी से अपना मन बहलाता रहा।

राक्षस की पत्नी सोने चली गयी थी। काफी देर के बाद राक्षस भी वहीं बैठा बैठा ऊँघने लगा। कुछ ही देर में वह सो गया और ज़ोर ज़ोर से खर्राटे भरने लगा।

तड़के ही जैक अपनी जगह से उठा, उसने मुर्गी को पकड़ा और उसे ले कर भाग निकला। जैक को रास्ता खोजने में थोड़ी कठिनाई हुई पर अन्त में उसने अपना रास्ता खोज ही लिया और वह सीधा बीन्स की बेल से होता हुआ तुरन्त ही नीचे उतर गया।

उसकी माँ उसे देख कर इतनी खुश हुई कि खुशी के मारे उसकी आँखों में आँसू आ गये।

जैक उस मुर्गी को अपनी माँ को दिखाने के लिये बेचैन हो रहा था। वह बोला — "माँ, आज मैं एक ऐसी चीज़ ले कर आया हूँ जो हमें जल्दी ही अमीर बना देगी। मुझे पूरी आशा है कि इस चीज़ को पाने के बाद तुम मेरे दिये हुए सब दुखों को भूल जाओगी।"

इतना कह कर उसने अपनी माँ को वह मुर्गी दिखायी और उन्होंने उस मुर्गी से जितने चाहे उतने सोने के अंडे निकाले। उन अंडों को बेच कर उन्होंने बहुत धन कमाया और फिर वे खूब अमीर हो गये।

कुछ समय तक वे लोग खूब सुख से रहे लेकिन बाद में जैक के मन में फिर उधर जाने की इच्छा जाग उठी सो वह वहाँ जाने के लिये तैयार हो गया ताकि वह फिर से वहाँ से और खजाना ला सके।

क्योंकि जब वह पहली बार राक्षस के घर गया था तो वह राक्षस और उसकी पत्नी के बीच हुई बातों से यह जान गया था कि राक्षस के घर में मुर्गी के अलावा और भी कई अनोखी चीज़ें थीं।

सो एक दिन हिम्मत कर के उसने अपनी मॉ से कहा कि वह फिर बीन्स की बेल पर चढ़ना चाहेगा। मॉ ने उसे बहुत समझाया कि वह वहॉ जाने की सोचे भी नहीं क्योंकि अब तक राक्षस को अपनी मुर्गी खोने का पता चल गया होगा और वह उसके बदले में उसकी जान भी ले सकता है।

जैक ने देखा कि मॉ से बहस करना बेकार था सो उसने एक ऐसी पोशाक सिलवायी जिसमें कोई उसे पहचान न पाये और एक सुबह वह मॉ को धोखा दे कर उस बीन्स की बेल पर फिर से चढ़ गया।

ऊपर पहुॅचते पहुॅचते वह बहुत थक गया था और उसे भूख भी लग आयी थी। कुछ देर एक पत्थर पर बैठ कर वह फिर उसी राक्षस के घर की तरफ चल दिया। वहॉ पहुॅचते पहुॅचते उसे रात हो गयी। उसने देखा कि वह औरत उस महल के दरवाजे पर उसी तरह खड़ी है जैसे पहले खड़ी थी।

जैक ने उसे नमस्ते की और कोई बनायी हुई कहानी उसे सुना कर उससे फिर कुछ खाने और रात को ठहरने की जगह देने की प्रार्थना की। उसने भी जैक को वही पहले वाला ही जवाब दिया।

उसने साथ ही यह भी कहा कि उसने पहले एक आदमी के ऊपर दया कर के एक आदमी को ठहराया था पर वह उसकी मुर्गी ले कर भाग गया तब से राक्षस का स्वभाव बहुत खराब हो गया है क्योंकि वह समझता है कि उसकी मुर्गी की चोरी में मेरा हाथ है।

जैक ने काफी मुश्किल से उसको विश्वास दिलाया कि वह खुद भी चोर नहीं है और वह पहले वाला आदमी भी नहीं है। आखिर राक्षस की पत्नी मान गयी।

वह फिर राक्षस की पत्नी के पीछे पीछे गया। सब कुछ पहले जैसा ही था। इस बार राक्षस की पत्नी ने जैक को रसोईघर की एक बड़ी आलमारी में छिपा दिया।

राक्षस अपने समय पर घर आया और बोला — "मुझे आज ताजा आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

पत्नी ने कहा — "कुछ कौए कहीं से आदमी के मॉस का एक टुकड़ा छत पर फेंक गये हैं यह तुमको उसी की खुशबू आ रही है।"

जब राक्षस की पत्नी खाना बना रही थी तो राक्षस बहुत जल्दी में लग रहा था क्योंकि वह बार बार अपनी पत्नी से पूछ रहा था कि खाना जल्दी क्यों नहीं तैयार हो रहा। और वह जितनी देर वहॉ बैठा रहा उतनी देर तक वह अपनी पत्नी को मुर्गी की चोरी के लिये डॉटता ही रहा।

राक्षस ने जैसे तैसे अपना खाना खत्म किया और फिर पत्नी से बोला — "अब मेरे मन बहलाव के लिये या तो मेरे पैसों का थैला लाओ या फिर मेरा बाजा।" काफी देर तक पत्नी को तंग करने के बाद उसने अपना सोने चॉदी वाला थैला मॅगवाया।

पत्नी दो बहुत बड़े बड़े थैले ले आयी। राक्षस ने उसे वे थैले देर से लाने के लिये डॉटा तो पत्नी बोली कि वे बहुत भारी थे इसलिये उनको लाने में उसे देर लग गयी और अब वह उनको नीचे भी नहीं ले जा पायेगी।

राक्षस ने इस जवाब को सुन कर गुस्से में उसे मारने के लिये हाथ उठाया पर वह उसकी मार से बच कर सोने चली गयी।

सबसे पहले उस राक्षस ने अपना चॉदी वाला थैला खाली किया। उस थैले के चॉदी के सिक्के बाहर मेज पर रखे हुए थे। जैक की ऑख चॉदी की चमक से चौंधिया रहीं थीं। वह सोच रहा था, काश यह धन उसका होता। राक्षस उन सिक्कों को बार बार गिन रहा था और उन्हें थैले में भरता जा रहा था।

फिर उसने सोने वाला थैला खोला और सोना बाहर निकाला। उस सोने को देख कर तो जैक की ऑखें बिल्कुल ही खुली की खुली रह गयीं। फिर राक्षस ने वह सोना भी देखभाल कर उसी थैले में डाल दिया और कुछ ही देर में ऊँघ कर खर्राटे भरने लगा।

जब जैक को विश्वास हो गया कि वह राक्षस पूरी तरीके से सो गया तो वह उठा और थैले उठाने लगा।

जैसे ही उसने पहले थैले को हाथ लगाया कि एक कुत्ता राक्षस की खुशी के नीचे से बड़े ज़ोर से भौंका। जैक डर गया और बजाय भागने के वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उसे लगा राक्षस जैसे अब जागा और अब जागा।

कुत्ता लगातार भौंके जा रहा था। इतने में उसे एक मॉस का टुकड़ा दिखायी दे गया। वह उसने उठा कर कुत्ते की तरफ फेंक दिया। कुत्ता उसे ले कर आलमारी की तरफ चला गया।

राक्षस अभी तक जागा नहीं था सो जैक ने वे दोनों थैले उठाये और वहॉ से चल दिया।

बाहर जा कर देखा तो काफी दिन निकल आया था। अब कठिनाई यह थी कि वह उन दोनों भारी थैलों को बीन्स की बेल तक ले कर कैसे जाये। वे थैले वास्तव में बहुत भारी थे मगर खुशी खुशी में वह चलता चला गया और बीन्स की बेल के नीचे भी आ गया।

वहॉ पहुॅच कर यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि झोंपड़ी में उसकी मॉ नहीं थी। उसने मॉ को सब जगह तलाश किया, पड़ोसियों से भी पूछा पर उसका कोई पता नहीं चला। आखिर एक बुढ़िया ने उसको उसकी मॉ के मिलने का पता बताया।

जब वह वहॉ पहुॅचा तो उसे बड़ा दुख हुआ कि वहॉ उसकी मॉ तो वहॉ मरे हुए के समान पड़ी थी। पर अपने बेटे के लौटने की

खबर सुन कर वह कुछ कुछ होश में आने लगी। जैक ने उसे वे दोनों थैले दिये।

फिर वे लोग कुछ दिन सुख से रहे। उन्होंने अपने लिये एक महल बनवा लिया और फिर जैक ने तीन साल तक बीन्स की बेल की कोई सुध न ली।

पर वह उस बेल को भूल भी नहीं सकता था क्योंकि उसे परी की सब बातें याद थीं। सो उसने एक बार फिर से ऊपर जाने की तैयारियॉ शुरू कर दीं।

एक दिन सुबह सुबह वह उस बेल पर चढ़ कर फिर ऊपर पहुॅचा, शाम को राक्षस के घर पहुॅचा और पहले की ही तरह उसने उसकी पत्नी को वहॉ खड़े पाया।

जैक ने अपने आपको कुछ इस तरह छिपा रखा था कि राक्षस की पत्नी उसे पहचान ही नहीं पायी। उसने फिर एक झूठी कहानी उसको सुना कर उससे खाना और रात भर सोने की प्रार्थना की।

इस बार बड़ी कठिनाई से वह राक्षस के घर में घुस सका और एक बार फिर से वहीं भट्टी में छिप गया।

राक्षस आया और बोला — "मुझे आज फिर ताजा आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

जैक ने सोचा कि यह सब पहले की ही तरह हो रहा है इसलिये उसने इस सब पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। पर यह क्या? अबकी बार तो वह राक्षस उठा और चारों तरफ घूम घूम कर देखने लगा।

वह भट्टी की तरफ भी आया और भट्टी के ढक्कन पर हाथ रखा तो जैक को अपनी मौत सामने खड़ी नजर आयी परन्तु वह ढक्कन बिना खोले ही चला गया। जैक ने सन्तोष की सॉस ली।

आखिर राक्षस ने खाना खाया और फिर उसने अपनी पत्नी से बाजा लाने को कहा। जैक ने झॉक कर देखा बाजा बहुत सुन्दर था। राक्षस बोला "बजो" तो उसने तुरन्त बजना शुरू कर दिया।

उसका संगीत बहुत ही मीठा था कि जैक उस संगीत को सुन कर मोहित सा हो गया और उसे पाने का कोई तरीका सोचने लगा। कुछ ही देर में राक्षस सो गया।

राक्षस के सो जाने के बाद जैक तुरन्त भट्टी में से बाहर निकला और बाजा उठाने लगा।

जैसे ही उसने बाजा छुआ बाजा बोला — "स्वामी स्वामी, मालिक मालिक।" वास्तव में वह बाजा एक परी थी। बाजे की आवाज सुन कर राक्षस जाग गया।

जैक बाजे को उठा कर भाग लिया। अब क्या था जैक आगे आगे और राक्षस उसके पीछे पीछे। जैक ने जैसे ही बीन्स की बेल पर पैर रखा कि उसने कुल्हाड़ी मॉगी, तुरन्त ही एक कुल्हाड़ी उसके हाथ में आ गयी।

जैक तो बहुत जल्दी ही नीचे उतर गया और राक्षस अब नीचे उतरने की तैयारी में था सो जैक ने उस कुल्हाड़ी से वह बेल काट दी। बेल के कटते ही राक्षस नीचे गिर गया और मर गया।

जैक की मॉ को बड़ी खुशी हुई जब उसने बीन्स की बेल को कटते हुए देखा। इसी समय परी भी प्रगट हो गयी।

उसने जैक की मॉ को सारा हाल सुनाया और जैक को सलाह दी कि उसे अपनी मॉ का हमेशा ख्याल रखना चाहिये और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये।

इसके अलावा उसको अपने पिता जैसा बनना चाहिये और वह चली गयी। जैक और उसकी मॉ बहुत सालों तक आनन्द से रहे।

12 जैक ने अपनी किस्मत कैसे बनायी[12]

यह बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक लड़का रहता था। उसका नाम था जैक। एक सुबह उसने सोचा कि चल कर अपनी किस्मत बनायी जाये। सो वह अपनी किस्मत बनाने चल दिया।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया था कि रास्ते में उसको एक बिल्ला मिला। बिल्ले ने पूछा — "जैक तुम कहॉ जा रहे हो?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

बिल्ले ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूॅ?"

जैक बोला — "क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही आनन्द रहेगा।"

सो वे दोनों उछलते कूदते चल दिये। अभी वे कुछ दूर ही गये होंगे तो उन्हें एक कुत्ता मिला।

कुत्ते ने पूछा — "कहॉ चल दिये जैक?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

कुत्ते ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूॅ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

[12] How Jack Made His Fortune?

सो कुत्ता भी उनके साथ चल दिया। अब तीनों उछलते कूदते चल दिये। वे कुछ ही दूर और गये थे कि उनको एक बकरा मिला।

बकरे ने पूछा — "कहॉ जा रहे हो प्यारे जैक?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

बकरे ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूॅ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

फिर वे सब साथ साथ चल दिये। अब चार हो गये थे – जैक बिल्ला कुत्ता और बकरा। वे लोग कुछ दूर और आगे चले तो उनको एक बैल मिला।

बैल ने पूछा — "जैक भाई कहॉ चले?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

बैल ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूॅ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा चलो तुम भी चलो।"

सो अब पॉच लोग चल दिये। अभी वे ज़्यादा दूर नहीं गये थे कि उनको एक मुर्गा मिल गया।

मुर्गे ने भी पूछा — "जैक कहॉ चल दिये?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूॅ।"

मुर्गे ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा। तुम भी चलो हमारे साथ।"

सो अब छह लोग चल दिये। सब इसी तरह से चलते रहे चलते रहे कि अब शाम होने आयी। अब उन्हें कोई ऐसी जगह चाहिये थी जहॉ वे आराम से अपनी रात बिता सकें।

तभी उनको एक घर दिखायी दिया। जैक ने उनसे कहा कि वे सब वहीं चुपचाप खड़े रहें वह ज़रा घर को अन्दर से देखता है। उसने खिड़की से झॉका तो उसने देखा कि कुछ डाकू उसमें बैठे बैठे अपने पैसे गिन रहे थे।

जैक वापस गया और जा कर उन सबसे कहा कि थोड़ा ठहरो। जब मैं कहूँ तब तुम लोग बहुत ज़ोर का शोर मचाना। सो जब सब तैयार हो गये तो जैक ने इशारा किया तो बिल्ले ने म्याऊँ बोला, कुत्ते ने ज़ोर से भौंका, बकरे ने "मैं मैं" कहा, बैल रॅभाया और मुर्गे ने ज़ोर से कुकड़ूँ कू की आवाज लगायी।

ये सब आवाजें मिल कर इतना शोर कर रही थीं कि डाकू बेचारे बहुत डर गये और घर छोड़ कर भाग गये। तब मुर्गा अन्दर गया और उसने सारा घर सॅभाल लिया।

जैक को डर लग रहा था कि डाकू रात में घर वापस आयेंगे। सो जब रात हो गयी तो उसने बिल्ले को तो झूलने वाली खुर्शी पर

बिठा दिया। कुत्ते को मेज के नीचे बिठा दिया। बकरे को उसने ऊपर चढ़ा दिया।

बैल को उसने नीचे वाले कमरे में भेज दिया। मुर्गा घर की छत पर बैठ गया। जैक खुद बिस्तर पर सोने चला गया।

जैक का सोचना ठीक था। धीर धीरे जब रात हो गयी तो डाकुओं ने घर लौटना चाहा तो उन्होंने एक आदमी को यह देखने के लिये घर भेजा कि वह यह देख कर आये कि घर ठीकठाक है या नहीं।

थोड़ी ही देर में वह वापस आ गया और उसने अपने साथियों को बताया — "मैं जब वापस घर पहुँचा तो मैं अन्दर गया और अपनी झूलती हुई खुशी पर बैठने की कोशिश की तो वहाँ तो एक बुढ़िया कुछ बुन रही थी। उसने अपनी बुनाई की सलाइयाँ मेरे शरीर में चुभो दीं। यह बिल्ला था।

फिर मैं पैसे देखने के लिये मेज के पास गया तो उसके नीचे एक जूता बनाने वाला बैठा था उसने अपना जूता सिलने वाला औजार मुझे मारा। यह कुता था।

फिर मैं ऊपर गया तो वहाँ एक आदमी था जो कुछ पीट रहा था उसने अपने पीटने वाले हथियार से मुझे मारा। यह बकरा था।

फिर मैंने नीचे वाले कमरे में जाने की कोशिश की तो वहाँ कोई लकड़ी काट रहा था उसने मुझे अपनी कुल्हाड़ी से मारा। यह बैल था।

पर मुझे इन सबकी चिन्ता नहीं होती अगर वह छोटा आदमी घर की छत पर न मिलता तो। वह बस बोले जा रहा था "कुकड़ूँ कू। कुकड़ूँ कू।" और यह तो मुर्गा था।

13 गुरू और उसका शिष्य[13]

देश के उत्तर की तरफ के हिस्से में एक बहुत ही विद्वान आदमी रहता था। वह दुनियॉ की सारी भाषाऐं जानता था जितनी भी सूरज के नीचे थीं। वह दुनियॉ बनाने की सारी बातें भी जानता था।

उसके पास एक बहुत बड़ी किताब थी जिसके ऊपर काले बछड़े का चमड़ा चढ़ा हुआ था उसके लोहे के कोने थे और जो जंजीर से नीचे फर्श से बॅधी हुई थी।

जब भी उसको वह किताब पढ़नी होती थी तो वह उसको एक लोहे की चाभी से खोलता था और खुद ही उसको पढ़ता था और खुद ही उसे बन्द कर के रख देता था। किसी और को उसको पढ़ने की इजाज़त नहीं थी, पढ़ कर वह उसको फिर से ताला लगा देता।

इस किताब में अध्यात्मिक दुनियॉ के सारे भेद लिखे हुए थे। उसमें लिखा था कि स्वर्ग में कितने देवदूत हैं। वे अपने अपने पद के अनुसार कैसे चलते हैं। कैसे गाते हैं। उन लोगों के क्या क्या काम हैं। हर ताकतवर देवदूत का क्या नाम है।

उसमें राक्षसों के बारे में भी लिखा हुआ था कि वे कितने थे। उनके पास क्या क्या ताकतें थीं, उनके कौन कौन से नौकर थे, उनके क्या क्या नाम थे, उनको कैसे बुलाया जा सकता था। कैसे

[13] Master and His Pupil.

उनसे काम लिया जा सकता था और फिर कैसे उनको किसी आदमी का गुलाम बना कर रखा जा सकता था।

अब इस आदमी का एक शिष्य था जो बिल्कुल ही बेवकूफ था और बड़े मास्टर के पास उसके नौकर की तरह काम करता था। पर उसने वह काली किताब देखी कभी नहीं थी। वह मास्टर के अपने कमरे में भी कभी गया भी नहीं था।

एक दिन जब मास्टर बाहर गया हुआ था तो यह लड़का अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये उस कमरे में घुसा जिसमें मास्टर अपनी एक आश्चर्यजनक मशीन रखता था जिससे वह तॉबे को सोने में और लैड को चॉदी में बदला करता था।

और एक शीशा रखता था जिसमें वह दुनियॉ में क्या क्या हो रहा है यह देख सकता था। और वहॉ वह एक सीपी भी रखता था जिसको कान पर लगाने पर उसको उन सबकी वे सारी बातें सुनायी पड़ जाती थीं जिनको मास्टर जानना चाहता था।

लड़के ने एक कूसीबिल से तॉबे और लैड को सोने और चॉदी में बदलने की कोशिश की पर वह बेकार। वह शीशे में बहुत देर तक देखता रहा पर वह भी सब बेकार। धुऑ और बादल तो उस पर छाये पर उसमें उसे उनके अलावा और कुछ दिखायी नहीं दिया।

उसने सीपी अपने कान के पास रखी पर उसे उसमें से किसी तरह की कोई आवाज नहीं आयी सिवाय एक ऐसी आवाज के जैसे दूर कोई समुद्र अपने किनारे से टकरा रहा हो।

उसने अपने मन में सोचा "यहॉ तो मैं अपने आप कुछ कर नहीं पा रहा हो सकता है कि मुझे ठीक शब्द कहने न आते हों और वे शब्द इस किताब में लिखे हों।"

उसने चारों तरफ देखा तो लो उस किताब का तो ताला खुला हुआ था। लगता था जैसे मास्टर जी जाने से पहले उसमें ताला लगाना ही भूल गये थे।

बस लड़का उस किताब की तरफ दौड़ा और उसको खोला। उसमें सब कुछ काली और लाल स्याही से लिखा हुआ था। और बहुत सारा तो वह समझ भी नहीं सका कि उसमें क्या लिखा था। पर उसने एक लाइन पर उॅगली रखी और उसको जोर से पढ़ा।

तुरन्त ही कमरा धुॅए से भर गया और घर हिल गया। रास्ते में जैसे गरज का शोर हुआ और उसके सामने एक भयानक सी डरावनी सी शक्ल आ कर खड़ी हो गयी। उसकी सॉसों से आग निकल रही थी और ऑखें जलते हुए दियों की तरह थीं।

वह बील्ज़बब नाम का राक्षस था जिसको कि उसने किताब में से वह एक लाइन पढ़ कर अपनी सेवा करने के लिये बुला लिया था।

वह अपनी तेज़ फटी सी आवाज में बोला — "मुझे काम बताइये।"

लड़का तो यह देख कर कॉप गया और उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसके मुँह से कोई आवाज ही नहीं निकली।

उस लड़के को चुप देख कर राक्षस फिर चिल्लाया — "मुझे कोई काम बताओ नहीं तो मैं तुम्हारा गला घोट कर मार दूँगा।"

पर लड़के के मुँह से अभी भी कोई आवाज नहीं निकली। तब वह बुरी आत्मा लड़के की तरफ बढ़ा अपने हाथ बढ़ा कर उसका गला पकड़ा तो उसकी उँगलियॉ लड़के की गरदन के मॉस में गड़ने लगीं।

लड़का मजबूर हो कर चिल्लाया — "फूल को पानी दो।" जो वहीं पास में फर्श पर रखे एक गमले में उग रहा था।

यह सुनते ही वह आत्मा कमरा छोड़ कर चली गयी पर तुरन्त ही एक बैरल ले कर फिर वहॉ आ गयी। पूरा का पूरा बैरल पानी उसने गमले में लगे फूल के ऊपर उँडेल दिया।

अब वह बार बार वहॉ से जाता रहा और बैरल भर भर कर पानी लाता रहा और उस फूल पर उँडेलता रहा। यहॉ तक कि फर्श पर टखनों से ऊँचा पानी हो गया।

यह देख कर लड़का चिल्लाया "बस करो। बस करो। बहुत हो गया।" पर राक्षस ने सुना ही नहीं। वह यह करता ही रहा।

उधर लड़के को वे शब्द ही नहीं पता थे जिनको बोल कर वह उसे उस काम को करने से रोक सकता। उसको वापस भेज सकता। सो वह राक्षस पानी लाता रहा फूल को पानी देता रहा और पानी फर्श पर बिखर बिखर कर बढ़ता रहा।

अब वह लड़के के घुटनों तक आ गया था फिर भी वह पानी लाये जा रहा था। पानी लड़के की बगल तक ऊँचा पहुँच चुका था सो वह मेज पर चढ़ गया। अब पानी कमरे में खिड़की तक पहुँच गया था और उसके शीशे को छू रहा था। वह उसके पैरों के आसपास भी घूम रहा था।

वह अभी और बढ़ रहा था। अब वह उसकी छाती तक पहुँच गया था। वह बेचारा बेकार में ही उसको वहाँ से जाने के लिये चिल्लाता रहा पर वह उस बुरी आत्मा को वहाँ से किसी तरह भेज नहीं सका।

वह राक्षस आज तक उस फूल को पानी देता रहता और उस पानी में पूरा यौर्कशायर डूब जाता अगर...मास्टर जी को अपनी यात्रा में यह याद नहीं आयी होती कि वह घर पर अपनी किताब खुली छोड़ आये हैं।

वह तुरन्त ही वहाँ से भागे तो घर समय से पहुँच गये जब उनके शिष्य की ठोड़ी तक पानी आ गया था। उन्होंने बाहर से ही वे शब्द कहे जिससे वह राक्षस वहाँ से चला गया और शिष्य की जान बच गयी।

14 एक आदमी जिसने भालू देवी से शादी की[14]

एक समय की बात है कि यूनाइटैड किंगडम के एक गॉव में बहुत सारे लोग रहते थे। वहॉ उन लोगों को किसी तरह के खाने की कोई तकलीफ नहीं थी। सब कुछ बहुत था – मछली, मॉस, फल, सब्जियॉ आदि।

पर एक बार ऐसा हुआ कि वहॉ बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। अब वहॉ खाने को कुछ भी नहीं था – न मछली न मॉस, और न और कुछ। खाने की कमी की वजह से वहॉ लोग मरने लगे। बहुत सारे लोग मर गये।

उस गॉव के सरदार के दो बच्चे थे – एक लड़का और एक लड़की। कुछ समय बाद उस गॉव में केवल वे ही दो ज़िन्दा बचे। उन दोनों बच्चों में लड़की बड़ी थी और लड़का छोटा।

एक दिन वह लड़की अपने भाई से बोली — "भैया, मेरा क्या है अगर मैं मर भी जाऊॅ तो क्योंकि मैं तो लड़की हूॅ पर तुम हमारे पिता के लड़के हो उनकी सब चीज़ें तुम्हारी हैं। तुम ऐसा करो कि घर की इन चीज़ों को बेच कर खाना खरीद लो जिससे तुम ज़िन्दा रह सको।"

[14] A Man Who Married a Bear Goddess.

इतना कह कर उस लड़की ने अपने भाई को घर में से एक कपड़े का बना थैला निकाल कर दिया। लड़के ने वह थैला लिया और समुद्र के किनारे की तरफ चला गया।

वह समुद्र के किनारे उसकी रेती पर बहुत देर तक चलता रहा। चलते चलते उसने एक बहुत सुन्दर सा मकान देखा जो वहॉ से थोड़ा सा अन्दर की तरफ था। उस मकान के पास ही एक व्हेल मछली का ढॉचा पड़ा था।

वह लड़का उस घर की तरफ चल दिया। घर पहुँच कर उसने अपना थैला तो बाहर छोड़ा और वह खुद उस घर में घुसा।

अन्दर जा कर उसने देवता किस्म का एक आदमी देखा। वहॉ उसने उसकी पत्नी को भी देखा। वह भी एक देवी की तरह लग रही थी। उसके सारे कपड़े काले रंग के थे।

वह लड़का घर के अन्दर घुस कर दरवाजे के पास खड़ा हो गया। वह आदमी बोला — "आओ तुम्हारा स्वागत है।"

यह सुन कर वह उस घर के अन्दर चला गया। उसके बाद वहॉ व्हेल मछली का बहुत सारा मॉस उबाला गया और सबने खूब अच्छी तरह से खाना खाया।

पर उस लड़की ने उसकी तरफ बिल्कुल भी नहीं देखा। फिर वह लड़का अपना थैला उठाने बाहर गया जो वह बाहर छोड़ आया था। यह वही थैला था जो उसकी बहिन ने उसको घर से चलते समय दिया था। अन्दर ला कर उसने उस थैले को खोला।

उस थैले को खोलने पर उसने देखा कि उस थैले में तो बहुत ही कीमती चीज़ें थीं। वह लड़का बोला — "ये चीज़ें मैं आपको इस खाने के बदले में देता हूँ।" कह कर उसने वे सब चीज़ें उस देवता को दे दीं।

उस देवता ने उन सबको देखा और बोला — "यह तो बहुत ही कीमती खजाना है। तुमको इस खाने के लिये इतना सब देने की जरूरत नहीं है।

पर अब जब तुमने इसे मुझे दे ही दिया है तो मैं इसे अपने दूसरे घर ले जाऊँगा और वहाँ से तुमको इसके बदले में अपना खजाना ला कर दूँगा। और जहाँ तक इस व्हेल के माँस का सवाल है तुम जितना खाना चाहो इसमें से बिना कुछ दिये खा सकते हो।"

इतना कह कर वह उस लड़के का खजाना ले कर चला गया।

अब वह देवी और वह लड़का उस घर में अकेले रह गये। कुछ देर बाद वह देवी उस लड़के से बोली — "ओ लड़के, तुम मेरी बात ध्यान से सुनो जो मैं कहती हूँ। मैं भालू देवी हूँ और यह मेरा पति ड्रैगन देवता है।

वह जितना दूसरों से जलता है उतना कोई भी नहीं जलता इसी वजह से मैंने तुम्हारी तरफ देखा नहीं। क्योंकि मैं जानती हूँ कि अगर मैंने तुम्हारी तरफ देखा भी तो वह जलेगा।

तुम्हारे पास जो खजाना है वह तो देवताओं के पास भी नहीं है। इसी लिये वह तुम्हारे खजाने को देख कर बहुत खुश हो गया

और उसे अपने दूसर घर में ले गया है और अब तुमको वह नकली खजाना ला कर दे देगा।

इसलिये जब वह अपना नकली खजाना ला कर तुमको दे तो तुम उसको ऐसा बोलना कि "मैं अपना खजाना तुम्हारे खजाने से बदलना नहीं चाहता, मैं अपने इस खजाने से यह स्त्री खरीदना चाहता हूँ।"

थोड़ी देर बाद वह देवता दो खजानों के साथ लौटा – एक तो इस लड़के का खजाना और दूसरे उसका अपना खजाना। आ कर वह उस लड़के से बोला — "मैं दोनों खजाने साथ ले आया हूँ। अब हम दोनों ठीक से अपने खजाने एक दूसरे से बदल सकते हैं।"

लड़का बोला — "हालाँकि मैं आपका खजाना लेना चाहूँगा पर आपके खजाने से ज़्यादा मैं यह पसन्द करूँगा कि अपने खजाने के बदले में आपकी पत्नी ले लूँ। इसलिये इस खजाने के बदले में आप मुझे अपनी पत्नी दे दें।"

जैसे ही उसने यह कहा कि उसको ऊपर बहुत ज़ोर की गरज सुनायी पड़ी और पल भर में ही वह घर और वह देवता सब कुछ गायब हो गये और केवल वह और वह भालू देवी वहाँ खड़े रह गये।

वह जब होश में आया तो उसने देखा कि उसका खजाना तो वहीं पड़ा है।

वह भालू देवी बोली — "यह क्या हुआ है कि मेरा ड्रैगन पति गुस्से में गायब हो गया है इसी लिये उसने यह शोर मचाया था। अब हम और तुम एक साथ रह सकते हैं।"

उसके बाद वे दोनों आनन्द से एक दूसरे के साथ रहने लगे। इसी लिये भालू आधे आदमी की तरह होते हैं।

15 छोटा पौसेट[15]

ब्रिटेन की यह कहानी बहुत पुरानी और बहुत लोकप्रिय है। शायद तुमने सुनी भी हो पर अगर नहीं सुनी तो लो पढ़ो अब इसे हिन्दी में।

बहुत समय पुरानी बात है कि ब्रिटेन में एक पति पत्नी अपने सात बेटों के साथ किसी जंगल के पास रहते थे। वे लकड़ियॉ इकट्ठी कर बाजार में बेचते और उसी से अपना और अपने बच्चों का गुजारा करते।

उनका सबसे बड़ा लड़का दस साल का था और सबसे छोटा सात साल का। सारे लोग आश्चर्य करते कि इतने कम समय में उनके इतने ज़्यादा बच्चे कैसे हो गये पर यह ऐसे हुआ कि उनके ये बच्चे जुड़वॉ थे।

ये लोग बहुत गरीब थे और इन लोगों से अपने बच्चों का पालन ठीक से नहीं हो पा रहा था। पर अगर उनको सबसे ज़्यादा चिन्ता थी तो अपने सबसे छोटे बेटे की क्योंकि वह बहुत ही नाजुक और शान्त स्वभाव का था।

जब वह पैदा हुआ था तब वह केवल अॅगूठे के बराबर था सो उन्होंने उसका नाम छोटा पौसेट रख दिया था जिसका मतलब होता है "छोटा अॅगूठा"।

[15] Little Paucett.

हर समय लोग बेचारे छोटे पौसेट पर हॅसते रहते पर उसको इस बात की कोई परवाह नहीं थी। वह था बहुत अक्लमन्द। वह सोचता ज़्यादा था और बोलता कम था।

एक साल बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। पति पत्नी बहुत घबराये और अपने बच्चों से छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोचने लगे।

एक रात की बात है कि लकड़हारा अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठा था और बच्चे सो गये थे। वह लकड़हारा बड़े दुख के साथ बोला — "मैरी, देखो, हम अब अपने बच्चों को अपने साथ नहीं रख सकते क्योंकि मैं उनको अपने सामने भूखे मरते नहीं देख सकता।

मैं इन्हें कल जंगल में छोड़ आऊॅगा और यह काम बड़ी आसानी से हो सकता है। जब ये लोग लकड़ी के गट्ठर बॉधने में लगे होंगे तब हम लोग इनको वहीं छोड़ कर घर चले आयेंगे।"

यह सुन कर पत्नी की ऑखों में ऑसू आ गये। वह रोती हुई बोली — "धीरज रखो निकोलस, अभी इन्हें अपने साथ ही रखो। तुम्हारा दिल इन प्यारे प्यारे बच्चों को जंगल में अकेला छोड़ने को कैसे करता है?"

निकोलस ने समझाया कि वह अपनी गरीबी की वजह से उनको अपने साथ नहीं रख सकता था वरना बच्चों को तो वह भी बहुत प्यार करता था। फिर यह सोच कर कि वह भी उनको अपने सामने भूखों मरते नहीं देख पायेगी मैरी भी इस बात पर राजी हो गयी।

छोटे पौसेट ने अपने माता पिता की ये बातें कुछ सुनी कुछ नहीं सुनी परन्तु वह यह समझ गया कि कल कुछ होने वाला है। माता पिता के सोने के बाद वह चुपके से उठा और पास की नदी के किनारे से कुछ छोटे छोटे पत्थर बीन लाया और आ कर सो गया।

छोटे पौसेट ने रात वाली घटना किसी को नहीं बतायी। सुबह को वे सभी लोग लकड़ी लाने जंगल गये। जब वे लोग जंगल जा रहे थे तो छोटा पौसेट रास्ते में वे नदी से उठाये हुए पत्थर कुछ कुछ दूरी पर डालता गया।

चलते चलते वे लोग इतने घने जंगल में पहुँच गये कि जहाँ पर दस फुट की दूरी पर भी कोई किसी को नहीं देख सकता था।

लकड़हारे ने लकड़ियाँ काटनी शुरू कीं और बच्चों ने उनके गट्ठर बाँधने शुरू किये। माता पिता ने देखा कि बच्चे लकड़ियों के गट्ठर बाँधने में लगे हैं सो वे उनको वहीं छोड़ कर टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर घर चले आये।

कुछ देर बाद बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता का तो कहीं पता ही नहीं है। छोटे पौसेट को छोड़ कर सभी बच्चों ने रोना शरू कर दिया।

छोटे पौसेट ने अपने सब भाइयों को चुप कराया और बोला — "डरो नहीं, हमारे माता पिता हमें यहाँ छोड़ कर चले गये हैं मगर मैं तुम सबको घर वापस ले जाऊँगा। आओ, मेरे पीछे पीछे आओ।"

क्योंकि वह जानता था कि उन पत्थरों के सहारे वह अपने घर का रास्ता ढूँढ लेगा।

सो उसके सब भाई उसके पीछे पीछे चलते चलते उन पत्थरों के सहारे अपने घर वापस आ गये। परन्तु वे डर के मारे घर के अन्दर नहीं घुसे, घर के बाहर ही बैठे रहे।

लकड़हारा और उसकी पत्नी जैसे ही घर लौटे गॉव के मुखिया ने उन्हें दस सोने के सिक्के भिजवाये जो उसने कभी उन लोगों से उधार लिये थे। पर वे लोग क्योंकि उसको बिल्कुल ही भूल चुके थे इसलिये वे उस धन को देख कर बहुत खुश हुए।

लकड़हारे ने अपनी पत्नी को तुरन्त ही गोश्त की दूकान पर भेजा क्योंकि उन्होंने बहुत दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया था। उसकी पत्नी अपनी आवश्यकता से तीन गुना अधिक गोश्त ले आयी और उसे पकाया।

खाने के बाद पत्नी बोली — "काश, इस समय मेरे बच्चे यहॉ होते। पता नहीं मेरे बच्चे इस समय उस घने जंगल में कहॉ भटक रहे होंगे। कहीं उन्हें भेड़िया न खा गया हो। तुमने कितनी बेरहमी से मेरे बच्चों को जंगल में छोड़ दिया।"

यह बात वह बार बार कहती रही। आखिर लकड़हारे को गुस्सा आ गया तो उसने उसे पीटने की धमकी दी।

यह बात नहीं थी कि लकड़हारे को अपने बच्चों से प्यार नहीं था या अपने बच्चों को जंगल में छोड़ने का दुख नहीं था बल्कि यह

बात उसे कुछ ज़्यादा ही खल रही थी कि पत्नी इस बात के लिये केवल उसी को जिम्मेदार ठहरा रही थी। अन्त में वह एक बार ज़ोर से यह कह कर चुप हो गयी "मेरे बच्चों तुम कहॉ हो?"

यह सुन कर दरवाजे पर बैठे सभी बच्चों ने रोना शुरू कर दिया — "हम यहॉ हैं मॉ, हम यहॉ हैं।"

पत्नी अपने बच्चों की आवाज सुन कर बहुत ही खुश हुई और दौड़ी दौड़ी दरवाजे तक जा कर दरवाजा खोला तो अपने हर बच्चे को पुचकार कर खुशी से रो पड़ी।

फिर उसने अपने सब बच्चों को खाना खिलाया। सब बच्चों ने पेट भर कर खाना खाया और फिर सबने एक साथ बताया कि वे सब जंगल में कितना डर गये थे। माता पिता को बड़ी खुशी हुई कि उनके बच्चे वापस आ गये थे।

और यह खुशी तब तक चली जब तक वे सोने के सिक्के चले। परन्तु जैसे ही वह धन खत्म हो गया तो वे फिर परेशान हो गये। अबकी बार उन्होंने बच्चों को और ज़्यादा घने जंगल में छोड़ने का विचार किया।

यह बात भी छोटे पौसेट ने सुन ली। उसने इस समस्या को पहले की तरह ही सुलझाने का निश्चय किया पर इस बार ऐसा न हो सका। क्योंकि अबकी बार जब वह रात को उठा तो घर का दरवाजा बन्द था सो वह बेचारा चुपचाप आ कर सो गया।

सुबह मॉ ने जब नाश्ते के लिये सब बच्चों को रोटी दी तो छोटे पौसेट को लगा कि वह इस रोटी से वह काम कर सकता था जो उसने पत्थरों से किया था।

तो सुबह सब बड़े बच्चों ने तो अपनी रोटी खा ली पर पौसेट ने अपनी रोटी बचा ली। जब वे सब जंगल गये तो वह अपनी रोटी के छोटे छोटे टुकड़े रास्ते में गिराता गया।

अबकी बार उनके माता पिता उनको और भी ज़्यादा घने जंगल में ले गये। पिछली बार की तरह जब बच्चे लकड़ियों के गट्ठर बॉध रहे थे तो उनके माता पिता उनको जंगल में छोड़ कर घर चले आये।

जब बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता का कहीं अता पता नहीं है तो वे फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

छोटे पौसेट ने उनको फिर समझाया कि वह आते समय रोटी के टुकड़े गिराता आया था सो वे लोग उसी के सहारे फिर से घर वापस जा सकते हैं। पर जब छोटे पौसेट ने उन रोटी के टुकड़ों को ढूँढना शुरू किया तो उसे तो रोटी का एक भी टुकड़ा दिखायी नहीं दिया।

उन टुकड़ों को तो चिड़ियॉ खा गयी थीं। अब वे बड़ी कठिनाई में पड़े क्योंकि जितना ज़्यादा वे रास्ते की खोज में इधर उधर घूमते रहे उतना ही ज़्यादा वे जंगल में भटकते जा रहे थे।

अँधेरा होना शुरू हो गया था, तेज़ हवा भी चलने लगी थी और जंगली जानवरों की आवाजें जंगल को और भयानक बना रही थीं।

डर के मारे वे सब एक साथ बिना हिले डुले एक जगह पर बैठे हुए थे। इतने में बारिश भी होने लगी तो वे सबके सब भीग गये और डर और ठंड दोनों से कॉपने लगे।

फिर उन्होंने वहॉ से चलने का निश्चय किया। अँधेरी रात में बारिश के बाद वे जंगल में फिसलते फिसलते बच रहे थे। कभी उनका पैर गड्ढे में पड़ता तो कभी कॉटेदार झाड़ियों पर।

छोटा पौसेट बोला — "रुको भाइयो, मैं ज़रा देख लूँ अगर मुझे कहीं कुछ नजर आ जाये तो।"

कह कर वह एक पेड़ पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा। दूर कहीं उसको एक झिलमिलाती रोशनी दिखायी दी तो वह खुशी से नीचे उतर आया और अपने सभी भाइयों को उधर की तरफ ले चला।

काफी दूर जाने के बाद वे एक घर के पास आ गये। उन्होंने दरवाजा खटखटाया तो एक भली सी औरत ने दरवाजा खोला और उन बच्चों को अकेला देख कर पूछा — "अरे, इतनी रात में तुम लोग यहॉ कैसे? और यहॉ तुम कर क्या रहे हो? और क्या चाहते हो?"

पौसेट बोला — "हम लोग गरीब बच्चे हैं और जंगल में रास्ता भूल गये हैं। इस समय रात में ठहरने की जगह चाहते हैं।"

उस औरत ने देखा कि बच्चे बहुत ही सुन्दर और नेक हैं तो वह रोने लगी। फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे बच्चो, तुम यहॉ क्यों आये? यहॉ तो एक राक्षस रहता है जो छोटे छोटे बच्चों को खा जाता है।"

छोटा पौसेट बोला — "मॉ, जंगल में भी क्या भरोसा है कि हमको भेड़िया नहीं खा जायेगा। अच्छा है अगर हमें राक्षस ही खा जाये और फिर यह भी तो हो सकता है कि वह हमें दया कर के छोड़ ही दे।"

इस समय सभी भाई भीगे थे और ठंड से कॉप रहे थे। उनको इस हालत में देख कर उस औरत ने उन सबको अन्दर बुला लिया और रसोई में आग के पास बिठा दिया।

वहॉ उन लोगों को थोड़ा सा आराम मिला। उस आग पर राक्षस के खाने के लिये एक पूरी भेड़ भुन रही थी।

कुछ ही देर बाद राक्षस के भारी कदमों की आवाज सुनायी दी तो उस औरत ने बच्चों को पलंग के नीचे छिपा दिया और दरवाजा खोलने चली गयी।

राक्षस ने आ कर पूछा "खाना तैयार है?" और मेज पर बैठ गया। भेड़ अभी तक कच्ची थी परन्तु राक्षस को वही अच्छी लगी।

फिर उसने अपने बॉयी ओर को कुछ सूँघा और बोला — "मुझे आज यहॉ से आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

वह औरत बोली — "यह उस बछड़े की खुशबू होगी जो मैंने अभी अभी काटा और साफ किया है।"

"मैं फिर कहता हूँ कि मुझे आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है बछड़े की नहीं और तू कुछ सुन नहीं रही। यहॉ कुछ जरूर है।"

यह कह कर राक्षस अपनी मेज से उठा और सीधा पलंग के पास गया और उसके नीचे देखा तो उसको उस पलंग के नीचे सात बच्चे दिखायी दिये।

वह खुश हो कर बोला — "आहा, अब मुझे पता चला कि तू मुझे किस तरह धोखा देती है। चलो अच्छा हुआ ये बच्चे यहॉ हैं। एक दो दिन में मेरे यहॉ तीन राक्षस आने वाले हैं ये बच्चे उनके लिये अच्छा खाना है।"

गरीब बच्चे उस राक्षस के पैरों पर गिर कर अपनी जान की भीख मॉगने लगे। मगर उनके सामने तो एक कठोर राक्षस खड़ा था जिसके दिल में दया का नाम तक न था। वह राक्षस एक चाकू ले आया और उसे एक पत्थर पर घिस कर तेज़ करने लगा।

फिर उसने उन बच्चों में से एक बच्चे को पकड़ा और उसे मारने ही वाला था कि उसकी पत्नी बोली — "इसको अभी मारने की क्या जरूरत है कल तक इन्तजार करो क्योंकि अभी हमारे पास एक बछड़ा और दो भेड़ें और हैं।"

"ठीक है, ठीक है। इनको पेट भर कर खाना खिलाओ और सुला दो।" यह कह कर राक्षस चला गया।

वह औरत यह सुन कर बहुत खुश हुई कि कम से कम इस समय तो उसने बच्चे को बचा लिया। उसने उन बच्चों को खूब अच्छा खाना खिलाया पर वे बच्चे इतने डरे हुए थे कि वे बेचारे ठीक से खाना भी नहीं खा सके।

राक्षस फिर से शराब पीने बैठ गया। वह बहुत खुश था कि वह अब अपने मेहमानों की खातिरदारी अच्छी तरह से कर सकेगा। उसने दर्जनों गिलास शराब पी पी कर खाली कर दिये थे। फिर वह सोने चला गया।

इस राक्षस के सात लड़कियॉ थीं। वे सभी खूब गोरी और सुन्दर थीं क्योंकि उनको रोज ताजा मॉस खाने को मिलता था।

उनकी भूरी ऑखें बिल्कुल गोल थीं, मुड़ी हुई नाक थी, बड़े बड़े मुॅह थे और उनके बहुत तेज दॉत थे। वे बहुत जल्दी सो जाती थीं। वे सब एक ही पलंग पर सोतीं थीं और हमेशा उनके सिरों पर ताज रखा रहता था।

उन्हीं के कमरे में एक और बड़ा सा पलंग पड़ा हुआ था सो उस औरत ने उन सातों लड़कों को उस पलंग पर सुला दिया और फिर खुद भी सोने चली गयी।

छोटा पौसेट यह सब देख रहा था और सोच रहा था कि वह उस राक्षस से जरूर बदला लेगा। वह उठा और उसने राक्षस की लड़कियों के ताज उठा कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर

रख लिये और अपनी टोपियॉ राक्षस की लड़कियों को पहना दीं। ऐसा उसने इसलिये किया ताकि राक्षस धोखा खा जाये।

उसका यह सोचना ठीक था क्योंकि थोड़ी ही देर बाद राक्षस वहॉ आया। वह पहले लड़कों के बिस्तर की तरफ गया जहॉ छोटे पौसेट के सिवा सभी गहरी नींद सो रहे थे।

वहॉ उसने सोने के ताज देखे तो सोचा कि "शायद मैं रात को ज़्यादा पी गया था। वे बच्चे दूसरे पलंग पर सो रहे हैं।"

ऐसा सोच कर वह दूसरे पलंग के पास गया और वहॉ टोपियॉ देखीं तो सोचा — "हॉ अब मैं ठीक जगह पर आया हूँ। यहीं वे लड़के सो रहे हैं।" और तुरन्त ही उसने अपनी सातों लड़कियों का गला काट दिया और जा कर सो गया।

इधर पौसेट ने जैसे ही राक्षस के खर्राटों की आवाज सुनी। वह खुद उठा, उसने अपने भाइयों को उठाया और फिर वे सब धीरे से बगीचे की तरफ चले गये। रात भर वे भागते रहे। उनको यह ही नहीं पता था कि वे किस रास्ते पर जा रहे हैं।

सुबह जब राक्षस जागा तो अपनी पत्नी से बोला — "जाओ, कल रात जो बच्चे आये थे उन्हें तैयार करो।"

राक्षस की पत्नी बड़ी खुश हुई कि कम से कम अभी तक वे लड़के ज़िन्दा थे पर उसे आश्चर्य भी कम नहीं हुआ कि आज उसका पति बच्चों के प्रति इतना भला कैसे हो गया। उसको तो सपने में भी ख्याल नहीं था कि राक्षस के "तैयार करो" का क्या मतलब है।

वह तुरन्त दौड़ी दौड़ी कमरे में गयी और पछाड़ खा कर गिर पड़ी क्योंकि वहॉ तो उसके अपने बच्चे मरे पड़े थे।

उधर राक्षस गुस्सा हो रहा था कि उसकी पत्नी उन बच्चों को लाने में इतनी देर क्यों लगा रही थी सो वह भी उसकी सहायता के लिये उसके पास पहुॅचा। पर वहॉ पहुॅच कर वह भी अपनी पत्नी की तरह ही हक्का बक्का रह गया।

"ओह यह मैंने क्या किया। इसका बदला तो उन लड़कों को चुकाना ही पड़ेगा।" कहते हुए राक्षस ठंडा पानी ला कर अपनी पत्नी को होश में लाने की कोशिश करने लगा।

उसे होश में ला कर उसने उससे अपने जादुई जूते मॉगे ताकि जल्दी ही दौड़ कर वह उन लड़कों को पकड़ सके। उसकी पत्नी ने उसको उसके जादुई जूते ला दिये और वह उनको पहन कर उड़ चला और उसी जगह आ पहुॅचा जहॉ बच्चे छिपे हुए थे।

बच्चों ने राक्षस को देख लिया था जो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर अपना पैर रखता चला जा रहा था। छोटे पौसेट को एक गुफा दिखायी दे गयी सो वे सब उस गुफा में घुस गये।

राक्षस भी उनको ढूॅढते ढूॅढते थक गया था सो वह भी उसी चट्टान पर आराम करने के लिये बैठ गया जिस पहाड़ की गुफा में बच्चे छिपे हुए थे। थके होने की वजह से वह वहीं सो गया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा।

छोटा पौसेट अपने भाइयों से बोला कि अब उनको घर वापस चले जाना चाहिये क्योंकि वहॉ से उनका घर बहुत पास था और वे उसकी चिन्ता न करें वह अपने आप आ जायेगा। सो वे तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गये।

इधर छोटा पौसेट ऊपर पहाड़ी पर आया और उसने धीरे से राक्षस के जादुई जूते उसके पैरों से खींच लिये। वे जूते पौसेट के लिये बहुत बड़े थे परन्तु क्योंकि वे जूते जादू के थे इसलिये वे उसके पैरों में ठीक आ गये।

वह उन जूतों को पहन कर राक्षस के घर गया जहॉ उसने उस की पत्नी को रोते देखा। वह बेचारी अपने बच्चों के मर जाने पर बहुत दुखी थी और रो रही थी।

छोटा पौसेट उससे बोला कि राक्षस बहुत बड़े खतरे में है क्योंकि उसे चोरों के एक बहुत बड़े गिरोह ने पकड़ लिया है और वे उसे मारने वाले हैं।

अगर वह अपने पास से सारा सोना चॉदी दे दे तो वह बच सकता है इसी लिये उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और सबूत के तौर पर उसने अपने जूते उसको पहना दिये हैं।

यह सुन कर वह भली औरत बहुत डर गयी सो उसने सब कुछ निकाल कर पौसेट को दे दिया।

राक्षस का सारा सोना चॉदी ले कर पौसेट अपने घर आ गया। उसके माता पिता उसको देख कर बहुत खुश हुए और फिर वे सब उस राक्षस के धन से बहुत दिनों तक आराम से रहे।

16 तीन बेवकूफ़[16]

एक बार की बात है कि एक किसान अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहता था। एक बहुत ही सुन्दर नौजवान उस लड़की से बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था।

एक रात वह नौजवान उस लड़की का हाथ मॉगने के लिये उस किसान के घर आया तो उनके घर में एक बहुत ही बेवकूफी की घटना घट गयी।

घर वालों ने अपनी बेटी को पीने के लिये शराब लाने के लिये एक घड़ा ले कर नीचे वाले कमरे में भेज दिया।

वहॉ जा कर उस लड़की की निगाह ऊपर पड़ी तो उसने देखा तो वहॉ के लकड़ी के एक लट्ठे में एक कुल्हाड़ी अटकी हुई थी।

अचानक उसके दिमाग में आया — "ओह नहीं। अगर मैं और वह शादी कर लें तो? और फिर हमारे एक बेटा हो तो? और फिर वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये तो?

और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये तो? और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये तो? उफ यह सब कितना दुखदायी होगा।"

[16] Three Sillies.

यह सोच कर वह वहीं फर्श पर बैठ गयी और रोने लगी। जब वह फर्श पर बैठी तो शराब निकल कर नीचे फर्श पर बिखरने लगी।

जब काफी देर तक बेटी नीचे के कमरे से शराब ले कर नहीं आयी तो मॉ को चिन्ता हुई। वह उसको देखने के लिये नीचे गयी तो यह देख कर उसको भी बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसकी बेटी वहॉ फर्श पर बैठी रो रही है और शराब सब तरफ बिखरी पड़ी है।

कुछ भी खराब न देख कर मॉ की समझ में ही नहीं आया कि उसकी बेटी क्यों रो रही थी सो उसने उससे पूछा — "बेटी, तुम यहॉ बैठी बैठी क्यों रो रही हो?"

बेटी बोली — "ज़रा ऊपर तो देखो मॉ। तुम वह कुल्हाड़ी देख रही हो न? क्या हो अगर मेरी और उसकी शादी हो जाये, फिर क्या हो अगर हमारे एक बेटा हो।

और फिर जब वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये, और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये, और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये? तो यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब मॉ ने यह सब सुना तो उसको भी लगा कि उसकी बेटी ठीक कह रही थी। यह सोच कर वह भी वहीं बैठ कर रोने लगी

— "ओह, यह तो तुम ठीक कह रही हो बेटी। यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब बेटी और मॉ दोनों ही कमरे में से शराब ले कर वापस नहीं आयीं तो पिता उन दोनों को देखने के लिये नीचे गया कि आखिर मामला क्या है।

वहॉ जा कर यह देख कर उसको भी बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसकी पत्नी और उसकी बेटी दोनों ही वहॉ फर्श पर बैठी रो रही हैं और शराब सब तरफ बिखरी पड़ी है।

कुछ भी खराब न देख कर पिता की समझ में भी नहीं आया कि वे दोनों वहॉ बैठी क्यों रो रही थीं सो उसने उनसे पूछा — "तुम लोग यहॉ बैठी क्यों रो रही हो?"

उसकी पत्नी बोली — "तुम ऊपर देखो ज़रा। तुम वह कुल्हाड़ी देख रहे हो न? क्या हो अगर मेरी बेटी और उसकी शादी हो जाये, फिर क्या हो कि अगर उनके एक बेटा हो।

और फिर जब वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये, और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये, और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये तो? यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब पिता ने यह सब सुना तो उसको भी लगा कि उसकी पत्नी और बेटी ठीक ही कह रही थीं। यह सोच कर वह भी वहीं बैठ

कर उनके साथ रोने लगा — "ओह, यह सब सचमुच में कितना दुखदायी होगा।"

बैठक में से जब सब उठ कर चले गये और जब बहुत देर तक कोई भी नहीं लौटा तो वह नौजवान यह देखने के लिये नीचे के कमरे में पहुँचा कि आखिर सब गये कहाँ।

वह जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि पिता, माता और बेटी तीनों वहाँ बैठे रो रहे हैं और शराब चारों तरफ बिखरी पड़ी है।

इसके अलावा उसको और कुछ खास दिखायी नहीं दिया तो उसको भी बड़ा ताज्जुब हुआ और उसकी समझ में नहीं आया कि वे सब वहाँ बैठे बैठे क्यों रो रहे थे सो उसने भी उन सबसे पूछा — "आप सब यहाँ बैठे क्यों रो रहे हैं?"

पिता बोला — "ज़रा ऊपर देखो। तुम वह कुल्हाड़ी देख रहे हो न? क्या हो अगर तुम्हारी और मेरी बेटी की शादी हो जाये, फिर क्या हो अगर तुम्हारे एक बेटा हो।

और फिर जब वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये, और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये, और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये तो? यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब उस नौजवान ने यह सब सुना तो वह मुस्कुराया। वह आगे बढ़ा, उसने उस लकड़ी के लट्ठे में से वह कुल्हाड़ी निकाली और

पिता के हाथ में थमा दी और बोला — "यह लीजिये यह कुल्हाड़ी। अब यह किसी के ऊपर नहीं गिरेगी।"

वह फिर बोला — "मैं बहुत सारी जगह घूमा हूँ पर मैंने ऐसी बेवकूफी की बात कहीं नहीं सुनी। मैं जा रहा हूँ और जब मुझे आप जैसे तीन बेवकूफ और मिल जायेंगे मैं तभी वापस आ कर आपकी बेटी से शादी करूँगा।" इतना कह कर वह घर के बाहर चला गया।

बाहर जा कर उसने अपना घोड़ा सजाया और अपने लम्बे सफर पर चल दिया।

जब वह कुछ सुस्ताने के लिये रुका तो उसने देखा कि एक स्त्री एक गाय को एक सीढ़ी पर चढ़ने के लिये पीछे से धक्का दे रही है और वह सीढ़ी उसके मकान के सहारे खड़ी है।

उस नौजवान ने पूछा — "माँ जी आप यह क्या कर रही हैं?"

वह बोली — "मेरी छत पर घास बहुत लम्बी हो गयी है। मैं इस गाय को ऊपर ले जा रही हूँ ताकि यह वह घास खा सके।"

वह बोला — "पर आप घास काट कर उसको नीचे क्यों नहीं फेंक देती ताकि यह वह घास खा सके।"

पर वह स्त्री तो सुनने वाली थी नहीं। उसने गाय को ऊपर धक्का दे दिया, उसके गले से एक रस्सी बाँध दी और उस रस्सी का एक सिरा चिमनी के रास्ते नीचे फेंक दिया।

फिर वह नीचे आ गयी और नीचे आ कर उसने उस रस्सी का वह सिरा अपनी कलाई से बॉध लिया ताकि अगर उसकी गाय छत के किनारे के काफी पास तक पहुँच जाये तो उसको पता चल जाये।

जब उस स्त्री ने उस नौजवान की बात नहीं मानी तो वह वहॉ से चल दिया। जैसे ही वह नौजवान वहॉ से चला तो गाय ने छत के किनारे से नीचे पैर रखा और ज़ोर से रॅभा कर नीचे गिर पड़ी।

गाय के रॅभाने से वह स्त्री भी चिल्लायी और रस्सी के सहारे ऊपर खिंचती चली गयी क्योंकि गाय भारी थी और स्त्री हल्की थी। उस स्त्री के पड़ोसी उस स्त्री की सहायता करने दौड़े पर वे कुछ नहीं कर सके।

वह नौजवान जाते जाते सोचता रहा कि यह स्त्री भी अपने किस्म की एक ही बेवकूफ थी।

वहॉ से वह आगे चला और रात तक चलता रहा। रात होने पर वह एक सराय में सोने के लिये रुका। सुबह को वह अपने बराबर के कमरे में एक अजीब सी आवाज सुन कर उठ बैठा।

"पैर में आओ, पैर में आओ, बाम, आउ। पैर में आओ, पैर में आओ, बाम, आउ।"

उसने जा कर बराबर के कमरे का दरवाजा खटखटाया और सावधानी से दरवाजा खोला तो उसने देखा कि एक अजनबी कमरे

में दूसरी तरफ हवा में कूद कर जा रहा था जहॉ आलमारी के दरवाजे पर उसकी पैन्ट टॅगी हुई थी।

वह हवा में कूदा और उस आलमारी की तरफ भागा और चिल्लाया "बाम, पैर में आओ, पैर में आओ, आउ।"

उस नौजवान ने पूछा — "यह तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं अपनी पैन्ट पहन रहा हूॅ पर वह मुझे बहुत तकलीफ दे रही है। सुबह सुबह रोज ही उसको पहनने में मुझे बड़ी तकलीफ होती है।"

नौजवान हॅस कर बोला — "तुम अपनी पैन्ट को उस दरवाजे से उतार कर पलंग पर क्यों नहीं बैठ जाते और उसके एक एक पॉयचे को एक एक बार में एक एक टॉग में डाल कर क्यों नहीं पहनते?"

"मैंने तो यह कभी सोचा ही नहीं था।"

नौजवान ने सोचा तो यह था दूसरा बेवकूफ आदमी और वह वहॉ से भी चल दिया। चलते चलते वह एक गॉव में पहुॅचा। शाम हो गयी थी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि गॉव वाले इधर उधर भाग रहे हैं। उनके हाथों में सादी झाड़ू और पत्ते निकालने वाली नुकीली झाड़ू थीं।

नौजवान ने पूछा — "यहॉ क्या हो गया है? आप सब इधर उधर क्यों भाग रहे हैं?"

एक आदमी बोला — "चॉद इस तालाब में गिर पड़ा है सो हम लोग उसको निकालने जा रहे हैं।"

नौजवान ज़ोर से हॅसा और बोला — "देखो ऊपर देखो। चॉद तो तालाब में नहीं है चॉद तो अभी भी आसमान में ही है। तालाब में तो केवल असली चॉद की परछाई है।"

पर उन्होंने सुना ही नहीं और चॉद को तालाब में से निकालने की नाकाम कोशिश करते रहे।

वह नौजवान हॅसता हुआ वहॉ से चला गया — "अब तो तीन से भी ज़्यादा बेवकूफ लोग हो गये। मुझे लगता है कि अब मुझे अपने उन तीन बेवकूफों के पास वापस चले जाना चाहिये ताकि हम सब हमेशा हमेशा के लिये खुशी खुशी रह सकें।"

17 बर्तन जो चलता नहीं[17]

एक बार एक बहुत बड़ा बर्तन एक दूकान की एक खिड़की में रखा हुआ था। वह लोहे का बर्तन था और उसको खाना पकाने के लिये इस्तेमाल करना था।

एक आदमी उस रास्ते से गुजर रहा था तो उसने वह बर्तन उस खिड़की में रखा देखा। उसने सोचा — "मेरी पत्नी इस बर्तन को देख कर बहुत खुश होगी। मैं इसको उसके लिये खरीद लेता हूँ।"

यह सोच कर वह उस दूकान में गया और उस बड़े बर्तन को खरीद लिया। खरीद लेने के बाद उसने उसे उठाया और उसको दूकान के बाहर ले चला।

पर ओह, वह बर्तन तो बहुत भारी था। सो उसने उसको अपनी पीठ पर रख लिया और अपने घर की तरफ ले चला।

पर वह बर्तन तो बहुत ही भारी था उस बर्तन को अपनी पीठ पर रखे रखे उसकी पीठ भी दुखने लगी। उसकी बाँहें दुखने लगीं और उसकी टाँगें भी दुखने लगीं।

आखिर वह आराम करने के लिये रास्ते में रुक गया। उसने वह बड़ा बर्तन सड़क के किनारे रख दिया और एक पेड़ की छाया में बैठ कर सुस्ताने लगा।

[17] The Pot Thar Would Not Walk

पहले उसने अपनी एक बॉह मली, फिर दूसरी बॉह मली। फिर उसने अपनी पीठ मली। फिर उसने अपनी दोनों टॉगों की मालिश की।

अब उसने अपने उस बड़े बर्तन की तरफ देखा और बोला — "यह ठीक नहीं है। मैं तुमको उठाते उठाते थक गया हूँ मैं अब तुमको उठा कर और आगे नहीं ले जा सकता।"

उसने फिर से उस बर्तन की तरफ देखा तो उसने देखा कि उस बर्तन की तो तीन टॉगें थीं।

वह उस बर्तन से बोला — "तुम्हारी तो तीन टॉगें हैं, मेरी तो केवल दो ही टॉगें हैं। सो बजाय इसके कि मैं तुमको उठा कर ले चलूँ तुमको मुझे उठा कर ले जाना चाहिये।" वह बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वह बर्तन तो हिल कर भी नहीं दिया।

अब क्योंकि वह बर्तन धूप में रखा हुआ था इसलिये वह अब तक काफी गर्म भी हो गया था।

आदमी बोला — "मुझे मालूम है तुम अभी इस समय चलने के लायक नहीं हो क्योंकि तुम बहुत गर्म हो। और मैं तुमको उठा कर सारा दिन चल नहीं सकता।

तो ऐसा करते हैं कि मैं अपने घर केवल अपनी दो टॉगों पर ही चल कर जाता हूँ। जब तुम ठंडे हो जाओ तो तुम अपनी तीन टॉगों पर चल कर घर आ जाना।"

फिर उसने उस बर्तन को अपने घर का रास्ता बताया और खुद वह अपने घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँच कर वह अपनी पत्नी से बोला — "मैंने तुम्हारे लिये एक भेंट खरीदी है। मैंने तुम्हारे लिये खाना पकाने के लिये एक बहुत बड़ा बर्तन खरीदा है।"

पत्नी बोली — "पर मुझे तो वह बर्तन कहीं दिखायी नहीं दे रहा। कहाँ है वह? क्या तुमने सचमुच ही मेरे लिये खाना पकाने के लिये एक बहुत बड़ा बर्तन खरीदा है या फिर ऐसे ही मुझे बहका रहे हो?"

आदमी बोला — "नहीं नहीं मैं तुमको बहका नहीं रहा मैंने वाकई तुम्हारे लिये एक बहुत बड़ा पकाने वाला बर्तन खरीदा है। पर वह बड़ा बर्तन बहुत भारी था। उसको उठाते उठाते मेरी बाँहें, टाँगें, पीठ सब दर्द करने लगे।

फिर मैंने देखा कि उसकी तो तीन टाँगें थीं और मेरे तो केवल दो ही टाँगें थीं सो मैंने उसको अपने घर का रास्ता बताया और उसको यहाँ आने के लिये कह कर उसे वहीं छोड़ आया। वह बस यहाँ किसी समय भी आता ही होगा।"

आदमी की पत्नी मुस्कुरायी। वह अपने पति को बहुत प्यार करती थी पर उसका पति अपने काम करने में हमेशा ही कुछ न कुछ बेवकूफियाँ किया करता था।

सो उसने अपने पति को भेंट लाने के लिये धन्यवाद दिया। फिर उसने गर्म गर्म डबल रोटी का एक टुकड़ा काटा और उस पर ताजा मक्खन लगाया और उसको देते हुए बोली — "तुम यहाँ इस खुशी पर बैठो, यह डबल रोटी खाओ और थोड़ा आराम करो।"

फिर उसने एक प्याले में ठंडा दूध पलटा और उसको अपने पति को दे कर वह उस बड़े बर्तन को लेने वहाँ चली गयी जहाँ वह उस बर्तन को छोड़ कर आया था।

जब तक वह आदमी खा पी कर चुका तब तक उसकी पत्नी उस बड़े बर्तन को ले कर घर आ गयी थी।

वह बोला — "मुझे खुशी है कि तुम इस बर्तन को लेने चली गयीं। मुझे तो चिन्ता हो गयी थी कि कहीं यह भाग न जाये और फिर हमको यह कहीं मिले ही नहीं।"

18 ऐकन ढोल[18]

यह लोक कथा हमने ब्रिटेन के स्कौटलैंड देश से ली है। इसमें एक आदमी का नाम ही ऐकन–ड्रम है जो लोगों को काम करते समय गाने के लिये कहता है और उनके काम को सरल बना देता है। यह आदमी सबको सबके काम में सहायता करने की प्रेरणा देता है।

क्या कभी तुमने किसी आदमी को काम करते हुए गाते हुए सुना है? अगर सुना है तो वह आदमी जरूर ही कोई खुश आदमी रहा होगा और हो सकता है कि जब वह बच्चा हो तो उसने ऐकन–ड्रम देखा भी हो क्योंकि ऐकन–ड्रम केवल वे ही लोग देख सकते हैं जो खुश हैं और काम करना पसन्द करते हैं खास कर के अपने बचपन में।

एक बार की बात है कि बहुत दिन पहले स्काटलैंड के एक छोटे से गॉव में आदमियों और औरतों को बहुत बहुत बहुत ज़्यादा काम करना पड़ता था।

इससे ऐसा लगता था कि जैसे वे हमेशा ही थके हुए रहते थे, हमेशा ही शिकायत के मूड में रहते थे और कभी उनको अपने बच्चों के साथ खेलने का भी मौका नहीं मिलता था।

[18] Aiken Drum

किसान कहता — "मैं अपना सारा अनाज बरफ आने से पहले न तो काट सकूँगा और न ही उसमें से दाने निकाल सकूँगा तो मेरा अनाज तो ऐसे ही खेत में ही सड़ जायेगा और मेरे पास अपनी जरूरत का सामान खरीदने के लिये भी पैसा नहीं होगा। काश, मुझे अपने काम में कोई सहायता मिल जाती।"

दूध वाला कहता — "मेरे पास दुहने के लिये बहुत सारी गायें हैं। जब तक मैं उनके सामने खाने के लिये ताजा भूसा रखता हूँ और दूसरा काम करता हूँ तब तक उनको दूसरी बार दुहने का समय हो जाता है। काश मेरे पास मेरा काम करने के लिये कोई सहायता होती।"

डबल रोटी बनाने वाला कहता — "मैं हर रोज गॉव के हर आदमी को लिये डबल रोटी, केक, बिस्किट बनाने के लिये जल्दी से जल्दी उठता हूँ पर फिर भी तीसरे पहर तक वे सब खत्म हो जाते हैं।

उसके बाद मुझे अपने ग्राहकों को खाली हाथ भेजना पड़ता है क्योंकि मैं उनके लिये काफी चीज़ें नहीं बना पाता। काश मेरे पास मेरा काम करवाने के लिये कोई सहायता होती।"

मॉ कहती — "मैं रोज सुबह सवेरे जल्दी उठती हूँ और रोज रात को बच्चों की देखभाल कर के, कपड़े धो कर, खाना बना कर और घर के दूसरे काम कर के इतनी देर से सोती हूँ कि मुझे अपने

बच्चों के साथ खेलने का समय भी नहीं मिल पाता। काश मेरा काम कराने के लिये मेरे पास कोई सहायता होती।"

इससे ऐसा लगता कि सभी थके थके थे और अपनी अपनी ज़िन्दगियों से नाखुश थे।

एक दिन जब वे लोग ऐसी बातें कर रहे थे तो उन्होंने दूर कहीं गाने की आवाज सुनी — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?"

उन्होंने सड़क पर इधर उधर देखा पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया। याद है न तुम्हें? जब कोई नाखुश होता हो या उसको अपना काम पसन्द नहीं होता तो वह ऐकन–ड्रम को कभी नहीं देख सकता था।

उन्होंने कई बार इधर उधर देखा पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया। उनको तो बस थम्प थम्प की आवाज सुनायी दे रही थी जैसे कोई चम्मच या चमचा किसी ढोल पर मार रहा हो।

औरतें और बच्चे भी घर से बाहर निकल आये। वे बोले — "हमको किसी के गाने और ढोल बजाने की आवाज सुनायी पड़ रही है।" और यह कह कर उन्होंने भी सड़क के इधर उधर देखा।

उन सबने देखा और उन सबने सुना तो — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?" पर किसी को दिखायी कुछ भी नहीं दे रहा था।

तभी अचानक एक खुश लड़की जो अपनी माँ के कामों में हाथ बँटाना पसन्द करती थी एक तरफ को इशारा करते हुए चिल्लायी — "देखो देखो, वह एक अजीब सा आदमी सड़क पर इधर ही चला आ रहा है।"

सब लोगों ने उधर देखा जिधर उस लड़की ने इशारा किया था पर उनको तो उधर कुछ भी दिखायी नहीं दिया। उन्होंने उस लड़की को डाँटा कि जब उनको कुछ दिखायी नहीं दे रहा तो उस लड़की को भी कुछ दिखायी नहीं दे रहा होगा।

लेकिन तभी एक लड़का जो अपने पिता के खेत पर खुशी से उसकी सहायता करता था चिल्ला कर बोला — "मैं भी उस अजीब से आदमी को देख पा रहा हूँ। वह उतना ही बड़ा है जितने हम। वह एक बड़ा आदमी है पर वह साइज़ में बच्चे जैसा दिखायी देता है।"

दूसरा लड़का बोला — "वह सबसे पूछ रहा है अगर किसी के पास कोई काम हो जो उसको करवाना हो तो वह उससे करवा ले। वह कह रहा है कि मुझे काम करना अच्छा लगता है। मुझे काम करने में आनन्द आता है।

जब मैं काम करने में सहायता करता हूँ तब हर एक के पास एक दूसरे के साथ खेलने के लिये बहुत समय होता है। वह तो बस यही गाता ही जा रहा है — "क्या तुम्हारे पास ऐकन-ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे पास ऐकन-ड्रम के लिये कोई काम है?"

एक और लड़का जिसने कभी अपने घर के किसी काम में सहायता नहीं की थी बोला — "मुझे तो वह कहीं दिखायी नहीं दे रहा। वह कैसा दिखायी देता है।"

दूसरे अच्छे बच्चे जो घर में सहायता करते थे उन्होंने सबने उसको एक जैसा ही बताया सो लोग समझ गये कि वे सच बोल रहे थे।

उन्होंने बताया कि वह लम्बाई में छोटा है और पतला दुबला है। वह अच्छा मजबूत लगता है। उसकी ऑखें बड़ी बड़ी और गोल हैं और बहुत काली भी। उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान है।"

तभी एक बूढ़ी दादी सड़क पर आती दिखायी दी। उसने भी उसका गाना सुना पर वह उतनी जल्दी जल्दी नहीं चल पा रही थी जितनी जल्दी कि दूसरे लोग अपना घर छोड़ कर वह गाना सुनने चले आ रहे थे।

वह बुढ़िया बोली — "यह छोटा आदमी कत्थई रंग का है। जब मैं छोटी थी तब मेरी मॉ मुझे कत्थई रंग वाले आदमियों के बारे में बताया करती थी।

ये कत्थई रंग वाले आदमी छोटे होते हैं और काम करना पसन्द करते हैं। अगर तुम इस कत्थई रंग वाले आदमी के साथ ठीक से बरताव करोगे तो यह तुम्हारे कामों में सहायता करा देगा।

इसके अलावा सभी को एक दूसरे की सहायता करनी पड़ेगी तभी हर आदमी को आराम करने का और आनन्द मनाने का समय मिल पायेगा।"

इस तरह से वह ऐकन–ड्रम उस छोटे से गॉव में रहने के लिये आ गया। रोज रात को वह बुढ़िया ऐकन–ड्रम के लिये दूध और डबल रोटी रखती और सुबह तक वह गायब हो जाती।

केवल बच्चों ने ही उस कत्थई रंग वाले आदमी को देखा पर दूसरे लोगों ने तो केवल अपना काम खत्म होते ही देखा।

किसान जान गया कि वह कत्थई रंग वाला आदमी उसकी सहायता कर रहा था इसी लिये उसका काम अब जल्दी जल्दी खत्म हो रहा था। इसलिये जब वह अपना अनाज काट रहा था और उसमें से दाने निकाल रहा था तो उसने खुशी से सीटी बजानी शुरू कर दी।

हालॉकि उसने बहुत देर तक और बहुत मेहनत से काम किया फिर भी वह सारा समय बहुत खुश था। उसने सारा अनाज अपने अनाजघर में रख दिया। बाद में उसने उसको बेच कर अपनी सब जरूरतों को पूरा किया।

दूध वाला भी जान गया था कि उसको वाकई वह कत्थई रंग वाला आदमी सहायता कर रहा था। इस खुशी में कि अब उसका काम जल्दी खत्म हो जायेगा जब वह अपनी गायों को खाना खिला रहा था तो गुनगुनाता भी जा रहा था।

उसके गुनगुनाने से उसकी गायें ठीक से खड़ी हुई थीं और इस से वह उनका दूध जल्दी जल्दी निकाल पा रहा था।

डबल रोटी बनाने वाले की सब चीज़ें अब ज़्यादा अच्छे से फूल रही थीं। उसकी केक अब उस तरह से दबी दबी नहीं बन रहीं थीं जैसे वे पहले बना करती थीं जब वह अपने खराब मूड में काम किया करता था।

अब वह खुश था और पहले से ज़्यादा चीज़ें बना रहा था जिससे वह सबकी ज़रूरतों को पूरा कर सकता था और उन गरीबों को भी दे सकता था जिनको खाने की जरूरत थी। इससे उसको पूरा भरोसा था कि वह कत्थई रंग वाला आदमी जरूर ही उसकी सहायता कर रहा था।

मॉ भी हॅसती थी क्योंकि उसको लगता था कि वह कत्थई रंग वाला आदमी उसकी सहायता कर रहा था। वह इतनी खुशी से अपना सारा काम करती थी कि उसके बच्चे भी अब उसके साथ खुशी से काम कराते थे।

अब बिस्तर जल्दी बिछ जाते थे, खाना मेज पर जल्दी लग जाता था, बर्तन जल्दी धुल जाते थे क्योंकि अब घर के सब लोग ये सब काम करते थे इसलिये अब उसको अपने बच्चों के साथ खेलने के लिये काफी समय मिल जाता था।

इस तरह ऐकन–ड्रम वाकई काम कर रहा था। वह गॉव में थोड़ा थोड़ा काम सबके लिये करता था पर काफी काम तो सारे लोग अपने आप ही करते थे।

यह इसलिये क्योंकि अब वे अपना काम खुशी से करते थे और काम करते समय गुनगुनाते भी रहते थे। जब लोग अपना काम खुश हो कर करते हैं तो काम अच्छा और ज़्यादा होता है और थकान भी नहीं होती।

ऐकन–ड्रम बच्चों को भी काम करने के लिये उकसाता था सो वे अपने माता पिता की उनके कामों में सहायता करते थे और जब उन बच्चों का काम खत्म हो जाता था तो वह उनके साथ खेलता भी था।

एक दिन उस शहर के मेयर ने अपनी पत्नी से कहा — "यह ऐकन–ड्रम तो शहर में सभी के लिये बहुत अच्छा काम कर रहा है। हमको भी उसके लिये कुछ अच्छा करना चाहिये।" उसकी पत्नी तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गयी।

मेयर की पत्नी ने ऐकन–ड्रम के लिये बच्चों के नाप की हरे रंग की एक छोटी टोपी बनायी। बच्चों ने कहा कि हॉ यह तो हमारे ही नाप की टोपी है। फिर उसने उसके पहनने के लिये एक कत्थई रंग का गर्म कोट भी बनाया।

फिर उसने उनको उस दादी को दे दिया ताकि वह उनको अपने दूध और डबल रोटी के साथ ही रख दे जो वह रोज रात को उस ऐकन–ड्रम के लिये रखती थी।

बुढ़िया बोली — "ये कत्थई रंग के लोग उन लोगों के लिये काम करते हैं जिनको काम से प्यार है। उनको कभी कुछ देने की कोशिश मत करना। अगर तुम उनके काम के लिये कुछ देने की कोशिश करोगे तो उनको लगेगा कि वह बेवकूफ हैं और वह छोड़ कर चले जायेंगे।"

मेयर और उसकी पत्नी बोले — "जब वह हम लोगों के लिये इतना अच्छा है तो हमको भी तो उसके लिये कुछ अच्छा करना चाहिये न।

इसके अलावा आज शहर में हर आदमी कितना खुश है और कितना ज़्यादा काम कर रहा है कि अब उस कत्थई रंग वाले के लिये भी काम बहुत कम रह गया है।"

यह सुन कर दादी ने वे कपड़े अपनी डबल रोटी और दूध के साथ ही रख दिये। ऐकन–ड्रम ने अपने खाने के साथ साथ उस रात उसके लिये बनाया हुआ कत्थई कोट और हरी टोपी भी वहॉ देखे।

उसने अपने मन में कहा — "ओह कितने सुन्दर हैं ये छोटी सी हरी टोपी और यह कत्थई गर्म कोट।" वह जान गया था कि वे उसी के लिये थे। "पर अब मुझे यहॉ से जाना चाहिये अब मैं यहॉ और ज़्यादा नहीं रुक सकता।"

और उसने वह शहर छोड़ दिया और सड़क पर गाता हुआ चल दिया — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?"

पहले तो वे बड़े लोग जिन्होंने ऐकन–ड्रम को देखा नहीं था सोचते रहे कि वह अभी भी उनकी सहायता कर रहा था सो वे खुशी खुशी गाते गुनगुनाते हुए अपना काम करते रहे।

और अब क्योंकि वे खुश थे तो उनका काम अभी भी बहुत सारा और बहुत आसानी से हो रहा था पर बच्चों को पता था कि ऐकन–ड्रम उनका गॉव छोड़ कर चला गया है पर फिर भी वे घर में उसी तरह से काम करते रहे जैसे ऐकन–ड्रम के सामने करते थे।

वे चाहते थे कि घर का काम अगर जल्दी हो जायेगा तो उनके माता पिता उनके साथ खेल सकेंगे। कुछ बच्चे बाद में भी ऐकन–ड्रम और दूसरे कत्थई रंग वाले आदमियों के लिये जो इधर उधर घूमते रहते थे दूध और डबल रोटी रखते रहे।

जब वह दूध और डबल रोटी वहॉ से चला जाता था तो उनके माता पिता कहते थे कि उन्हें कोई कुत्ता या बिल्ली खा गयी पर बच्चे तो हमेशा ही ऐकन–ड्रम का नाम लेते थे।

19 डरा हुआ दर्जी[19]

यह लोक कथा भी ब्रिटेन के स्काटलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

स्काटलैंड के रहने वाले एक लेयर्ड मैकडोनाल्ड ने अपना यह नियम बना रखा था कि रात को सोने से पहले वह हर रोज किले की दीवारों पर चलता था। उसका कहना था कि इससे उसको रात को नींद अच्छी आती थी।

एक बार जब वह इस तरह किले की दीवार पर चल रहा था तो उसको अपने शरीर में दो जगह कॅपकॅपी महसूस हुई – एक बाहर की तरफ और एक अन्दर की तरफ।

जो कॅपकॅपी उसको बाहर की तरफ महसूस हुई वह तो ठंडी रात की वजह से थी। ठंडी हवा उसके जैकेट में से हो कर अन्दर तक पहुॅच रही थी। वह थोड़ा बुड्ढा हो गया था इसलिये अब उसको ठंड पहले के मुकाबले में ज़्यादा भी लगने लगी थी।

पर दूसरी कॅपकॅपी उसको दूर गॉव के चर्च की एक खिड़की से आती अजीब सी रोशनी देख कर हुई। यह चर्च जहॉ वह खड़ा हुआ था वहॉ से कुछ मील की दूरी पर था।

उसको लगा कि उधर से उसने किसी के रोने और चिल्लाने की आवाज भी सुनी। उसने यह भी सुन रखा था कि चर्च के पास की

[19] The Haunted Tailor.

जगह डरावनी थी। हर रोज वहॉ शाम को सूरज छिपने के बाद एक भयानक राक्षस आया करता था।

जब मैकडोनाल्ड वहॉ कॉपता सा खड़ा था तो उसके दिमाग में एक विचार आया जिससे वह दोनों तरह की कॅपकॅपाहट से छुटकारा पा सकता था।

वह अपनी जैकेट को एक दूसरी तरह के कपड़े यानी पैन्ट से बदल लेगा। यह पैन्ट रात को ठंडी हवाओं में घूमने के समय ज़्यादा गर्म रहेगी।

तो यह तो उसको बाहर से पैदा करने वाली कॅपकॅपाहट से बचायेगी और दूसरी अन्दर वाली कॅपकॅपाहट के लिये वह उस दर्जी की सहायता लेगा जो उसकी यह पैन्ट सिलेगा।

सो अगले दिन मैकडोनाल्ड ने अपने दर्जी को किले में बुलाया और उससे कहा — "तुम पैन्ट सिलने के लिये मेरा नाप ले लो और फिर उसको सिलने के लिये कहीं किसी खास जगह चले जाओ।"

दर्जी की कुछ समझ में नहीं आया तो उसने पूछा — "जनाब, मैं कहॉ चला जाऊॅ?"

मैकडोनाल्ड बोला — "बजाय सीधे घर जाने के मैं चाहता हूॅ कि तुम मेरी यह पैन्ट गॉव के चर्च में सिलो। मैं तुमको इसको कब्रों के बीच में सिलने के लिये ज़्यादा पैसे दूॅगा। इस तरह से मैं बिना वहॉ जाये यह जान पाऊॅगा कि चर्च को कौन डरावना बना रहा है।"

जब दर्जी ने यह सुना तो उसके तो होश उड़ गये। वह तो खुद भी डर के मारे कॉप गया। उसकी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी कि वह उस जीव को देखे जो चर्च को डरावना बना रहा था।

पर उसको पैसे अच्छे मिल रहे थे सो उसने अपनी हिम्मत बटोरी और वह उसी समय उसकी पैन्ट वहॉ सिलने के लिये तैयार हो गया।

मैकडोनाल्ड ने सोचा कि पैन्ट सिलते सिलते उसको वहॉ रात तो हो ही जायेगी पर वह दर्जी भी होशियार था। उसने उस पैन्ट की सिलाई इस तरह से सोच कर रखी थी कि वह उस पैन्ट को वहॉ किसी आत्मा के आने और उसको परेशान करने से पहले ही खत्म कर ले।

सो दर्जी सीधे चर्च गया। वह उसके लोहे के दरवाजे से अन्दर घुसा और सीधा कब्रिस्तान में चला गया। वहॉ उसने संगमरमर की एक कब्र पर अपना कपड़ा बिछाया और उसको मैकडोनाल्ड के नाप के अनुसार जल्दी जल्दी काटा।

उसके बाद वह चर्च के अन्दर गया। तब तक सूरज सिर पर चढ़ आया था। वहॉ उसने उसकी पैन्ट सिलनी शुरू कर दी।

चर्च शान्त था और कोई भी अजीब चीज़ न तो वहॉ उसको दिखायी पड़ रही थी और न सुनायी ही पड़ रही थी।

दर्जी ने अब पैन्ट की दूसरी टॉग सिलनी शुरू कर दी थी कि सूरज आसमान में से गायब हो गया। दर्जी ने एक मोमबत्ती जलायी और अपनी बढ़िया सिलाई जारी रखी।

अचानक चर्च का फर्श हिलने लगा। दर्जी की उॅगलियों के बीच में से सुई फिसल गयी और उसकी उॅगली में पहनने वाली टोपी भी नीचे गिर गयी।

वह उनको उठाने के लिये नीचे झुका तो उसने बड़ी अजीब सी चीज़ देखी। चर्च के दरवाजे के सामने लगे कुछ टाइल्स अपनी जगह से हट गये और ऐसा लगा जैसे वहॉ एक नयी कब्र निकल आयी हो।

वह कब्र खुलती गयी और खुलती गयी और उसमें से एक बड़ा बदसूरत सा सिर बाहर निकल आया। वह बदसूरत सिर ज़ोर से चिल्लाया — "क्या तुम मेरा यह सिर देख रहे हो?"

दर्जी पैन्ट ऊपर को उठाते हुए बोला — "हॉ मैं देख रहा हूॅ पर पहले मैं इसको सिल लूॅ।" उसने उसकी तरफ न देखने का बहाना किया और अपना काम जारी रखा।

वह सिर कब्र में से थोड़ा सा और ऊपर निकला और फिर दर्जी से पूछा — "क्या तुम मेरी गरदन देख रहे हो?"

दर्जी फिर पैन्ट ऊपर को उठाते हुए बोला — "हॉ मैं देख रहा हूॅ पर पहले मैं इसको सिल लूॅ।" उसने उसकी तरफ न देखने का

फिर बहाना किया और पैन्ट के अन्दर का हिस्सा बाहर की तरफ पलट कर उसकी कमर की पट्टी सिलने लगा।

जमीन अब कुछ और ज़्यादा खुली और उस आदमी के बड़े कन्धे और ऊपर का धड़ निकल आया। वह फिर बोला — "क्या तुम मेरी यह चौड़ी छाती देखते हो?"

दर्जी बोला — "हॉ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" और उसने जल्दी जल्दी फिर सिलना शुरू कर दिया। अब उसकी सिलाई पहले की तरह से एक सी, सुन्दर और साफ नहीं आ रही थी।

अब तक चॉद भी आसमान में ऊपर चढ़ आया था और उस की पैन्ट अभी तक सिली नहीं थी। दर्जी वहॉ से भाग जाना चाहता था पर उसको मालूम था कि अपने वायदे के अनुसार अगर उसने अपना काम इस चर्च में पूरा नहीं किया तो उसको पैसे नहीं मिलेंगे।

इतने में दो लम्बी बॉहें उस कब्र में से बाहर निकलीं और उस दर्जी की तरफ बढ़ीं और उसके साथ साथ निकली उसकी कमर भी। वह बोला — "क्या तुम मेरी यह मजबूत बॉहें देखते हो?"

दर्जी बोला — "हॉ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" वह और जल्दी जल्दी हाथ चलाने लगा पर अब उसके टॉके कुछ दूर दूर लग रहे थे। उसके हाथ अब उस कपड़े पर उड़ते से दिखायी दे रहे थे।

उस जीव ने कब्र में से अपनी एक टॉग बाहर निकाली और बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "क्या तुम मेरी यह लम्बी टॉग देखते हो?"

दर्जी बोला — "हॉ हॉ मैं सब देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" और उसने उस पैन्ट के आखीर के बहुत सारे टॉके जल्दी जल्दी लगाये और उनमें गॉठ लगा कर अपना काम खत्म कर दिया।

यह सब कर के उसने मोमबत्ती बुझा दी और उस जीव ने तभी कब्र में से अपनी दूसरी टॉग भी बाहर निकाली। अब उस जीव ने चलना शुरू कर दिया था।

दर्जी ने एक हाथ में अपना सिलाई का बक्सा पकड़ा और दूसरे हाथ में पैन्ट पकड़ी और दरवाजे की तरफ भाग लिया। जब वह बाहर भाग रहा था तो उसने अपने पीछे पैरों के आने की आवाज सुनी।

दर्जी ने और जल्दी चलना शुरू कर दिया तो उन पैरों की आवाज भी और तेज़ हो गयी। दर्जी चर्च का दरवाजा खोल कर बाहर निकला और तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर दिया।

वह कब्रिस्तान में आधी दूर ही पहुँचा था कि उसने चर्च के दरवाजे के खुलने और बन्द होने की आवाज सुनी। वह कब्रिस्तान के दरवाजे से बाहर निकला और किले की तरफ भाग लिया।

उसने अपने पीछे कब्रिस्तान के दरवाजे की चरचराहट की आवाज भी सुनी और फिर पैरों की आवाज भी अपने पीछे आती सुनी।

दर्जी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह पीछे मुड़ कर देखता कि उसके पीछे क्या आ रहा था। वह तो बस किले की तरफ भागता ही चला गया।

उधर लेयर्ड मैकडोनाल्ड ने देखा कि दर्जी तो उसी के किले की तरफ भागा चला आ रहा है और उसके पीछे है एक बहुत बड़ा जीव जो उसको पकड़ना ही चाहता है।

उसने तुरन्त ही किले के दरवाजे खोलने का हुक्म दिया और समय रहते रहते ही उसके नौकरों ने किले का दरवाजा खोल दिया।

दर्जी किले के अन्दर घुस गया और इससे पहले कि वह जीव हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ता उसके नौकरों ने दरवाजा बन्द भी कर दिया। उस जीव के हाथ केवल किले के लकड़ी के दरवाजे पर ही पड़ पाये।

मैकडोनाल्ड ने दर्जी को पैन्ट की सिलाई के पैसे दिये और साथ में उसको चर्च में सिलने के पैसे अलग से दिये। इस तरह से लेयर्ड ने अपनी दोनों तरह की कॅपकॅपाहट खत्म कर दीं।

उसकी बाहर से पैदा होने वाली कॅपकॅपाहट तो उस जैकेट की जगह वह पैन्ट पहनने से खत्म हो गयी और उसकी अन्दर की कॅपकॅपाहट तब खत्म हो गयी जब उसने चर्च के पादरी से उस जगह

पर पवित्र पानी छिड़कवा दिया जहॉ से वह बहुत बड़ा जीव बाहर निकला था।

दर्जी ने कभी किसी को नहीं बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। पर बाद में तो उसको बताने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

हर आदमी उस जीव के बारे में जानता था जिसने उस दर्जी का पीछा किया था क्योंकि उसके बड़े बड़े हाथों के निशान किले के दरवाजे पर अभी भी पड़े हुए थे जब उसने उस रात उस दरवाजे को अपने हाथों से पीटा था।

20 सोने का पेड़ और चॉदी का पेड़[20]

एक बार की बात है कि एक देश में एक राजा और रानी रहते थे। रानी का नाम था चॉदी का पेड़। उनके एक बेटी थी जिसका नाम था सोने का पेड़।

एक दिन मॉ और बेटी दोनों एक घाटी की तरफ गयीं। वहॉ एक कुॅआ था और उस कुॅए में एक भूत रहता था। वहॉ जा कर चॉदी का पेड़ बोली — "ओ भूत, ओ छोटे पतले आदमी, क्या मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हूॅ?"

वह भूत बोला — "ओह नहीं, तुम दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हो।"

"तो फिर कौन है?"

"ओह, वह तो सोने का पेड़ है तुम्हारी बेटी।"

यह सुन कर चॉदी का पेड़ गुस्से में भर कर घर चली गयी और जा कर अपने पलंग पर लेट गयी। उसने कहा कि वह अपने पलंग से तब तक नहीं उठेगी जब तक उसको सोने के पेड़ यानी उसकी बेटी का दिल और जिगर खाने के लिये नहीं मिल जाता।

[20] Gold-tree and Silver-tree.

रात को राजा घर आया तो उसने अपनी पत्नी बारे में पूछा तो उसे बताया गया कि उसकी पत्नी तो बहुत बीमार है और वह अपने कमरे में लेटी है।

सो वह वहॉ गया जहॉ रानी लेटी हुई थी। उसने उसकी तबियत का हाल पूछा कि उसकी क्या तबियत खराब है।

रानी बोली — "मुझे केवल एक ही चीज़ ठीक कर सकती है, अगर तुम चाहो तो।"

राजा बोला — "ऐसी कोई काम नहीं है जो मैं तुम्हारे लिये कर सकता हूँ और वह मैं न करूँ। अगर मेरे बस में होगा तो मैं जरूर करूँगा। तुम बोलो तो।"

रानी बोली — "अगर मुझे मेरी बेटी का दिल और जिगर खाने को मिल जाये तो मैं ठीक हो जाऊँगी।"

इसी समय कुछ ऐसा हुआ कि किसी दूसरे बड़े राज्य के राजा का बेटा वहॉ आया और सोने के पेड़ से शादी करने की इच्छा प्रगट की। राजा मान गया और उसने अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार से कर दी। राजकुमार सोने के पेड़ को ले कर वहॉ से अपने देश चला गया।

उनके जाने के बाद राजा ने अपने आदमियों को एक पहाड़ी पर भेजा कि वे एक बकरा ले कर आयें। जब वे बकरा ले आये तो राजा ने उसका दिल और जिगर रानी को यह कह कर दे दिया कि

वे सोने के पेड़ के दिल और जिगर थे। रानी ने उनको खुशी से खा लिया और वह ठीक हो गयी।

एक साल बाद चॉदी का पेड़ फिर से उसी घाटी में गयी जहॉ वह कुॅआ था और जिस कुॅए में वह राक्षस रहता था। वहॉ जा कर उसने फिर उस राक्षस से पूछा — "ओ भूत, ओ छोटे पतले आदमी, क्या मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हूॅ?"

वह भूत बोला — "ओह नहीं नहीं, तुम नहीं हो।"

"तो फिर कौन है?"

"क्यों? वह तो सोने का पेड़ है, तुम्हारी बेटी।"

रानी बोली — "पर वह तो बहुत दिन पहले ज़िन्दा थी। एक साल पहले तो मैंने उसको मरवा कर उसका दिल और जिगर खा लिया था।"

भूत बोला — "ओह नहीं नहीं, वह मरी नहीं है। वह तो अभी भी ज़िन्दा है। वह तो दूसरे बड़े देश के राजकुमार से शादी कर के उसके देश में रह रही है।"

यह सुन कर चॉदी का पेड़ दुखी हो कर घर चली आयी और राजा से उसका बड़ा वाला पानी का जहाज़ तैयार कराने को कहा। उसने कहा कि उसको अपनी बेटी सोने का पेड़ को देखे बहुत दिन हो गये हैं सो वह अपनी बेटी को देखने जाना चाहती है।

रानी के हुक्म के अनुसार जहाज़ तैयार किया गया और वह वह जहाज़ ले कर चल दी। वह जहाज़ खुद ही चला रही थी। वह बहुत अच्छा जहाज़ चलाती थी सो वह बहुत जल्दी ही उस जगह आ पहुँची जहाँ सोने का पेड़ रहती थी।

राजकुमार उस समय शिकार खेलने के लिये पहाड़ों पर गया हुआ था। सोने के पेड़ को पता चल गया कि उसके पिता का जहाज़ उधर ही आ रहा था। उसने अपने नौकरों से कहा कि उसकी माँ वहाँ आ रही थी और वह वहाँ आ कर उसको मार देगी।

नौकर बोले — "आप घबराइये नहीं। हम आपको एक ऐसे कमरे में बन्द कर देंगे जहाँ वह आपको कभी भी नहीं ढूँढ पायेगी।" सो उसके नौकरों ने ऐसा ही किया।

जब चाँदी का पेड़ किनारे पर आयी तो उसने चिल्लाना शुरू किया — " आ जाओ ओ प्यारी बेटी, अपनी माँ से मिलने आ जाओ। देखो, वह खुद तुमसे मिलने आयी है।"

सोने का पेड़ चिल्लायी कि वह एक कमरे में बन्द थी और वह उससे मिलने के लिये नहीं आ सकती थी। उसकी माँ बोली — "क्या तुम चाभी के छेद में से अपनी छोटी उँगली भी बाहर नहीं निकाल सकतीं ताकि तुम्हारी माँ उसको चूम सके?"

सो सोने के पेड़ ने चाभी के छेद से अपनी छोटी उँगली बाहर निकाल दी। उसकी माँ ने तुरन्त ही उसकी उँगली में एक जहरीली सुई चुभो दी। सुई के चुभते ही सोने का पेड़ मर गयी।

जब राजकुमार घर आया तो उसने देखा कि उसकी सोने का पेड़ तो मरी पड़ी है। उसको मरा हुआ पा कर तो वह बहुत दुखी हो गया। उसने देखा कि वह तो मरने के बाद भी बहुत सुन्दर लग रही थी तो उसने उसको दफ़नाया नहीं बल्कि एक कमरे में बन्द कर दिया जहॉ कोई नहीं जा सकता था।

कुछ समय बीत गया और इस बीच राजकुमार ने दूसरी शादी कर ली। अब सारा महल इस नयी रानी के कब्जे में था, सिवाय एक कमरे के। और उस कमरे की चाभी वह राजकुमार हमेशा अपने पास रखता था।

नयी रानी को यह जानने की बहुत उत्सुकता थी कि ऐसा उस कमरे में क्या था जिसको राजकुमार हमेशा बन्द रखता था और उसकी चाभी भी अपने पास रखता था। पर उसको उस कमरे की चाभी कभी नहीं मिलती थी क्योंकि राजकुमार उसे हमेशा अपने पास ही रखता था।

एक दिन राजकुमार वह चाभी अपने साथ ले जाना भूल गया और यही मौका था कि वह चाभी नयी रानी को मिल गयी। उसने तुरन्त ही वह चाभी उठायी और उस बन्द कमरे की तरफ चल दी।

उसने दरवाजा खोला तो क्या देखती है कि वह कमरा तो खाली पड़ा था, सिवाय एक बहुत सुन्दर लड़की के जो वहॉ एक ताबूत में लेटी हुई थी। नयी रानी ने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी।

वह उसको जगाये बिना न रह सकी। उसने उसको इधर उधर हिलाकर जगाने की कोशिश की पर वह नहीं जागी। इस बीच उसने देखा कि उसकी छोटी उँगली में एक सुई चुभी हुई थी।

उसने वह सुई उसकी उँगली से खींच ली और लो, सोने का पेड़ तो उठ कर बैठी हो गयी – उतनी ही सुन्दर जितनी वह पहले थी।

रात को जब राजकुमार घर आया तो वह बहुत दुखी था। उस दिन उसको कोई शिकार भी हाथ नहीं लगा था। राजकुमार को उदास देख कर उसकी नयी रानी उसको खुश करने के लिये बोली — "तुम मुझको क्या दोगे अगर मैं तुमको हँसा दूँ तो?"

राजकुमार को कुछ समझ में नहीं आया तो वैसे ही उदास मूड में बोला — "तुम मुझे क्या दे सकती हो? मुझे कोई चीज़ खुश नहीं कर सकती सिवाय इसके कि मेरी सोने का पेड़ फिर से ज़िन्दा हो जाये।"

रानी बोली — "अच्छा तो जाओ नीचे वाले कमरे में जाओ और देखो कि तुम्हारी सोने का पेड़ ज़िन्दा है।"

राजकुमार को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ तो वह तुरन्त ही नीचे वाले कमरे की तरफ भागा भागा गया। वहाँ जा कर तो उसको अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसकी सोने का पेड़ तो वहाँ ज़िन्दा बैठी थी।

उसकी खुशी का ठिकाना न रहा और उसने सोने के पेड़ के ज़िन्दा हो जाने की खुशी में महल में बहुत खुशियाँ मनायीं।

नयी रानी बोली — "क्योंकि यह तुम्हारी पहली पत्नी है इस लिये तुम्हारे लिये यही अच्छा रहेगा कि तुम इसी के साथ रहो। मैं अब यहॉ से चलती हूॅ।"

राजकुमार बोला — "नहीं नहीं यह कैसे हो सकता है। तुमने तो इसको ज़िन्दा किया है इसलिये मैं तुम दोनों को अपने पास रखूॅगा अगर तुमको कोई एतराज न हो तो।"

नयी रानी को कोई एतराज नहीं था सो अब राजकुमार अपनी दोनों रानियों के साथ रहने लगा।

एक साल बाद चॉदी का पेड़ फिर अपनी उसी घाटी में गयी जहॉ वह कुॅआ था और जिस कुॅए में वह राक्षस रहता था। वहॉ जा कर उसने फिर उस राक्षस से पूछा — "ओ भूत, ओ छोटे पतले आदमी, क्या मैं अब दुनियॉ की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं हूॅ?"

वह भूत बोला — "ओह नहीं तुम नहीं हो।"

"तो फिर कौन है?"

"क्यों? वह तो सोने का पेड़ है, तुम्हारी बेटी।"

रानी बोली — "पर वह तो बहुत दिन पहले ज़िन्दा थी। एक साल पहले मैंने उसकी उॅगली में जहरीली सुई चुभो कर उसको मार दिया था।"

"पर वह मरी नहीं वह तो अभी भी ज़िन्दा है।" रानी यह सुन कर दुखी हो कर घर लौट आयी।

उसने फिर से राजा से उसका बड़ा वाला पानी का जहाज़ तैयार करने के लिये कहा। उसने कहा कि उसको अपनी बेटी सोने के पेड़ को देखे बहुत दिन हो गये हैं सो वह अपनी बेटी को देखने जाना चाहती है।

रानी के हुक्म के अनुसार एक बार फिर जहाज़ तैयार किया गया और एक बार फिर वह वह जहाज़ ले कर वहीं चल दी। वह वह जहाज़ भी खुद ही चला रही थी। वह बहुत अच्छा जहाज़ चलाती थी सो वह बहुत जल्दी ही उस जगह आ पहुँची जहाँ सोने का पेड़ रहती थी।

इत्तफाक से उस दिन भी राजकुमार शिकार के लिये पहाड़ी पर गया हुआ था। राजकुमारी को पता चल गया कि उसके पिता का जहाज़ उधर की तरफ आ रहा था।

उसने राजकुमार की दूसरी पत्नी से कहा — "मेरी माँ इधर आ रही है। वह मुझे मार डालेगी।"

दूसरी पत्नी बोली — "तुम डरो नहीं। ऐसा कभी नहीं होगा। कभी नहीं। हम लोग उससे मिलने के लिये वहीं जायेंगे।"

चाँदी का पेड़ जब किनारे पर आयी तो उसने वहीं से पुकारा — "ओ मेरी प्यारी बेटी सोने का पेड़, आओ यहाँ आओ। देखो तुम्हारी माँ तुम्हारे लिये बहुत कुछ स्वदिष्ट पीने के लिये ले कर आयी है।"

नयी रानी बोली — "हमारे देश की यह रीति है कि जो कोई कुछ हमारे खाने पीने के लिये ले कर आता है वह पहले उसे खुद ही खा पी कर देखता है इसलिये इसको पहले आप पियें।"

अब चॉदी का पेड़ तो उसको पी नहीं सकती थी क्योंकि वह तो सोने के पेड़ को मारने के लिये था। अगर वह उसको पीती तो वह खुद मर जाती पर नयी रानी की बात सुन कर उसने उस गिलास में अपना मुँह तो लगा लिया पर पिया नहीं।

यह देख कर नयी रानी ने उसका गिलास थोड़ा सा और ऊँचा कर दिया जिससे उस गिलास में से थोड़ा सा रस उसके गले में चला गया और वह वहीं मर गयी।

चॉदी के पेड़ के जहाज वाले उसकी लाश को वापस ले गये और राजकुमार की दोनों पत्नियॉ फिर खुशी खुशी शान्ति से बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहीं।

21 नौरौवे का काला बैल[21]

एक बार नौरवे में एक स्त्री रहती थी जिसके तीन बेटियॉ थीं। उनमें से उसकी सबसे बड़ी बेटी ने एक दिन अपनी मॉ से कहा — "मॉ मेरे लिये एक बैनौक बना दो और कुछ कौलौप भून दो। मैं दुनियॉ में बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहती हूॅ।"

उसकी मॉ ने उसके लिये एक बैनौक बना दी और कुछ कौलौप भून दिये और वह उनको ले कर वहॉ से चली गयी। वह एक बूढ़ी जादूगरनी धोबिन के पास पहुॅची और जा कर उसको अपने आने का उद्देश्य बताया। उस बूढ़ी जादूगरनी धोबिन ने उसको उस रात को अपने घर में ठहरने दिया।

उसने उस लड़की से अपने पीछे वाले दरवाजे से बाहर देखने के लिये कहा और पूछा कि वह वहॉ से क्या देख पा रही थी। पहले दिन तो उसने कुछ नहीं देखा। दूसरे दिन भी उसको देखने के लिये कहा गया तो दूसरे दिन भी उसको कुछ नहीं दिखायी दिया।

पर तीसरे दिन उसने सड़क पर आती एक गाड़ी देखी जिसको छह घोड़े खींच रहे थे।

वह उस बूढ़ी जादूगरनी के पास गयी और जो कुछ उसने देखा वह जा कर उसको बताया। तो वह बूढ़ी जादूगरनी बोली — "जा

[21] Black Bull of Norroway.

वह तेरे लिये है।" उस गाड़ी ने उसको अन्दर बिठाया और उसको ले चली।

अगले दिन उस स्त्री की बीच वाली बेटी ने उससे कहा — "मॉ मेरे लिये भी एक बैनौक बना दो और कुछ कौलौप भून दो। मैं भी दुनियॉ में बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहती हूॅ।"

मॉ ने उसके लिये भी एक बैनौक बना दी और कुछ कौलौप भून दिये और वह भी उनको ले कर घर से चली गयी। वह भी अपनी बड़ी बहिन की तरह उसी बूढ़ी जादूगरनी धोबिन के पास पहुॅची।

उस जादूगरनी ने उससे भी घर के पिछले दरवाजे से बाहर देखने के लिये कहा। उसको भी पहले दो दिन कुछ दिखायी नहीं दिया फिर तीसरे दिन सड़क पर एक गाड़ी आती दिखायी दी जिसको चार घोड़े खींच रहे थे।

उसने भी जा कर उस बूढ़ी जादूगरनी को यह बताया तो वह बोली यह तेरे लिये है और वह गाड़ी उसको ले कर वहॉ से चली गयी।

अगले दिन उस स्त्री की सबसे छोटी वाली बेटी ने उससे कहा — "मॉ मेरे लिये भी एक बैनौक बना दो और कुछ कौलौप भून दो। मैं भी दुनियॉ में बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहती हूॅ।"

मॉ ने उसके लिये भी एक बैनौक बना दी और कुछ कौलौप भून दिये और वह भी उनको ले कर घर से चली गयी। वह भी अपनी दोनों बड़ी बहिनों की तरह उसी बूढ़ी जादूगरनी धोबिन के पास पहुॅची।

बूढ़ी जादूगरनी ने उसको भी अपने घर में ठहराया और घर के पीछे वाले दरवाजे से बाहर देखने के लिये कहा और पूछा कि उसको क्या दिखायी दे रहा था।

लड़की ने बाहर देखने की कोशिश की पर उसको कुछ दिखायी नहीं दिया। उसने उस बुढ़िया को आ कर बताया कि उसको तो कुछ दिखायी नहीं दिया।

दूसरे दिन भी उसको कुछ दिखायी नहीं दिया। तीसरे दिन जब उसने बाहर देखा तो उसने देखा कि सड़क पर एक बहुत ही बड़ा काला बैल चिंघाड़ता हुआ चला आ रहा था। यह जा कर उसने उस बुढ़िया को बताया।

वह बुढ़िया बोली "यह तेरे लिये है।"

यह सुन कर उसे बहुत दुख हुआ और डर भी लगा पर उसको उस बैल की पीठ पर उठा कर रख दिया गया और वह बैल उसको ले कर वहॉ से चला गया।

वे दोनों बहुत देर तक चलते रहे जब तक कि वह लड़की भूख से बेहोश सी नहीं हो गयी। यह देख कर वह बैल बोला — "तुम

मेरी दॉयी टॉग में से कुछ खा लो और बॉयी टॉग में से कुछ पी लो। और फिर चलते हैं।

उस लड़की ने वैसा ही किया जैसा उस बैल ने उससे करने के लिये कहा था। लो, वह तो यह सब कर के बिल्कुल ताजा हो गयी। इसके बाद वे दोनों वहॉ से फिर चल दिये ओर एक बड़े से सुन्दर से किले के पास आ पहुॅचे।

बैल बोला — "आज रात हम यहीं ठहरेंगे क्योंकि मेरा बड़ा भाई यहॉ रहता है।"

और यह कहते कहते वे किले के दरवाजे के पास आ पहुॅचे। उन्होंने उस लड़की को बैल की पीठ से उतारा और किले के अन्दर ले गये। वहॉ ले जा कर उन्होंने उसको रात को आराम करने के लिये किले के अन्दर भेज दिया।

सुबह को वे उस बैल को ले कर आये तो वे उस लड़की को एक बहुत ही सुन्दर कमरे में ले गये और वहॉ ले जा कर एक सुन्दर सेब दिया और कहा कि वह उसको तब तक न तोड़े जब तक कि वह किसी भारी मुसीबत में न पड़ जाये। इससे उसकी वह भारी मुसीबत टल जायेगी।

उसके बाद उन्होंने फिर उसको उस बैल की पीठ पर बिठा दिया और फिर वे दोनों अपनी यात्रा पर आगे चले। वे तब तक चलते रहे जब तक वे एक और पहले से भी ज़्यादा सुन्दर किले के पास तक नहीं आ गये।

वहॉ आ कर वह बैल बोला "आज रात हम यहीं रुकेंगे क्योंकि यहॉ मेरा एक और बड़ा भाई रहता है।" और यह कहते कहते वे उस किले पर ही आ पहुॅचे।

उन्होंने उस लड़की को पिछले दिन की तरह से फिर बैल की पीठ से उतारा और किले में रात बिताने के लिये भेज दिया। बैल को उन्होंने मैदान में भेज दिया।

अगले दिन उस लड़की को फिर एक बहुत ही बढ़िया कमरे ले जाया गया और उसको वहॉ एक बहुत ही बढ़िया नाशपाती दी गयी। उतनी सुन्दर नाशपाती तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी।

उसको देने के बाद उससे उस नाशपाती के बारे में भी यही कहा गया कि वह उसको तब तक न तोड़े जब तक वह किसी भारी खतरे में न पड़ जाये। और वह उसको उस खतरे से बाहर कर देगी।

उसको फिर से उठा कर उस बैल की पीठ पर बिठा दिया गया और वे दोनों फिर चल दिये। चलते चलते वे फिर से एक दूसरे किले से भी सुन्दर और बड़े किले के पास आ पहुॅचे। इतना बड़ा किला तो पहले उसने कभी देखा नहीं था।

वहॉ आ कर वह बैल बोला "आज रात हम यहीं रुकेंगे क्योंकि यहॉ मेरा एक और बड़ा भाई रहता है।" और यह कहते कहते वे उस किले पर ही आ पहुॅचे।

उन्होंने उस लड़की को पिछले दिन की तरह से फिर बैल की पीठ से उतारा और किले में रात बिताने के लिये भेज दिया। बैल को उन्होंने मैदान में भेज दिया।

अगले दिन उस लड़की को फिर एक बहुत ही बढ़िया कमरे ले जाया गया और उसको वहॉ एक बहुत ही बढ़िया आलूबुखारा दिया गया। उतना सुन्दर आलूबुखारा तो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

वहॉ भी उसको आलूबुखारे के बारे में यही कहा गया कि वह उसको तब तक न तोड़े जब तक वह किसी भारी मुसीबत में न फॅसे। उस समय तोड़ने पर यह आलूबुखारा उसको उस मुसीबत से बचायेगा।

वहॉ फिर उस लड़की को बैल पर बिठाया गया और फिर वे दोनों आगे चल दिये। वहॉ से चल कर वे एक शीशे की घाटी में भयानक सी अॅधेरी जगह आ पहुॅचे। वे लोग वहॉ रुक गये और उस लड़की को भी बैल से नीचे उतार लिया गया।

वहॉ बैल उस लड़की से बोला — "हम कुछ देर यहीं रुकेंगे जब तक मुझे यहॉ एक शैतान से लड़ना है। यह जरूरी है ताकि हम इस घाटी से बाहर निकल सकें।

तुम उधर उस पत्थर पर बैठ जाओ और जब तक मैं वापस न आ जाऊॅ तुम यहॉ से एक इंच भी नहीं हिलना नहीं तो तुम मुझे फिर नहीं मिलोगी।

अगर तुम्हारे चारों तरफ सब कुछ नीले रंग का हो जाये तो समझना कि मैंने उस शैतान को मार दिया है और अगर सब कुछ लाल रंग का हो जाये तो समझना कि उसने मुझे जीत लिया है।"

इतना कह कर वह बैल वहॉ से चला गया। वह लड़की पत्थर पर बैठ गयी और इन्तजार करने लगी।

धीरे धीरे उसके चारों तरफ नीला होने लगा। यह देख कर तो वह बहुत खुश हो गयी कि उसका साथी जीत गया था। खुशी के मारे वह अपनी जगह से उठी जिससे वह हिल गयी। अब वह उस शीशे की घाटी को पार करने की कोशिश करने लगी।

उधर वह बैल उस शैतान को जीत कर वापस लौटा पर वह लड़की उसको कहीं दिखायी नहीं दी।

इधर वह लड़की चलती रही चलती रही जब तक कि वह थक नहीं गयी। घूमते घूमते वह एक बड़ी सी शीशे की पहाड़ी के पास आ गयी। उसने उस पर चढ़ने की बहुत कोशिश की पर वह उस पर चढ़ न सकी।

वह उस पहाड़ी के चारों तरफ घूमी भी ताकि उसको कहीं कोई दरवाजा मिल जाये कि वह एक लोहार के घर के पास आ निकली। लोहार ने उससे कहा कि अगर वह उसकी सात साल सेवा करे तो वह उसके लिये ऐसे लोहे के जूते बना देगा जिनको पहन कर वह उस शीशे के पहाड़ पर चढ़ जायेगी।

उसके पास और कोई चारा नहीं था सो वह तैयार हो गयी। सात साल की सेवा के बाद उस लोहार ने उसको वैसे लोहे के जूते बना कर दे दिये। उन जूतों को पहन कर वह उस शीशे की पहाड़ी पर चढ़ गयी और इत्तफाक से एक बूढ़ी धोबिन के घर आ पहुँची।

वहाँ उस धोबिन ने उसको बताया कि एक बहुत सुन्दर नौजवान नाइट ने उसको अपना एक खून के धब्बे वाला कपड़ा धुलने के लिये दिया है और कहा है कि जो कोई लड़की उसको धो कर साफ कर देगी वही उसकी पत्नी बनेगी।

उस बुढ़िया ने उसको तब तक साफ करने की कोशिश की जब तक कि वह थक नहीं गयी। फिर उसने उसको अपनी बेटी को साफ करने के लिये दिया।

उसकी बेटी ने भी उसको साफ करने की बहुत कोशिश की पर वह भी उसको साफ नहीं कर सकी।

उन दोनों ने उसको धोने की बहुत कोशिश की ताकि वह नाइट उनको मिल जाये पर वे उस पर लगा हुआ एक दाग भी साफ नहीं कर पायीं।

सो वह कपड़ा उन्होंने उस अजनबी लड़की को साफ करने के लिये दे दिया। उस लड़की ने जैसे ही उसे साफ किया तो वह तो तुरन्त ही साफ हो गया।

वह बूढ़ी धोबिन उस कपड़े को ले कर नाइट के पास गयी और उसको बताया कि उसकी बेटी ने वह कपड़ा साफ कर दिया सो अब उन दोनों की शादी हो जानी चाहिये।

और उस अजनबी लड़की को उस नाइट के बारे में सोचने भी नहीं दिया गया पर वह लड़की तो उस नाइट को प्यार करने लगी थी।

तभी उसको अपने सेब का ध्यान आया। उसने उसको तुरन्त ही तोड़ डाला। सोचो ज़रा कि उसमें से क्या निकला? उसमें तो बहुत सारे कीमती जवाहरात जड़े गहने निकले।

उसने उस धोबिन की लड़की से कहा कि वह उसको वे सब गहने इस शर्त पर दे देगी अगर वह अपनी शादी एक दिन के लिये आगे बढ़ा दे और उसे उस नाइट के कमरे में रात को अकेले जाने दे।

वह लड़की तैयार हो गयी पर इस बीच में उस धोबिन ने एक ऐसा पेय बनाया जिसको पी कर वह नाइट सो जाता। वह पेय उसने नाइट को दे दिया और वह नाइट उसको पी कर इतनी गहरी नींद सो गया कि सुबह तक उठा ही नहीं।

सारी रात वह लड़की बेचारी सुबकती रही और गाती रही पर वह नाइट जाग कर नहीं दिया —

सात लम्बे साल मैंने तुम्हारी सेवा की फिर यह शीशे की पहाड़ी चढ़ी
मैंने तुम्हारी खून लगी कमीज धोयी
तो क्या अब तुम जागोगे नहीं मेरी तरफ देखोगे भी नहीं

सुबह उठ कर वह उसके कमरे से बाहर आ गयी। अगले दिन वह फिर सोचने लगी कि वह अब अपने दुख को मिटाने के लिये क्या करे।

दूसरे दिन उसने अपनी नाशपाती तोड़ डाली। इस नाशपाती में से तो सेब से भी ज़्यादा कीमती गहने निकले। इन गहनों से उसने उस लड़की से उस नाइट के कमरे एक रात और अकेले रहने का सौदा कर लिया।

पर उस बूढ़ी धोबिन ने उस रात भी उस नाइट को एक सुलाने वाला पेय पिला दिया जिसको पी कर वह फिर से रात भर सोता रहा और वह लड़की बेचारी उसको किसी भी तरह नहीं जगा सकी।

इस तरह उसकी दूसरी रात भी पहली रात की तरह से सुबकते हुए और गाते हुए गुजर गयी —

सात लम्बे साल मैंने तुम्हारी सेवा की फिर यह शीशे की पहाड़ी चढ़ी
मैंने तुम्हारी खून लगी कमीज धोयी
तो क्या अब तुम जागोगे नहीं मेरी तरफ देखोगे भी नहीं

अब उस लड़की ने नाइट से मिलने की आशा छोड़ दी थी। पर अगले दिन जब वह नाइट शिकार खेलने गया तो उसके कुछ लोगों ने उससे कहा कि उन्होंने उसके सोने के कमरे में से रात को सुबकने और गाने की आवाजें सुनी थीं।

नाइट बोला कि उसने तो ऐसा कुछ भी नहीं सुना। पर इस बात पर आश्चर्य प्रगट करते हुए उसने तय किया कि वह इस मामले को खुद जाग कर देखेगा।

उस दिन की रात तीसरी और आखिरी रात थी। उस लड़की ने आशा और निराशा के झूले में झूलते हुए अब की बार अपना आलूबुखारा तोड़ दिया। लो इस बार तो उसमें से सेब और नाशपाती से भी ज़्यादा कीमती गहने निकल पड़े।

एक बार फिर आखिरी बार उसने उस धोबिन की लड़की से उसी शर्त पर नाइट के कमरे में रात को अकेले रहने इजाज़त ले ली। यह सुन कर धोबिन ने फिर एक बार सुलाने वाला पेय बनाया और उसे नाइट को पिलाने चली।

पर उस रात नाइट ने उस पेय को पीने से मना कर दिया जब तक कि उसमें कुछ मीठा न पड़ा हो। सो धोबिन उसको मीठा करने के लिये शहद लाने चली गयी। जब वह वहॉ से चली गयी तो उसने उसको फेंक दिया जिससे धोबिन को ऐसा लगता कि जैसे उसने वह पेय पी लिया।

उसके बाद वह सोने चला गया। वह लड़की फिर से उसके कमरे में आयी और गाने लगी —

सात लम्बे साल मैंने तुम्हारी सेवा की फिर यह शीशे की पहाड़ी चढ़ी
मैंने तुम्हारी खून लगी कमीज धोयी
तो क्या अब तुम जागोगे नहीं मेरी तरफ देखोगे भी नहीं

जब नाइट ने यह गीत सुना तो उसने मुड़ कर उसकी तरफ देखा तो उसने उसको बताया कि उसके साथ क्या क्या बीती। नाइट ने भी उसको बताया कि उसके साथ क्या क्या बीती।

दोनों आपस में मिल कर बहुत खुश हुए। दोनों की आपस में शादी हो गयी। बाद में नाइट ने बूढ़ी धोबिन और उसकी बेटी को जला कर मारने का हुक्म दे दिया।

उसके बाद वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

22 राजकुमार और सेब[22]

यह लोक कथा पश्चिमी यूरोप की लोक कथाओं से ली गयी है।

पुरानी बात है कि यूरोप का एक राजकुमार किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके सेब जैसे लाल लाल गाल हों, सेब के बीज जैसी कत्थई ऑखें हों और सेब के रस जैसा मीठा स्वभाव हो।

लेकिन ऐसी लड़की उसके राज्य में कोई थी नहीं इसलिये वह ऐसी लड़की की खोज में दूसरे देशों को चल दिया।

वह घोड़े पर सवार था। तीन दिन और तीन रात की लगातार सवारी के बाद वह एक ऐसी जगह जा पहुॅचा जहॉ छोटी छोटी झाड़ियों की एक कतार लगी थी। उस कतार में एक झाड़ी के नीचे एक बालों वाली टॉग बाहर निकली हुई थी। वह वहॉ रुक गया। तभी उसने एक आवाज सुनी — "मेरी बदकिस्मती, मैं यहॉ चिपक गया हूॅ।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो?"

वही आवाज फिर बोली — "मेरी टॉग खींचो तभी तुमको पता चलेगा कि मैं "मैं" हूॅ।"

[22] A Prince and the Apple.

"अच्छा" कह कर राजकुमार ने ज़ोर लगा कर वह टॉग खींची तो एक छोटा आदमी जिसका शरीर गोल था और वह लाल और हरे रंग के कपड़े पहने था, बाहर निकल आया। उसने राजकुमार को धन्यवाद दिया।

राजकुमार ने पूछा — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई पर तुम इन झाड़ियों में क्यों पड़े थे यह तो बताओ।"

वह आदमी बोला — "एक राक्षस ने मेरी बेटी को चुरा लिया है। जैसे ही उसने मेरी बेटी को यहॉ आ कर पकड़ा तो मैं डर कर यहॉ छिप गया।"

राजकुमार ने पूछा — "तो क्या वह तुम्हारी बेटी को ले गया है?"

"हॉ, उसने उसको अपनी एक उॅगली और अॅगूठे के बीच में दबाया और ले उड़ा। मैं तो बिल्कुल गूॅगा सा हो गया। मैं तो खॉस भी न सका।"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह उसे किस तरफ ले गया है।"

"वह उसे भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार ले गया है।" ऐसा उस छोटे आदमी ने राजकुमार को बताया।

राजकुमार ने दोहराया — "भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार। मैं तुरन्त ही जाऊँगा और तुम्हारी बेटी को ले कर आऊँगा। मगर वह है कैसी?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "गाल उसके सेब जैसे लाल हैं, ऑखें उसकी सेब के बीज जैसी कत्थई हैं और स्वभाव उसका सेब के रस जैसा मीठा है। अगर तुम.... ।"

यह सुनते ही राजकुमार को इन्तजार कहॉ? वह तो यह जा और वह जा। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो गया और दौड़ चला।

वह हवा की गति से भागा जा रहा था कि एक कुत्ते का घर आया। कुत्ता अपने घर से निकल कर भौंकने लगा — "राजकुमार राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

कुत्ता बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। पहले मुझे हड्डी दो तभी मैं तुमको जाने दूँगा।"

राजकुमार बोला — "तुम भूखे हो तो मेरे पास हड्डी तो नहीं है पर मेरा खाना तुम ले सकते हो। यह लो कुछ रोटियॉ।" कह कर राजकुमार ने उसे अपनी रोटियॉ दे दीं।

कुत्ते ने खुशी से वह रोटियॉ खायीं और राजकुमार से बोला — "जाओ राजकुमार, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो मगर याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहॉ एक तश्तरी में सेब रखा होगा वह सेब उठा लेना।"

राजकुमार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और कुत्ते के ऊपर से छलॉग लगा दी। हवा की गति से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ वह जादूगरनी के घर के पास आया।

जादूगरनी ने पूछा — "राजकुमार राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

जादूगरनी ने कहा — "मुझे सोने के लिये एक कम्बल चाहिये तभी मैं तुम्हें जाने दूॅगी।"

राजकुमार बोला — "तुम थकी हुई हो। मेरे पास कम्बल तो नहीं है पर मेरे पास यह मखमली कोट है यह तुम ले सकती हो, यह लो।" यह कह कर राजकुमार ने उसे अपना लम्बा मखमली कोट दे दिया।

उसने वह लम्बा कोट अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया और बोली — "अब तुम जा सकते हो राजकुमार। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो। पर हॉ याद रखना, अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक तश्तरी में एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार जादूगरनी के मकान के ऊपर से छलॉग लगाता हवा की सी तेजी के साथ फिर उस लड़की की खोज में चल दिया। और अब आया वह खाई के पार एक बड़े दरवाजे के पास।

"चीं चीं चीं चीं, राजकुमार तुम कहॉ जा रहे हो?" दरवाजे ने पूछा।

"मैं? मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।" राजकुमार ने कहा।

"चीं चीं चीं चीं, पहले मेरे कब्जों में तेल लगाओ तभी मैं तुम्हें यहॉ से जाने दूँगा।" दरवाजे ने कहा।

राजकुमार बोला — "ओह, तुम्हारे कब्जों में तो जंग लगी है। मेरे पास कोई तेल तो नहीं है, हॉ थोड़ा साबुन है, वही ले लो।" यह कह कर उसने दरवाजे के कब्जों में थोड़ा सा साबुन लगा दिया।

दरवाजा खुश हो कर बोला — "जाओ राजकुमार जाओ, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो पर एक बात याद रखना, अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहॉ एक तश्तरी में एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार ने दरवाजे के ऊपर से छलॉग लगायी और फिर घोड़ा नचाता चला गया। आखिर वह राक्षस के किले पर पहुँचा। वह सीधा घोड़े को सीढ़ियॉ चढ़ाता सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा।

वह किले के पीछे पहुँचा पर उसे न तो राक्षस दिखायी दिया और न ही वह लड़की। वह आगे वाले कमरे में गया पर वहॉ भी उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

वह रसोईघर में गया वहॉ भी उसे न राक्षस दिखायी दिया न वह लड़की। अब वह उसके सोने के कमरे में पहुँचा।

वहॉ उसने खर्राटों की आवाज सुनी। उसने अन्दर झॉक कर देखा तो राक्षस तो गहरी नींद सो रहा था और पास ही एक तश्तरी में एक सेब रखा था।

तभी राजकुमार ने सोचा सभी ने मुझसे क्या कहा था। "हॉ हॉ अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक तश्तरी में एक सेब रखा होगा वह सेब तुम जरूर उठा लेना।"

सो उसने हाथ बढ़ा कर वह सेब उठा लेना चाहा पर जैसे ही उसने उसे उठाने के लिये हाथ बढ़ाया उसके छूने से पहले ही वह एक लड़की में बदल गया जिसके गाल सेब की तरह सुर्ख थे और ऑखें सेब के बीजों की तरह कत्थई रंग की थी।

लड़की ने रो कर कहा — "राजकुमार, मुझे बचा लो।"

राजकुमार बोला — "आओ चलें, मेरा घोड़ा नीचे खड़ा है।" और वे दोनों वहॉ से भाग लिये। राजकुमार ने लड़की को घोड़े पर बिठाया और दौड़ चला।

तभी राक्षस की ऑख खुल गयी। वह वहीं से चिल्लाया — "दरवाजे दरवाजे, रोको उसे।"

दरवाजा बोला — "मैं नहीं रोकूँगा, उसने मेरे कब्जों में साबुन लगाया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार उस लड़की को ले कर दरवाजे के ऊपर से निकल गया।

अब राक्षस उनके पीछे भागा और चिल्लाया — "जादूगरनी, उसे रोको, देखो वह जाने न पाये।"

जादूगरनी बोली — "मैं उसे नहीं रोकूँगी उसने मुझे सोने के लिये मखमली कोट दिया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहाँ से चला गया।

राक्षस अपनी पूरी गति से भाग रहा था, वह फिर चिल्ला कर बोला — "ओ कुत्ते, रोक ले उसको जाने नहीं देना।"

कुत्ता बोला — "मैं नहीं रोकूँगा उसको। उसने मुझे खाना दिया है। जाओ राजकुमार तुम जाओ।" और राजकुमार आगे बढ़ गया। जब राक्षस पीछे से आया तो उसने उसके पैर में काट लिया और फिर पकड़ लिया।

राजकुमार भागता ही गया और भागता ही गया जब तक कि वह झाड़ियों की कतार न आ गयी जहाँ उस लड़की का पिता छिपा हुआ था।

वह आदमी वहाँ फिर से छिप गया था। राजकुमार ने फिर उस की टाँग पकड़ कर उसको बाहर निकाला।

असल में वह आदमी घोड़ों की टाप की आवाज सुन कर डर गया था और झाड़ियों में छिप गया था। उसे अपनी बेटी पा कर बड़ी खुशी हुई और राजकुमार के कहने पर उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी।

राजकुमार को अपनी मन पसन्द पत्नी मिल गयी थी। वह उसको ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया और उससे शादी कर के आराम से रहने लगा।

23 विनेगर्स[23]

एक बार की बात है कि इंगलैंड में एक मिस्टर और मिसेज़ विनेगर रहते थे। वे बहुत गरीब थे और एक बहुत ही गन्दे से मकान में रहते थे जो हमेशा उनके ऊपर गिरने को तैयार रहता था।

जब भी वे उस मकान को ठीक करते तो पुराने तख्ते, पुरानी रस्सी और जंग लगी टेढ़ी मेढ़ी कीलों का ही इस्तेमाल करते। इससे वह फिर गिरने गिरने को हो जाता।

आखिर उनके मकान में कुछ भी नहीं रह गया सिवाय टूटे कूड़े के ढेर के जो बस किसी तरह मकान के रूप में खड़ा था।

एक दिन जब मिस्टर विनेगर बाहर गये हुए थे तो मिसेज़ विनेगर को छींक आ गयी। और वह छींक इतने ज़ोर की थी कि पूरा का पूरा मकान ही मिसेज़ विनेगर के सिर पर आ गिरा।

जब मिस्टर विनेगर लौटे तो मिसेज़ विनेगर चिल्लायी — "देखो तो मैंने क्या कर दिया है मुझे एक छींक आ गयी और सारा घर मेरे ऊपर आ गिरा।"

मिस्टर विनेगर बोले — "अब तो यहॉ कोई ऐसी जगह ही नही रह गयी जहॉ मैं कोई कोई कील ठोक सकूँ या दो तख्ते एक साथ लगा सकूँ। चलो अब इस दरवाजे को ले कर अपनी किस्मत आजमाते हैं।"

[23] The Vinegars.

सो मिस्टर विनेगर ने उस घर का दरवाजा अपने कन्धे पर रखा और दोनों घर के बाहर अपनी किस्मत आजमाने चल दिये।

चलते चलते रात हो आयी पर अभी उनको अपनी किस्मत कहीं दिखायी नहीं दे रही थी। सो उन्होंने एक पेड़ के नीचे सोने का विचार किया।

उनको एक बहुत ही पुराना ओक का पेड़ मिल गया। मिसेज़ विनेगर उस पेड़ पर चढ़ गयी और मिस्टर विनेगर ने नीचे से वह दरवाजा ऊपर धकेल कर उस पेड़ के ऊपर रख दिया। अब वे उसको जमीन पर तो नहीं छोड़ सकते थे न।

फिर वे खुद भी उस पेड़ के ऊपर चढ़ गये और सो गये। आधी रात को उन्होंने नीचे कुछ आवाजें सुनी। कुछ डाकू उनके पेड़ के नीचे आ कर रुके थे और वे अपना लूटा हुआ धन बॉट रहे थे।

मिस्टर विनेगर तो यह सब देख कर बहुत डर गये और कॉपने लगे और इतना कॉपे कि उनके हाथ में पकड़ा दरवाजा भी बहुत हिला और वह डाकुओं के ऊपर गिर गया।

दरवाजा गिरने से डाकू भी डर गये और अपना सारा माल छोड़ कर वहॉ से भाग गये। विनेगर पति पत्नी डरे डरे से सुबह तक पेड़ पर ही बैठे रहे।

जब वे नीचे उतरे तो उन्होंने अपने दरवाजे को उठाया और उसको ठीक से देखा कि कहीं वह गिरते समय खराब न हो गया

हो। जैसे ही देखते देखते उन्होंने उसको पलटा तो मिस्टर विनेगर को उसके नीचे कुछ दिखायी दिया।

वह मिसेज़ विनेगर से बोले — "देखो, हमारी किस्मत ने हमको पा लिया।"

उस दरवाजे के नीचे दर्जनों सोने के सिक्के थे। उन्होंने उन सिक्कों को बार बार गिना तो वे चालीस सोने के सिक्के थे।

पत्नी बोली — "तुम इन सिक्कों को बाजार ले कर जाओ और एक अच्छी सी गाय खरीद लाओ। उस गाय का थोड़ा सा दूध हम अपने लिये रख लेंगे और बाकी बचे दूध को हम बेच देंगे। उसके बाद फिर हमको किसी और चीज़ की जरूरत नहीं रहेगी।"

सो मिस्टर विनेगर बाजार गये। वहॉ जा कर उन्होंने अपने लिये गाय देखनी शुरू की। देखते देखते एक गाय उनको पसन्द आयी तो उनको लगा कि अगर वह गाय उनको मिल जाये तो वह दुनियॉ के सबसे ज़्यादा खुश आदमी होंगे। सो वह गाय उन्होंने खरीद ली।

जब वह उस गाय को ले कर घर लौट रहे थे तो रास्ते में उनको एक पाइप बजाने वाला मिला। उस पाइप बजाने वाले के पीछे पीछे बहुत सारे बच्चे चल रहे थे और बड़े लोग उसके पैरों पर पैसे फेंक रहे थे।

मिस्टर विनेगर को यह देख कर बहुत अच्छा लगा।

मिस्टर विनेगर बोले — "दिन गुजारने का तुम्हारा यह कितना अच्छा तरीका है मिस्टर। अगर मेरे पास यह पाइप होता तो मैं तो दुनियॉ का सबसे सुखी आदमी होता।"

कह कर उन्होंने उस पाइप बजाने वाले से अपनी गाय दे कर उसका पाइप ले लिया। अब वह फिर अपने घर की तरफ चले।

रास्ते में उन्होंने पाइप बजाने की बहुत कोशिश की पर उनके साज़ में से कोई संगीत ही नहीं निकला।

लोग उनके ऊपर हॅस रहे थे। इससे उनको और भी ज़्यादा गुस्सा आ रहा था। उनकी उॅगलियॉ पाइप बजाते बजाते ठंडी पड़ने लगी थीं और दर्द भी करने लगी थीं।

तभी मिस्टर विनेगर ने एक आदमी देखा जो गर्म दस्ताने पहने जा रहा था। उन्होंने सोचा कि "अगर मेरे पास ऐसे गर्म दस्ताने हों जिनसे मैं अपने हाथ गर्म कर सकूॅ तो मैं तो दुनियॉ में सबसे ज़्यादा खुश आदमी होऊॅगा।"

सो उन्होंने अपना पाइप उस आदमी को दे कर उससे उसके दस्ताने ले लिये और फिर अपने घर की तरफ चल पड़े।

चलते चलते वह बहुत थक गये थे कि तभी उन्होंने एक आदमी देखा जो एक छड़ी के सहारे झुका हुआ चल रहा था।

उसको देख कर उन्होंने सोचा "अगर मेरे पास भी ऐसी ही लकड़ी की एक छड़ी होती जिससे में उसके सहारे चल सकता तो मैं दुनियॉ का सबसे खुश आदमी होता।"

सो उन्होंने अपने दस्ताने उस आदमी को दे दिये और उसकी छड़ी खुद ले ली और छड़ी के सहारे सहारे अपने घर की तरफ चल दिये।

जब वह जंगल में से गुजर रहे थे तो एक उल्लू जो मिस्टर विनेगर की ये सब बेवकूफियॉ देख रहा था उन पर चिल्लाने लगा — "तुम कितने बेवकूफ हो। तुमने पहले अपनी गाय दे कर पाइप लिया। फिर पाइप दे कर दस्ताने लिये और अब ये दस्ताने दे कर यह छड़ी ले ली।

जितने भी बेवकूफ मैंने आज तक दुनियॉ में देखे हैं उनमें तुम मुझे सबसे ज़्यादा बेवकूफ दिखायी दिये।"

यह सुन कर मिस्टर विनेगर उस उल्लू पर बहुत गुस्सा हुए और उन्होंने अपने हाथ की छड़ी उसको फेंक कर मारी। उल्लू तो वहॉ से उड़ गया पर उनकी छड़ी पेड़ की शाखों में अटक कर रह गयी। अब वह अपनी छड़ी से भी गये।

उल्लू एक बार फिर हॅस कर उन पर चिल्लाया।

पर उल्लू की हॅसी का शोर मिसेज़ विनेगर के रोने की आवाज के सामने तो कुछ भी नहीं था जब उसने अपने पति के कारनामे सुने।

List of Tales of "Folktales of Britain"

1. The Cat and the Mouse
2. Three Little Pigs
3. Three Bears
4. Little Red Hen
5. Little Tailor
6. The Baker's Daughter
7. Peter and Brother Robin
8. The Grandfather of Peter
9. Lazy Jack
10. Jack and His Golden Snuff-box
11. Jack and the Beansstalk
12. How Jack Made His Fortune
13, Master and His Pupil
14. A Man Who Married a Bear Goddess
15. Little Paucett
16. Three Sillies
17. The Pot That Would Not Walk
18. Aiken Drum
19. The Haunted Tailor
20. Gold-Tree and Silver-Tree
21. Black Bull of Norroway
22. A Prince and the Apple
23. The Vinegars

European Folk Tales Available in Hindi By Sushma Gupta

All available from hindifolktales@gmail.com

Desh Videsh Ki Lok Kathayen Series

Folktales of Britain. (23 Tales. 198 p)
Folktales of Denmark. (11 Tales. 196 p)
Folktales of Europe. (2 vols. 43 Tales)
Folktales of Germany. (25 Tales. 206 p)
Folktales of Italy. (7 vols. 125 Tales)
Folktales of Norway. (13 Tales. 180 p)
Folktales of Sweden. (13 Tales. 192 p)

Europe Ki Lok Kathaon Ki Classsic Pustaken Series

2. Folktales of Serbia/ Madam Csedomille/ 1874/ (26 Tales)
9. Il Pentamerone/ Basile/ 1893/ (32/50 tales)
18. Folktales of Georgia/ Marjorie Wardrop/ 1894/ 35 Tales
21. Nights of Straparola/ Straparola-Waters/ (1550) 1894/ 3 Parts
27. Italian Popular Tales/ Thomas Frederick Crane/ 1885. 109 tales.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाऐं जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022